चीन

और

स्वाधीनता संग्रामके पाँच वर्ष

प्रकाशक

चाइना पब्लिशिंग कम्पनी,

चुंकिंग (चीन)

विषय-सूची

प्राक्कथन

शान्ति-कालमें किसी राष्ट्रकी मनोभावनाका प्रकाशन केवल परोक्ष-रूपसे ही होता है ; किन्तु युद्ध-कालमें वह अपनी पूरी तेजस्विताके साथ प्रकाशित होती है— विशेषकर उस परिस्थितिमें, जब कि वह युद्ध आक्रमणके विरुद्ध और युगातीत परम्परा तथा मानव-हृदयकी उच्च प्रवृत्तियोंकी प्रिय देनोंकी रक्षाके लिए लड़ा जा रहा हो।

यह बात चीनके सम्बन्धमें लागू होती है। अभी हाल ही में उसने अपने युद्धके छठे वर्षमें प्रवेश किया है। पिछले पाँच वर्षोंसे उसे जो कड़ी परीक्षा देनी पड़ रही है, उसका उदाहरण अब तकके इतिहासमें तो कम-से-कम नहीं मिलता। और इस परीक्षाके लिए वह बिल्कुल तैयार नहीं था—यद्यपि जनरलिसिमो च्यांगकाई-शेकने इस तैयारीके लिए जो भी समय मिला, उसका सदुपयोग करते हुए देशको संगठित करने और आत्म-रक्षाके लिए पूरी-पूरी तैयारी करनेमें शक्ति-भर कुछ भी उठा नहीं रखा।

एक ओर सभ्यताका झीना आवरण धारण किए प्राथमिक लिप्सा और आकांक्षाओंसे उन्मत्त जापान-जैसा सैनिक-राष्ट्र है, जिसने बड़ी सावधानी और सोच-समझके साथ वर्षोंसे युद्धकी तैयारियाँ की हैं। उसका सारा इतिहास और साहित्य ही पशु-बल तथा विश्वासघातकी प्रशंसासे भरा पड़ा है। उसके दर्शनका मूलमन्त्र ही यह है कि बलवान बुराई कमज़ोर अच्छाईसे कहीं बेहतर और टिकाऊ है। दूसरी ओर चीन-जैसा वह राष्ट्र है, जो सभ्यताकी दौड़में उस समय कहीं आगे बढ़ चुका था, जब कि यूरोप और एशियामें मध्य-युगीन शासन और विचार-धाराका बोलबाला था, और जिसने समाजमें सैनिकको सदा नीचा स्थान ही दिया है। साथ ही यह एक ऐसा राष्ट्र है, जिसने अभी हाल ही में अपने अत्याचारी राजतन्त्रके चोलेको उतार फेंका है और जो बड़ी कठिनाइयों और असुविधाओंका मुक़ाबला करते हुए आज़ादीकी पूर्णताको प्राप्त करनेके लिए प्रयत्नशील है।

चीनके मंचू-नरेशोंके राज्यच्युत होनेके बाद एक नए वंशने अपना प्रभुत्व स्थापित करनेकी कोशिश की ; पर वह सफल नहीं हो सका। राजगद्दीके दावेदार युआन शीहकाईके अज्ञात-वासमें चले जानेके बाद विभिन्न प्रदेशोंके सेनापतियोंने केन्द्रीय सरकारकी आज्ञा माननेसे इन्कार कर दिया, और वे स्वतन्त्र-रूपसे शासन करने लगे। ये प्रदेश 'क्षत्रपी' कहलाते थे, जिनका भाग्य भी अपने शासकके उत्थान और पतनके साथ बदलता रहता था। इनके शासक न तो शासन-संचालनमें विशेष योग्य थे और न अपनी महत्वाकांक्षाओंको पूरा करनेकी उनमें शक्ति ही थी। उनका एकमात्र उद्देश्य था अन्य शासकोंपर अपना प्रभुत्व जमाकर सत्ता और सम्पद् प्राप्त करना। न उनको राष्ट्रीय सरकार-जैसी किसी चीज़का पता था और न उनके लोभी मनमें राष्ट्र-प्रेम-जैसी कोई भावना ही थी।

ऐसे लोगोंसे जनरलिसिमो च्यांगकाई-शेकको लड़ना पड़ा। कारण, इनके चंगुलसे मुक्त हुए बिना चीन आधुनिक राष्ट्र होनेकी कल्पना भी नहीं कर सकता था। डा० सुनयात-सेनके सुयोग्य अनुयायीकी हैसियतसे उनका यह कर्त्तव्य था कि क्रान्तिके उद्देश्योंकी पूर्त्ति हो और देशमें शान्ति तथा व्यवस्था क़ायम रखनेवाली सबल प्रजातन्त्र सरकारकी स्थापना हो एवं स्थायित्वके मार्गके सब रोड़े दूर हों। इस कार्यमें उन्हें सफलता ज़रूर मिली ; पर उस समय, जब कि बहुत-सा रक्तपात हुआ। राष्ट्रीय स्वास्थ्यकी इस महान क्षतिकी पूर्त्तिमें न जाने कितने वर्ष लगेंगे। यह दुरूह कार्य अभी मुश्किलसे शुरू ही हुआ था कि जापानने चीनपर धावा बोल दिया, जिसके लिए वह वर्षोंकी तैयारीके बाद उपयुक्त समयकी घात लगाए बैठा था। क्रान्तिके कारण हुई उथल-पुथलके बाद नागरिक शासनकी व्यवस्था जैसे-तैसे कुछ सँभल पाई थी और धीरे-धीरे अपना काम करने लगी थी कि ऐसे सबल राष्ट्रके मुक़ाबलेमें चीनको अपने अस्तित्वकी रक्षाके लिए कमर बाँधकर डट जाना पड़ा, जो उसे पूर्णतया अपना ग़ुलाम बनाना चाहता है।

इन परिस्थितियोंमें साधारणतया उससे यही आशा की जा सकती थी कि वह अन्य सब बातोंका ख़याल छोड़कर तन, मन, धनसे अपनी आज़ादीकी रक्षाके लिए इस युद्धमें जूझेगा। इस दिशामें तो उसने शक्ति-भर सब-कुछ किया ही; पर इससे कुछ

अधिक भी किया। उसने भविष्यकी ओर भी देखा। ज़ाहिरा तौरपर उसने अपनी सारी शक्तियोंको इस लम्बे युद्धके लिए—जो उससे जन और धनका भीषण भक्ष्य लेगा—पूरी-पूरी तैयारी करनेपर ही केन्द्रित किया; किन्तु साथ ही उसने उस सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्थाकी नींव भी डाली, जिनसे युद्धके बाद आगे चलकर वह संसारके प्रगतिशील राष्ट्रोंमें अपना उपयुक्त स्थान ग्रहण कर सके। किस प्रकार वह इन दोहरे उद्देश्योंको—जिनमें से प्रत्येककी पूर्त्तिके लिए चरम शक्ति, संगठन, केन्द्रीकरण और सहिष्णुताकी महती आवश्यकता है—पूरा करनेमें सफल हो सका है, यही आगेके पृष्ठोंमें बतलाया गया है।

यह पुस्तक इस बातका ज्वलन्त प्रमाण है कि चीनी अपनी खोई हुई शक्तियोंको किस आश्चर्यजनक तेज़ी और ख़ूबीके साथ फिर प्राप्त कर सकते हैं, जो उनकी अपनी विशेषता है। इस पुस्तककी एक और उल्लेखनीय एवं महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि जिस समय यह लिखी गई है, चीनका युद्ध अपने यौवनपर है और शत्रुके आग बरसानेवाले लड़ाकू यान चुंकिंगके आकाशको आकर जब-तब धुँधला करते रहते हैं। इसी कारण इसमें भाषा और सजावटका वह सौन्दर्य भी हम नहीं ला पाए हैं, जो पर्याप्त समय और बिना किसी विघ्न-बाधाके सहज ही आ सकता था। किन्तु इस कारण इसमें जो कमी रह गई है, उसकी कुछ पूर्त्ति पहले कारणने कर दी है। इसमें लेखकोंने जो-कुछ देखा और आज भी देख रहे हैं और लिखते समय जो-कुछ उनके चारों ओर था, उसीका सजीव चित्रण किया है। भावी इतिहासकार अपने शान्त अध्ययन-कक्षमें बैठकर इन 'पुरानी और दूर देशकी दुःखपूर्ण लड़ाइयों'के विवरण उलट-पलटकर इस विषयपर शायद अधिक अच्छी पुस्तक लिख सके; किन्तु उसमें इसका-सा जीवन तो न होगा। इसमें और उसमें उतना ही अन्तर होगा, जितना कि एक मंचपर होनेवाले नाटकके अभिनय और पर्देपर अंकित की गईं उसकी सारी बातोंके दिग्दर्शक चित्रमें हो सकता है।

इस पुस्तकके लेखक वे अभिनेता नहीं हैं, जिन्होंने अतीतकी किसी घटना या उसकी किसी नाटककारके मस्तिष्कमें घूमनेवाली कल्पनाको अपनी कलाके सहारे पुनः उपस्थित किया हो: बल्कि वे स्वयं एक कष्टसाध्य और गौरवपूर्ण नाटकके पात्र थे

और हैं, जिसे लोगोंने शायद पहले कभी न देखा हो। यह है संसारकी सबसे घनी आबादीवाले एक देशके भाग्यका नाटक। इसका मंच है वह विशाल भूखण्ड, जिसकी आबहवा भीषण रूपसे ठण्डीसे लेकर भयंकर रूपसे गरम तक है। इसके महीनों तक चलनेवाले दृश्य राष्ट्रके उत्थान और पतनके साथ बदलते रहते हैं। इसके अंक एक-एक वर्ष तक चलते हैं। आज जब कि इस नाटकके पाँचवें अंकका यवनिका-पात हो रहा है, हम इसके पिछले अंकोंका सार और आनेवाले अंकोंकी संभावित झाँकी पाठकोंके सम्मुख रख रहे हैं।

इस प्राक्कथनका लेखक अपनी बात काफ़ी आज़ादीके साथ कह सकता है, क्योंकि वह चीनी नहीं है। यदि यह किसी चीनीकी लेखनीसे लिखा जाता, तो शायद उसे झूठी और अत्युक्तिपूर्ण डींग कहा जाता। किन्तु इसका लेखक तो एक विदेशी दर्शक-मात्र है, जिसकी आँखोंके सामने चीनके गौरवपूर्ण इतिहासके ये पृष्ठ लिखे जा रहे हैं। चीनके भीषण कष्ट-सहनमें उसका व्यक्तिगत रूपसे कोई भाग नहीं रहा है—यद्यपि वह उससे बहुत प्रभावित हुआ है—फिर भी जिस असाधारण साहस और दृढ़ताके साथ चीनने इस महान संकटका सामना किया और उसपर विजय प्राप्त की है, जिस शान्ति और शानके साथ उसने भाग्यके अभिशापों और वरदानोंको सहा है, उन्हें सर्वसाधारणके सामने रखना उसने अपना परम कर्त्तव्य समझा है।

चीनके सहयोगी और मित्र-राष्ट्रोंके सामने हम यह पुस्तक विशेष अनुग्रहके साथ उपस्थित करते हैं। आज भी शायद वे अपने उस सहयोगीके मूल्य और महत्वको पूरी तरह नहीं समझ रहे हैं, जिसपर कि उनके सम्मिलित होनेसे बहुत पहलेसे ही इस 'पूर्ण युद्ध' के सबसे भयंकर आघात हो रहे हैं। आगेके पृष्ठोंसे उन्हें इस सम्बन्धमें ऐसी बातें ज्ञात होंगी, जो उन्हें ज्ञात होनी चाहिएँ; पर जो उन्हें ज्ञात नहीं थीं। इस बातकी महती आवश्यकता है कि संसार चीनको अधिक अच्छी तरह समझे। यह पुस्तक इस दिशामें कुछ सहायक होगी, ऐसी आशा है।

—फ० ल० प०

१. सरकार

(१) चीनका युद्ध-संचालन

युद्ध राष्ट्रके राजनीतिक ढाँचेमें अनेक परिवर्त्तन ला देता है, और चीन इसका अपवाद नहीं है। युद्धमें लगे अन्य राष्ट्रोंकी भाँति चीनमें भी, विविध रूपोंमें, युद्ध-संचालनके लिए एक सुसंगठित सर्वोपरि संस्थाकी स्थापना, सारी सत्ताका एक व्यक्ति या अपेक्षाकृत कम व्यक्तियोंके हाथोंमें केन्द्रीकरण, धारा-सभाके कार्योंपर नियन्त्रण, सरकारके वर्तमान विभागोंका युग्मीकरण और नए विभागोंकी स्थापना आदिका कार्य हुआ है। इसके अतिरिक्त एक और कार्य भी हुआ है—जो ज़ाहिरा तौरपर शायद युद्ध-संचालनके लिए असंगत जान पड़े; किन्तु तार्किक दृष्टिसे अत्यावश्यक है—वह है जनतान्त्रिक संस्थाओंका क्रमिक विकास।

चीनकी राजनीतिपर विचार करते समय उसकी राष्ट्रीय संस्था कुओमिन्तांग द्वारा १९२६-२७ में स्थापित देशव्यापी राष्ट्रीय दलकी सत्ताको ध्यानमें रखना आवश्यक है। इस प्रकार एक ओर देशकी राष्ट्रीय संस्था कुओमिन्तांग है और दूसरी ओर राष्ट्रीय सरकार। राष्ट्रीय सरकारकी स्थापना पहले-पहल १९२५ में कैन्टनमें हुई थी, जहाँसे १९२८ में वह नानकिंग चली आई। वर्तमान युद्धके कारण १९३७ में वह नानकिंगसे चुंकिंग चली आई है। मोटे तौरपर इसके तीन भाग हैं। पहला है एक प्रधान, ३६ सदस्योंकी राष्ट्र-परिषद तथा दीवानी, फ़ौजी और नियन्त्रण-विभाग आदिका। दूसरा है पाँच विभागों (Yuans) का, जिसमें व्यवस्थापिका, धारा (क़ानन), न्याय, परीक्षा, नियन्त्रण और मन्त्री, कमीशन तथा शासन आदिके विभाग

हैं। तीसरा भाग है उन महकमोंका, जो सीधे राष्ट्रीय सरकारके अधीन हैं। इनमें से सबसे उल्लेखनीय है राष्ट्रीय सैनिक-समिति, जिसे जनरलिसिमोका प्रधान-कार्यालय कहा जा सकता है। कुओमिन्तांगकी अपनी अलग व्यवस्था-प्रणाली है; किन्तु राष्ट्रीय सरकारके संचालन एवं नियन्त्रणके लिए उसने कई वर्ष हुए अपनी केन्द्रीय व्यवस्था-समितिकी अधीनतामें एक राजनीतिक समिति संगठित की है। वर्त्तमान युद्धके आरम्भ होते ही पहले तो इस समितिका कार्य प्रधान राष्ट्रीय रक्षा-समिति (Supreme National Defence Conference) ने और फ़रवरी, १९३९ से प्रधान राष्ट्रीय रक्षा-परिषद (Supreme National Defence Council) ने अपने हाथोंमें ले लिया है।

जब तक चीनका कोई स्थायी शासन-विधान नहीं बन जाता, वर्त्तमान राष्ट्रीय सरकार कुओमिन्तांगकी केन्द्रीय व्यवस्था-समितिके प्रति ही जवाबदेह है। यही समिति सरकारके प्रधान, राष्ट्र-परिषदके सदस्य और पाँचों विभागोंके अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष चुनती है। इस प्रकार जब कुओमिन्तांगकी राष्ट्रीय कांग्रेसका इजलास नहीं होता, चीनका शासन-संचालन और निरीक्षण आदि करनेवाली सर्वोच्च सत्ता उसकी यह केन्द्रीय व्यवस्था-समिति ही है। युद्धसे पहले यह कार्य इसकी राजनीतिक समिति ही करती थी। इस समितिकी स्थापना १९२४ में कुओमिन्तांगके पुनर्संगठनके फल-स्वरूप हुई थी। आरम्भमें यह अपने दलकी गति-विधि और राजनीतिक कार्योंका निरीक्षण करती थी; पर फरवरी, १९२८ से दलका कार्य इससे ले लिया गया और केवल राजनीतिक कार्योंका संचालन-निरीक्षण ही इसके ज़िम्मे रह गया। राष्ट्रीय सरकारकी देशी और विदेशी नीति, पुनर्निर्माणके कार्यक्रम, विधान-सम्बन्धी और फ़ौजी मामलोंका निर्णय आदि सब यही करती थी।

वर्त्तमान राजनीतिका—जो अब कार्य-रूपमें नहीं है—संगठन नए सिरेसे नवम्बर, १९३५ में हुआ था। १९३८ में इसके संगठनमें कुछ परिवर्त्तन हुए, जिसके फल-स्वरूप इसके अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा १९ से २५ सदस्योंका चुनाव कुओमिन्तांगकी केन्द्रीय व्यवस्था और केन्द्रीय निरीक्षण-समितिके सदस्योंमें से ही होने लगा। क़ानून, शासन-संचालन, राजनीतिक और सैनिक-नीति-निर्धारण, अर्थ-व्यवस्था और बजट,

सरकारी अफ़सरोंकी नियुक्ति और बर्खास्तगी, विशिष्ट नियुक्तियाँ आदिके मामलोंमें अन्तिम मत इसी समितिका होता था। युद्धसे पूर्व चीनकी राष्ट्रीय सरकारने जितने क़ानून बनाए हैं, वे सब पहले इसमें स्वीकृत हुए हैं और तब धारा-सभा द्वारा पास कराए गए हैं। इसके सिवा समितिको सरकारके पाँचों विभागोंके कार्योंमें हस्तक्षेप करने और निरीक्षण करनेका पूरा-पूरा अधिकार है। इस प्रकार युद्धसे पहले शासन और राजनीतिक दृष्टिसे यह समिति ही चीनकी सर्वोच्च सत्ता थी।

पर जुलाई, १९३७ में जब युद्ध छिड़ा और चीन-जापानके सम्बन्ध बदसे बदतर होते गए, तो राष्ट्रकी रक्षाके लिए विचार-विमर्श और निर्णय आदि करनेके लिए एक प्रधान राष्ट्र-रक्षा-समितिका संगठन किया गया। चूँकि राजनीतिक समितिके सदस्य काफ़ी थे, जिनकी आसानीसे और थोड़े समयमें बैठक बुलाना संभव नहीं था, उस वर्ष अगस्तमें शंघाईमें हुए विनाशको देखकर नवम्बर, १९३७ में कुओमिन्तांगकी केन्द्रीय व्यवस्था-समितिकी स्थायी समितिने राष्ट्र-रक्षा, युद्ध-संचालन और युद्ध-कालीन सभी नीति और क़ानूनोंके बनानेका अधिकार राष्ट्र-रक्षा-समितिको सौंप दिया। इस प्रकार युद्ध-कालमें यही सर्वोच्च सत्ता बन गई।

किन्तु इतना ही पर्याप्त न था। नीति-निर्धारणके सम्बन्धमें एक सर्वोच्च सत्ता ज़रूर स्थापित हो गई थी; पर युद्ध और युद्ध-कालीन शासनके संचालनके लिए एक केन्द्रीय संगठनकी अभी तक भी महती आवश्यकता महसूस हो रही थी। मोटे रूपमें यह सब कार्य अब तक अपने आठ विभागों (युद्ध-संचालन, सैनिक-शिक्षा, व्यवसाय-वाणिज्य, प्रकाशन, जन-आन्दोलन, यातायात, सैनिक और मुल्की चिकित्सा) द्वारा राष्ट्रीय सैनिक-परिषद ही कर रही थी, जो चीनकी सेनाओंके अध्यक्षका प्रधान-कार्यालय बन गई थी। यद्यपि इसके द्वारा शासन और युद्ध-संचालनका केन्द्रीकरण ज़रूर हो गया था; पर अभी उसमें काफ़ी खामियाँ थीं, और राष्ट्रकी सारी शक्तियोंको वह केन्द्रीभूत भी नहीं कर पाई थी। अतएव जनवरी, १९२८ में उससे दीवानी और अन्य ग़ैर-फ़ौजी कार्य लेकर उनके विभागोंके ही सुपुर्द कर दिए गए। पर इस परिवर्त्तनसे भी शासन और युद्ध-संचालनका कार्य जितना केन्द्रीभूत होना चाहिए था, नहीं हो सका। अतः फरवरी १९३९ में प्रधान राष्ट्रीय रक्षा-परिषदकी स्थापना की

गई, जिसे युद्ध, राष्ट्रीय सरकारके अधीनस्थ विभागों द्वारा होनेवाले शासन और कुओमिन्तांग तथा उसकी अधीनस्थ समितियों द्वारा होनेवाले सभी कार्योंके संचालन, निरीक्षण एवं नीति-निर्धारण आदिके पूर्ण अधिकार दिए गए। इसके महत्वके कारण लोग इसके सदस्यों अथवा आन्तरिक व्यवस्थाके बारेमें विशेष कुछ न जानकर केवल इतना ही जानते हैं कि मार्शल चांगकाई-शेक इसके अध्यक्ष हैं। यद्यपि १९२६-२७ से ही उनका चीनके पुनर्निर्माणमें प्रमुख हाथ रहा है, पर इससे पूर्व उन्हें चीनका सबसे बड़ा नेता स्वीकार नहीं किया गया था; किन्तु आज तो वे ही चीनके जीवन-प्राण हैं। १९३७ में जब युद्ध आरम्भ हुआ, तो वे राष्ट्रीय सैनिक-समितिके अध्यक्ष थे। वे कुओमिन्तांगकी स्थायी समितिके ९ और केन्द्रीय व्यवस्था-समितिके १५० सदस्योंमें से एक और राजनीतिक समितिके उपाध्यक्ष रहे हैं। मार्च, १९३८ की पाँचवीं राष्ट्रीय कांग्रेसमें कुओमिन्तांगने उन्हें दलका संचालक (Tsungtsai) चुना था। १९३७-३८ में युद्ध-जनित स्थितिके कारण वे व्यवस्था-विभागके अध्यक्ष भी रहे हैं। इसी वर्ष दिसम्बरमें नानकिंगके पतनसे उत्पन्न हुई गम्भीर स्थितिके कारण अपना सारा समय युद्ध-संचालनमें देनेके विचारसे जब आपने इस पदसे त्याग-पत्र दे दिया, तो अर्थ-सचिव डा० एच० एच० कुंग इस विभागके अध्यक्ष बनाए गए। नवम्बर, १९३८ में युद्धके कारण व्यवस्था और युद्ध-संचालनके सामंजस्यके खयालसे आप पुनः इस विभागके अध्यक्ष और डा० कुंग उपाध्यक्ष बनाए गए। इस प्रकार वास्तवमें कोई विशेष राजनीतिक ज़िम्मेदारी न होनेपर भी इस समय चीनी प्रजातन्त्रके एकमात्र नेता आप ही हैं।

सत्ताके केन्द्रीकरणका यह कार्य सितम्बर, १९३९ में बने चारों सरकारी बैंकों—सैंट्रल बैंक आफ़ चाइना, बैंक आफ़ चाइना, बैंक आफ़ कम्यूनिकेशंस और फ़ारमर्स बैंक आफ़ चाइना—के एक संयुक्त बोर्डसे एक क़दम और भी आगे बढ़ गया है। इस बोर्डके तीन व्यवस्थापक-डाइरेक्टर हैं—सैंट्रल बैंक आफ़ चाइनाके गवर्नर डा० कुंग, बैंक आफ़ चाइनाके बोर्ड आफ़ डाइरेक्टर्सके चेयरमैन डा० टी० वी० सुंग और बैंक आफ़ कम्यूनिकेशंसके बोर्ड आफ़ डाइरेक्टर्सके चेयरमैन मि० चियेंग युंग-मिंग। यह बोर्ड चारों बैंकों द्वारा जारी किए जानेवाले नोटोंकी व्यवस्था, उनकी पूँजीका समुचित
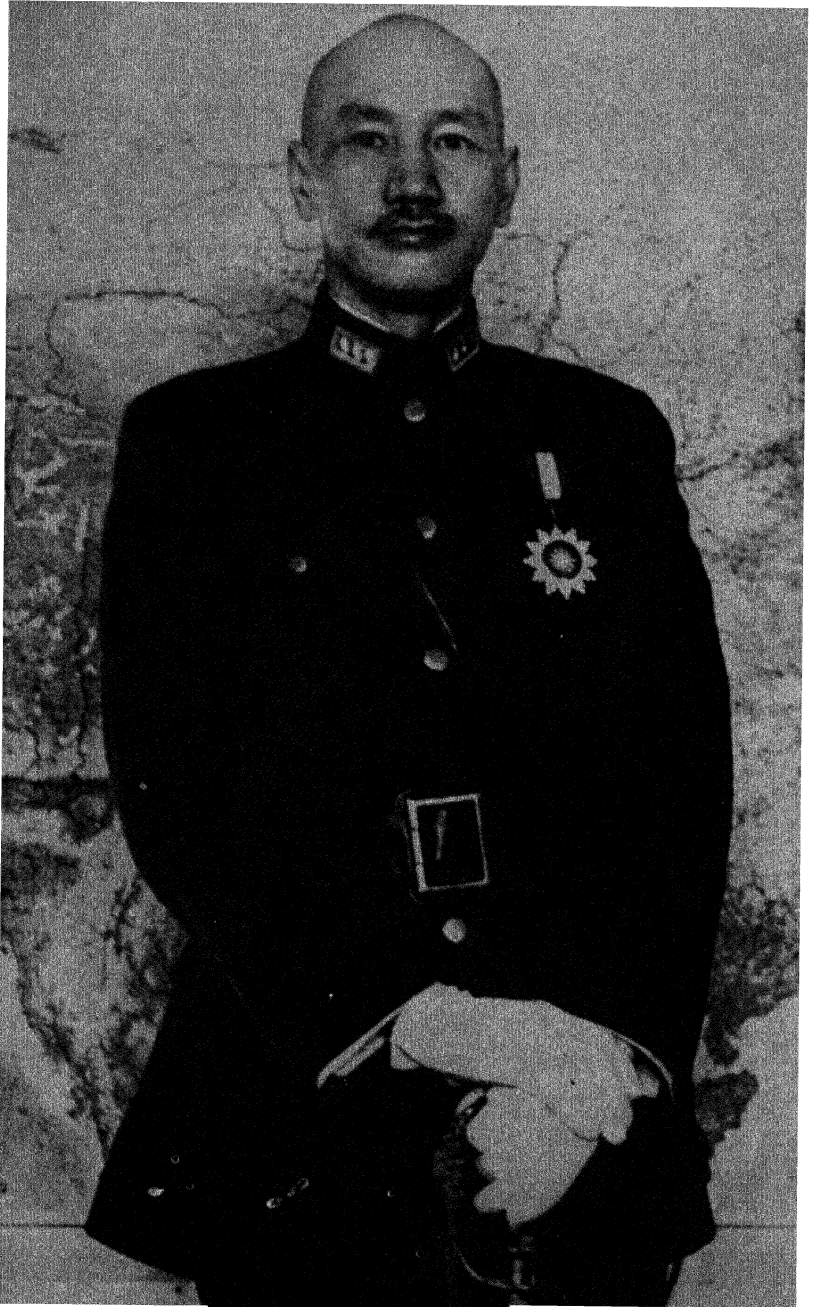
जनरलिसिमो च्यांगकाई-शेक।

उपयोग, नोटोंके कोषका निरीक्षण, सोने-चाँदीका संग्रह तथा बट्टे और ऋणका संयुक्त रूपसे विस्तार और निरीक्षण आदि करता है। इसके अध्यक्ष भी जनरलिसिमो चांगकाई-शेक ही हैं, जो तीनों डाइरेक्टरोंकी सलाहसे चीनकी आर्थिक व्यवस्थाकी देख-रेख करते हैं। इस बोर्डको अर्थ-विभागकी ओरसे युद्ध-जनित स्थितिको देखते हुए अपनी और चारों सरकारी बैंकोंकी ओरसे, जैसी उचित समझे,व्यवस्था करनेका पूर्ण अधिकार दे दिया गया है। जून, १९४२ से नोट जारी करनेका अधिकार केवल बैंक आफ़ चाइनाको ही दिया गया है; शेष तीनों बैंक क्रमशः विदेशी विनिमय, व्यापारी लेन-देन और ग्रामीण क्षेत्रोंकी आर्थिक स्थिति सुधारनेका ही काम करेंगे।

दिसम्बर, १९४१ में चीनके नवीन विदेश-मंत्री डा० टी० वी० सुंगके अमरीका में चीनके राजदूत होकर चले जानेके कारण स्थानापन्न विदेश-मंत्रीका कार्य भी जनरलिसिमो चांगकाई-शेकने ही ले लिया है। इसके अतिरिक्त वे सभी सैनिक-संस्थाओं, सैनिक-शिक्षण-केन्द्रों, युवक-दलों, राजनीतिक संस्थाओं, पुनर्निर्माण-समितियों आदिके भी अध्यक्ष हैं। साथ ही युद्ध-कालके कारण क़ानून-विभागके कार्य सीमित हो गए हैं, और प्रधान राष्ट्र-रक्षा-समितिके अध्यक्षकी हैसियतसे वे शान्ति-कालकी तरह धारा-सभाओंपर निर्भर भी नहीं कर सकते। अतः अधिकांश क़ानून-क़ायदे अथवा बने हुए क़ानून-क़ायदोंमें परिवर्त्तन-संशोधन आदि क़ानून-विभागके परामर्शसे वे ही करते हैं। युद्धके इन पाँच वर्षोंमें राष्ट्रीय सरकारके व्यवस्था-विभागमें भी अनेक परिवर्त्तन हुए हैं। नौसेना-विभागको तोड़कर उसका कार्य राष्ट्रीय सैनिक-समितिके नौसेनाके महकमेको सौंप दिया गया है। वाणिज्य-विभागको अर्थनीतिक विभागके रूपमें बदल दिया गया है, जिसके सुपुर्द देशका अर्थनीतिक और पुनर्निर्माणका कार्य भी कर दिया गया है। रेलों, नदियों आदिकी सारी व्यवस्था यातायात-विभागके सुपुर्द कर दी गई है। इसी प्रकार कृषि, जंगलात, समाज-सुधार, पशु-पालन, मछलीका व्यवसाय, ग्राम-सुधार, ज़मीनकी उन्नति, सार्वजनिक संस्थाओंका संचालन, कार्यकर्त्ताओंका शिक्षण आदि कार्य व्यवस्था-विभागके सुपुर्द कर दिए गए हैं। महिलाओंमें जाग्रति पैदा करनेके लिए कुओमिन्तांगके अधीन एक महिला-समिति स्थापित की गई है। युद्ध-जनित परिस्थितिका मुक़ाबला करनेके लिए अर्थनीतिक

विभागके अतिरिक्त राजनीतिक और आर्थिक शक्तियों एवं सम्भावनाओंका अधिकाधिक उपयोग करनेके लिए केन्द्रीय योजना-समिति और राजनीतिक कार्य-समितिकी भी स्थापना की गई है, जिनके अध्यक्ष भी जनरलिसिमो चांगकाई-शेक ही हैं। सभी राजनीतिक, आर्थिक एवं अन्य प्रकारकी योजनाओं, कार्यक्रमों एवं नीतियोंका निर्माण इन्हींके द्वारा होता है।

अप्रैल, १९४१ में हुए कुओमिन्तांगकी केन्द्रीय व्यवस्था-समितिके आठवें खुले अधिवेशनमें देशके पुनर्निर्माण, स्थानीय सरकारों द्वारा लगान-वसूलीकी पुनर्व्यवस्था और समूचे अर्थनीतिक ढाँचेके पुनर्निर्माणके लिए एक तीनवर्षीय योजना बनाई गई। इसी अधिवेशनमें दो नए विभाग स्थापित करनेका भी निश्चय किया गया। एक खाद्य-सामग्रीके समुचित संग्रह, वितरण और उसे सेनाको नियमित रूपसे पहुँचानेके लिए और दूसरा व्यापार आदिकी सुव्यवस्था करनेके लिए। नवें खुले अधिवेशनमें राष्ट्र-शक्तिके जागरण और संग्रह तथा ज़मीनकी व्यवस्थाके लिए दो विभाग क़ायम करनेका निश्चय हुआ। इसीमें यह भी तय हुआ कि जिन लोगोंने युद्ध-कालमें विशिष्ट सेवाएँ की हैं, उनकी तथा सांस्कृतिक, सामाजिक, व्यावसायिक और अन्य क्षेत्रोंके ऐसे ही प्रमुख लोगोंकी एक सलाहकार-समिति बनाई जाय। इसका काम होगा सरकारको इन सब मामलोंमें सलाह देना। अभी तक इसकी स्थापना नहीं हो पाई है; पर स्थापनाकी तैयारियाँ लगभग पूरी हो चली हैं।

युद्ध साधारणतया जनतान्त्रिक संस्थाओंकी स्थापना और विकासके लिए उपयुक्त समय नहीं है; पर चीनमें कुछ अनहोनी-सी बात हो रही है। जब जुलाई, १९३७ में युद्ध छिड़ा, तो संगठित और व्यवस्थित ढंगपर जनताके प्रतिनिधित्वका कोई प्रबन्ध नहीं था। पर आज युद्ध-कालके इन ५ वर्षोंमें प्रतिनिधित्वकी एक पूरी प्रणाली प्रचलित हो गई है। राष्ट्रीय सरकारसे लेकर व्यवस्थाकी नीची-से-नीची इकाई भी आज जनताके प्रतिनिधित्वके प्रभावसे मुक्त नहीं है। जिन्हें चीनकी राजनीतिका सामान्य ज्ञान है, उनके लिए यह कोई नई और आश्चर्यजनक बात नहीं है। कुओमिन्तांगके शासनका सिद्धान्त ही जनताका ट्रस्टी होकर शासन-संचालन करना है। सर्वोच्च सत्ता तो जनता है, जिसकी ओरसे अभी अस्थायी रूपसे यह कार्य

कुओमिन्तांग कर रहा है—जिसका चरम लक्ष्य है राजनीतिक जनतन्त्रकी स्थापना। युद्धकी विभीषिका और राजनीतिक संरक्षताके कालसे गुज़रनेके बाद देश वैधानिक स्थितिको पहुँचेगा, जब कि जनताकी पंचायत द्वारा उसके स्थायी विधानका निर्माण होगा। इस प्रकार विधानके नियमोंके अनुसार चुने गए जनताके प्रतिनिधियोंके हाथोंमें शासनकी बागडोर सौंप दी जायगी।

वर्त्तमान युद्धके छिड़नेसे कोई एक वर्ष पूर्व राष्ट्रीय सरकारने एक विधानका मसविदा प्रकाशित कराया था और १२ नवम्बर, १९३७ को जनताकी पंचायत बुलानेकी घोषणा की थी; पर लड़ाई छिड़ जानेसे यह न हो सकी। ऐसी पंचायत बुलानेका दूसरा प्रयत्न १९४० में किया गया; पर युद्धकी कठिनाइयोंके कारण स्वतन्त्र और जापानियों द्वारा अधिकृत चीनके सुदूर भागोंसे २००० प्रतिनिधियोंके आनेकी सुविधा न होनेके कारण इस बार भी सफलता नहीं मिल सकी। शंघाईमें जापानियों द्वारा की गई ज़्यादतियोंको देखकर जनताके प्रतिनिधित्वकी ओर सरकारका ध्यान फिर आकृष्ट हुआ, और विविध राजनीतिक, सामाजिक तथा अर्थनीतिक दलोंके सदस्योंकी एक सलाहकार-समिति बनाई गई। मार्च, १९३८ में फिर हांकोमें हुई राष्ट्रीय कांग्रेसने राष्ट्रकी शक्तिको संगठित करने, उसके श्रेष्ठ मस्तिष्कोंका उपयोग करने और राष्ट्रीय नीतियोंपर अमल करनेमें सहायता पहुँचानेके लिए एक सार्वजनिक राजनीतिक कौंसिल स्थापित करनेका निश्चय किया। जुलाईमें कुओ-मिन्तांग द्वारा मनोनीत ऐसे २०० सदस्योंकी कौंसिल बन भी गई। पहली कौंसिल के ५ अधिवेशन हुए। १९४१ में जो दूसरी कौंसिल बनी, उसके २४० सदस्य थे। इनमें से १०२ सदस्य व्यावसायिक और प्रान्तीय क्षेत्रोंके प्रतिनिधियों द्वारा चुने गए थे। १९४२ में अब जो तीसरी कौंसिल बननेवाली है, उसमें विविध प्रान्तोंसे १६४ सदस्य चुने जानेवाले हैं।

प्रान्तीय प्रतिनिधि-सभाओंके संगठन-संचालनके सम्बन्धमें राष्ट्रीय सरकारने सितम्बर, १९३८ में कुछ नियमोपनियम बनाए हैं। जून, १९४२ तक ऐसी सभाएँ १७ प्रान्तोंमें बन चुकी हैं और चुंकिंगमें एक म्युनिसिपैलिटी भी। मंगोलिया और तिब्बतको छोड़कर चीनमें २८ प्रान्त हैं। उत्तर-पूर्वके ४ (मंचूरिया, जेहोल

आदि) और उत्तरके ७ प्रान्तोंमें, जिनपर जापानियोंका अधिकार है, ऐसी सभाओंकी स्थापना असम्भव ही है। राष्ट्रीय सरकार और सार्वजनिक-राजनीतिक कौंसिलमें जो सम्बन्ध है, वही प्रान्तीय सरकार और प्रान्तीय प्रतिनिधि-सभामें है। प्रान्तीय सरकारें अपने प्रान्तकी प्रतिनिधि-सभाकी जानकारी और सहमतिके बिना कोई भी नया क़ानून या रिवाज प्रचारित नहीं करती हैं। इनको सरकार और उसके अफ़सरोंके कार्यौपर टीका-टिप्पणी करनेका पूरा अधिकार है। प्रान्तीय सभाओंकी शिकायतपर सरकार अपने अधिकारियोंसे जवाब भी त़लब कर सकती है। यदि उसके किसी निर्णय या क़ानूनसे प्रान्तीय प्रतिनिधि-सभा सहमत न हो, तो वह उसके पुनर्विचारके लिए उससे कह सकती है। सभाकी दो-तिहाई सदस्य-संख्या जो निर्णय करे, व्यवस्था-विभाग द्वारा विशेष रूपसे छूट मिले बिना कोई भी प्रान्तीय सरकार उसकी उपेक्षा नहीं कर सकती।

राजनीतिक जनतन्त्रकी जड़ें प्रत्येक गाँव और घरमें पहुँचानेके विचारसे ज़िलोंमें भी प्रतिनिधित्वकी प्रथा प्रचलित की गई है। चीनके २०० ज़िलोंमें से आधोंमें प्रतिनिधि-सभाएँ बन चुकी हैं। जिस प्रकार प्रान्तीय सभाएँ केन्द्रीय सरकारके संरक्षणमें हैं, ज़िलेकी सभाएँ भी प्रान्तीय सरकारोंके संरक्षणमें हैं। प्रत्येक ज़िलेको वार्ड (chia), बस्ती (pao) और क़स्बेमें बाँटा गया है। कई जगह बस्ती (ग्राम) और क़स्बेके बीचमें सूबा (chu) भी होता है। वार्ड सबसे छोटी और प्राथमिक इकाई है, जिसमें ६ से १६ परिवार होते हैं। इनकी दो प्रतिनिधि सभाएँ हैं—एक प्रत्येक घरके प्रतिनिधियोंकी और एक सब वयस्क लोगोंकी। बस्ती (ग्राम) में ६ से १६ वार्ड होते हैं, जिसकी प्रतिनिधि-सभामें प्रत्येक घरका एक प्रतिनिधि होता है। क़स्बेमें ६ से १६ बस्तियाँ होती हैं। इसकी प्रतिनिधि-सभामें प्रत्येक बस्तीके दो प्रतिनिधि होते हैं। इसके अतिरिक्त विशिष्ट पेशोंके आदमी भी अपने प्रतिनिधि भेज सकते हैं, जो कुल सदस्योंकी संख्याके ३० प्रतिशतसे अधिक नहीं होने चाहिएँ। क़स्बों द्वारा चुने गए प्रतिनिधियोंसे ज़िला-प्रतिनिधि-सभा बनती है। इस वर्ष यह प्रतिनिधि-सभा अन्य प्रान्तोंके सामने उदाहरण रखनेके लिए सेच्वानमें बनेगी। प्रान्तीय प्रतिनिधि-सभा ज़िला-सभाओंके प्रतिनिधियों और

प्रान्तीय सरकारोंके प्रतिनिधियोंमें से व्यवस्था-विभाग द्वारा संगठित की जायगी। इस समय सार्वजनिक-राजनीतिक कौंसिलके २४० सदस्योंमें से दो-तिहाई प्रान्तीय सभाएँ ही चुनती हैं। इस प्रणालीकी सफलताका कारण प्रत्येक क़स्बेमें नागरिक-अधिकार-शिक्षा-केन्द्र खोलना है।

सार्वजनिक सभा युद्ध-कालकी देन है। शान्ति-कालमें जनताकी पंचायत इसका स्थान ले लेगी और स्थायी विधान निर्माण करेगी, जिसके द्वारा डा० सुनयात-सेनका वैधानिक रूपसे ज़िम्मेदार शासनकी स्थापनाका स्वप्न पूरा होगा।

—जेम्स शेन

(२) कुओमिन्तांग द्वारा चीनका भविष्य-निर्माण

- १ -

चीनके आधुनिक इतिहासकी तीन प्रमुख घटनाओंसे हमें उसके राष्ट्रीय दल कुओमिन्तांगकी शक्ति, बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता और नेतृत्व करनेकी क्षमताका पता चलता है। वे हैं—(१) १९११ में चीनके मंचू-साम्राज्यका अन्त और परम्परागत राजतन्त्रके स्थानपर प्रजातन्त्र-प्रणालीकी स्थापना। (२) १९२६-२७ में लड़ाकू जागीरदारोंका दमन और प्रान्तीयताकी संकीर्ण सीमाओंको तोड़कर देशका एकसूत्रमें संगठन। (३) सितम्बर, १९३१ से आततायी जापानियोंकी ज़्यादतियों एवं बढ़ते हुए अनधिकारपूर्ण अपहरण तथा १९३७ में हुए उनके आक्रमणका संगठित रूपसे मुक़ाबला करना और चीनकी सुरक्षा। ऊपरी तौरपर तो यह सर्वथा स्वाभाविक ही मालूम होता है कि जिस कुओमिन्तांगने मंचू-सम्राटोंके विरुद्ध हुई क्रान्ति और उत्तरी चीनके लड़ाकू जागीरदारोंके दमन-जैसे कार्योंका सफलापूर्वक नेतृत्व किया, वही जापानी आक्रमणकारियोंके विरुद्ध भी आत्म-रक्षाके लिए चीनकी लोक-शक्तिको जाग्रत एवं संगठितकर उसका नेतृत्व करता ; पर यथार्थमें इन तीन ऐतिहासिक घटनाओंके मूलमें ही उसके सोद्देश्य और तार्किक क्रम-विकासकी धारा प्रवाहित होती रही है।

पिछली आधी शताब्दीसे चीनके राष्ट्र-निर्माणके जो प्रयत्न हुए हैं, उनका उद्देश्य दोहरा रहा है—आन्तरिक रूपसे देशको संगठित करना और आधुनिक रूप देना तथा बाह्य रूपसे उसे स्वतन्त्र करना और संसारके अन्य स्वतन्त्र राष्ट्रोंमें सम्मानपूर्ण तथा बराबरीका स्थान दिलाना। चूँकि मंचू-सम्राट और उनके बादके लड़ाकू जागीरदार इस उद्देश्य-पूर्तिके मार्गमें बाधक हुए, उन्हें निर्दयतापूर्वक मिटा डाला गया। अब इस

उद्देश्य-पूर्तिके मार्गमें जापान बाधक हो रहा है, अतः उसे भी उसी निर्दयताके साथ चीनके राष्ट्र-निर्माणके मार्गसे हटाना होगा। इस उद्देश्यके दो रूपोंका परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। देशको संगठित करके ही आधुनिकताकी ओर ले जाया जा सकता है; किन्तु यह तभी सम्भव है, जब कि बाहरी विघ्न-बाधाओंको ख़त्म कर दिया जाय।

ब्रिटेन और अमरीकाकी राजनीतिक पार्टियोंके मुक़ाबलेमें कुओमिन्तांग अपेक्षाकृत देरसे राजनीतिक क्षेत्रमें आया है। इस दलकी स्थापना आजसे कोई ४० वर्ष पूर्व हुई थी, जब कि पीपिंगके डगमगाते हुए राजसिंहासनपर बैठा एक दुर्बल एवं अयोग्य मंचू-सम्राट अपनी आँखोंके आगे अपने साम्राज्यको आन्तरिक दुर्बलताओं और बाहरी दबावके कारण छिन्न-भिन्न होते देख रहा था। इसी समय चीनके कुछ बुद्धिजीवियोंने एकत्र होकर क्रान्तिका श्रीगणेश करनेका निश्चय किया। इस समय चीन-पुनर्जागरण-समिति (Hsin Cheng Hui), भ्रातृ-संघ (Tung Meng Hui) आदि कई अन्य संस्थाएँ भी मंचू-विरोधी प्रचार कर रही थीं, जिनका २६७ वर्षसे चीनपर अधिकार जमाए विदेशी अधिकारियोंने बड़ी क्रूरतापूर्वक दमन किया। प्रान्तीयता, जातीय द्वेष और पारस्परिक मतभेद मिटाकर, राष्ट्रकी इन बिखरी शक्तियोंको एककर १९११ की चीनी क्रान्तिको सफल बनानेका श्रेय डा० सुनयात-सेनको ही है। क्रान्तिसे पूर्व सम्राटकी सरकारके प्रति कई जगह छोटे-मोटे विद्रोह और बलवे हुए। १० अक्टूबरको वूचैंगमें जिन सशस्त्र विद्रोहियोंने वाइसरायके भवनपर आक्रमण किया, उनके झंडेपर चीनके क्रान्तिकारी दल 'चुंग-कुओ-के-मिन्-तांग' का नाम अंकित था। यहाँ क्रान्तिकारी सफल हुए। मंचू-वाइसरायने राज्य त्याग दिया, और शीघ्र ही उसके स्थानपर प्रजातन्त्रकी स्थापना हो गई। पर दुर्भाग्यवश सत्ता क्रान्तिकारियोंके हाथमें न आकर युवान शीह-काई नामके एक महत्वाकांक्षीके हाथमें चली गई, जो क्रान्तिकारी दलको ग़ैर-क़ानूनी घोषितकर स्वयं मंचुओंके स्थानपर एक नए राजवंशका सम्राट बन बैठा। इसके फल-स्वरूप कई आन्तरिक झगड़े उठ खड़े हुए, जिनके कारण डा० सुनयात-सेन अपने कुछ सहयोगियोंके साथ भावी तैयारीके लिए दक्षिणमें चले गए।

१९१९ में सुविधाके लिए क्रान्तिकारी दलका नाम 'चुंग-कुओ-के-मिन्-तांग' से छोटा करके 'कुओमिन्तांग' रख लिया गया। १९२४ में दलमें कई हेर-फेर हुए और

केन्टनके निकट व्हाम्पोआमें एक सैनिक शिक्षण-केन्द्रकी स्थापना की गई। इसमें सैनिक शिक्षा पाए हुए और डा० सुनयात-सेनके सिद्धान्तोंमें दीक्षित सैनिक जनरलिसिमो चांग-काई-शेककी अध्यक्षतामें १९२६-२७ में केन्टनसे उत्तरकी ओर लड़ाकू जागीरदारोंका दमन करने और देशको संगठित करनेके लिए भेजे गए। इसके साथ ही जिस राष्ट्रीय सरकारकी केन्टनमें स्थापना हुई थी, वह नानकिंग स्थानान्तरित हो गई। यहाँ उसने १९२७ में शासनकी बागडोर अपने हाथमें ली। इस समयसे जापान द्वारा हुए आक्रमण तक उसे और कुओमिन्तांगको अनेक समस्याओंका सामना करना पड़ा। यांग्सीकी भयंकर बाढ़, मंचूरियापर जापानके आक्रमण, लड़ाकू जागीरदारोंके उत्पात, केन्द्रीय चीनमें कम्युनिस्टोंके दमन करने आदिके साथ ही देशको राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टिसे संगठितकर आधुनिकताकी ओर बढ़ानेका भी काम उन्हें करना पड़ा। इस दौरानमें यातायातका विस्तार हुआ, कई आर्थिक सुधार हुए, कई विद्यालय खुले, कई कारखाने स्थापित किए गए, सेनाका नए सिरेसे संगठन किया गया और वैधानिक सरकारकी स्थापनाके लिए प्रारम्भिक व्यवस्था की गई।

इस प्रकार कुओमिन्तांगने चीनके ४५ करोड़ लोगोंमें जनतन्त्रकी नई भावना फूँकी और संगठित रूपसे उन्हें राजनीतिक विकासके पथपर अग्रसर किया। जापान भला यह कैसे सहन कर सकता था? उसे भय हुआ कि यदि चीन एक सुसंगठित एवं सुव्यवस्थित स्वतन्त्र राष्ट्र बन गया, तो एशियामें उसकी साम्राज्य-लिप्सा सफल न हो सकेगी। अतः उसने १९३५-३६ में मंचूरियाको आधार बनाकर चीनकी राष्ट्रीय सरकारसे उत्तरके ५ प्रदेशोंको हथियानेकी चेष्टा की। पर जब इसमें वह सफल न हो सका, तो उसने एक बड़े ही विचित्र बहानेकी शरण ली। ७ जुलाई, १९३७ की रातको पीपिंग नगरके बाहर मार्कोपोलो-पुलके पास कुछ जापानी सैनिक युद्धाभ्यास कर रहे थे (जब कि यहाँ ऐसा करनेका उन्हें कोई अधिकार न था)। अचानक उन्होंने कहा कि एक जापानी सिपाही गायब है। उसकी खोजके लिए उन्होंने नगरकी चीनी सेनाकी बारकोंकी तलाशी लेनेकी माँग की, जिसे किसी हालतमें भी स्वीकार नहीं किया जा सकता था। बस, इसीपर जापानने चीनपर भारी आक्रमण कर दिया। इसका मुक़ाबला करनेको कुओमिन्तांगने बड़े साहस, दृढ़ता और दूरदर्शिताके साथ
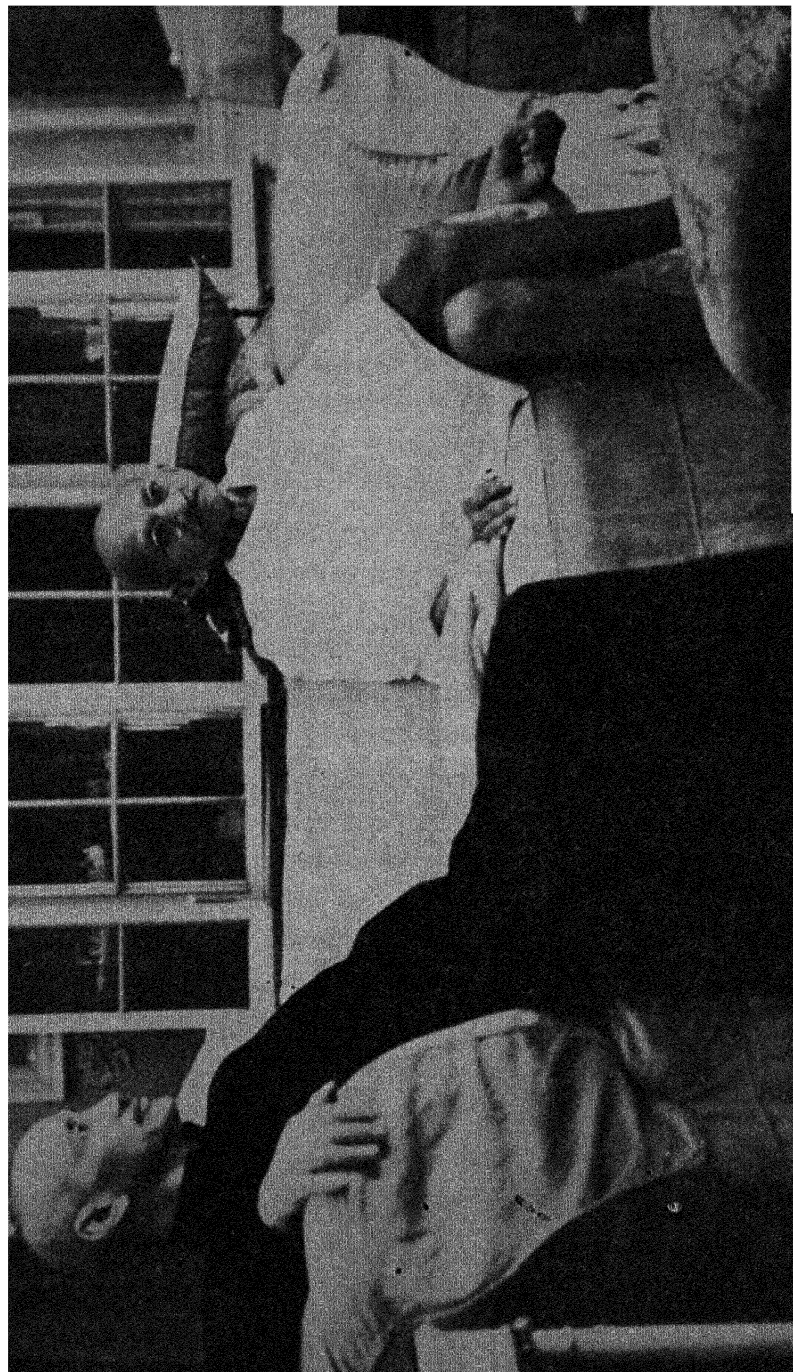
जनरलिसिमो चागकाई-शेक और महात्मा गाधी

अपने देश और स्वाधीनताकी रक्षाके लिए उत्पीड़ित चीनी जनताका नेतृत्व किया है।

- २ -

पिछले ५ वर्षोंसे चलनेवाले चीनके जीवन-मरणके इस भीषण संग्राममें कुओमिन्तांगके बहुमुखी महत्त्वके कार्यको भलीभाँति समझनेके लिए उसके संगठन, सिद्धान्तों और राष्ट्रीय सरकारके साथ उसके क्या सम्बन्ध हैं, इनकी सामान्य जानकारी आवश्यक है।

कुओमिन्तांगकी सदस्य-संख्या २० लाख है। अन्य देशोंके राजनीतिक दलोंकी सदस्यताकी तरह इसकी सदस्यता केवल शुल्क देकर आसानीसे प्राप्त नहीं की जा सकती। सदस्य होनेकी इच्छा रखनेवालेको इसके दो सक्रिय सदस्योंकी सिफ़ारिशके साथ अपना प्रार्थना-पत्र भेजना पड़ता है। इसके बाद कई जगह कई बार उससे दलके सिद्धान्तों और नीतिके बारेमें पूछ-ताछ की जाती है। इन 'परीक्षाओं' में उत्तीर्ण होनेपर उसे दल और राष्ट्रके प्रति वफ़ादार रहने और दलके आदेशोंका पालन करनेकी शपथ लेनी पड़ती है। तब कहीं जाकर वह सदस्य बनता है; किन्तु दलके सिद्धान्तों, आदर्शों, रीति-नीति और अनुशासनकी शिक्षा फिर भी चलती ही रहती है। प्रत्येक मास अपना सदस्य-शुल्क देकर ही उसका पीछा नहीं छूट जाता; समय-समयपर उसे विविध सेवाओंकी शिक्षाके लिए भी तलब किया जाता है।

प्रान्तों, ज़िलों, शहरों और क़स्बोंमें दलके शाखा और स्थानीय कार्यालय हैं, जो दलके कार्य-संचालन तथा जनताकी ओरसे उसके अधिकारोंके प्रयोग आदिके अलावा दलकी राष्ट्रीय कांग्रेसके लिए प्रतिनिधि आदि भी चुनते हैं। राष्ट्रीय कांग्रेसका अधिवेशन दो वर्षोंमें होता है। इसका पहला अधिवेशन १९२४ में, दूसरा १९२६ में, तीसरा १९२९ में, चौथा १९३१ में, पाँचवाँ १९३५ में और एक विशेषाधिवेशन १९३८में—जापानियोंके आक्रमणके बाद—हांकोमें हुआ था। जिन दिनों इसका अधिवेशन नहीं होता, केन्द्रीय व्यवस्था-समिति और केन्द्रीय निरीक्षण-समिति ही सर्वोच्च सत्ता समझी जाती हैं। इन समितियोंका चुनाव पाँचवां राष्ट्रीय कांग्रेसमें हुआ था। युद्धके कारण राष्ट्रीय कांग्रेसके नवीन अधिवेशनके लिए प्रतिनिधियोंका चुनाव नहीं हो सका है।

उपरि-लिखित दोनों समितियोंमें २६० सदस्य हैं। इनका खुला अधिवेशन प्रति छठे महीने होता है। इनका अन्तिम अधिवेशन दिसम्बर, १९४१ में हुआ था, जो गत ६ वर्षोंके इनके जीवन-कालमें नवाँ अधिवेशन था। दोनोंमें से केन्द्रीय व्यवस्था-समितिका महत्त्व अधिक है। दल और सरकारकी नीति, सिद्धान्त तथा प्रत्येक कार्यका निर्णय यही करती है। इसका निर्णय केवल राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा ही बदला जा सकता है। राष्ट्रीय सरकारके प्रधान और व्यवस्था, न्याय, क़ानून, परीक्षा, नियन्त्रण आदि विभागोंके अध्यक्ष और उपाध्यक्ष आदि यही चुनती है, जो—स्थायी विधान बनने तक—इसीके प्रति जवाबदेह हैं। सरकारकी नीति-निर्धारण और कार्य-संचानके लिए इस समितिने एक राजनीतिक समिति और सामान्य कार्योंकी देख-रेखके लिए एक स्थायी समिति बनाई हुई है। फ़रवरी, १९३९ से राजनीतिक समितिका कार्य प्रधान राष्ट्रीय रक्षा-परिषदने अपने हाथोंमें ले लिया है। कुओ-मिन्तांगकी अपनी अलग व्यवस्था-प्रणाली है। केन्द्रीय व्यवस्था-समितिके अधीन चार विभाग हैं—(१) सेक्रेटेरिएट, (२) संगठन-बोर्ड, (३) प्रकाशन (सूचना) विभाग और (४) विदेशी-बोर्ड। इनके अतिरिक्त कई विशेष समितियाँ भी हैं।

कुओमिन्तांगके सिद्धान्तोंका मूलाधार हैं चीनी प्रजातन्त्रके पिता डा० सुनयात-सेन द्वारा प्रचारित आदर्श और सिद्धान्त—राष्ट्रीयता, राजनीतिक जनतन्त्र और अर्थ-नीतिक जनतन्त्र, जो 'तीन गण-सिद्धान्त' (San Min Chu) के नामसे प्रसिद्ध हैं। नवीन चीनकी एकमात्र आकांक्षा यही है कि वह स्वतन्त्र एवं स्वच्छन्द हो, उसके लोग वैधानिक शासन-व्यवस्थाके लाभ उठायँ और विदेशी राष्ट्रोंसे उसका समा-नताका सम्बन्ध हो। इन तीन सिद्धान्तोंके अनुसार उसमें सम्पत्तिका विभाजन सन्तुलित होगा, ज़मीनका बराबर बँटवारा होगा तथा वैयक्तिक पूँजीका सीमाकरणकर राष्ट्रीय पूँजीका विकास किया जायगा।

डा० सुनयात-सेनने सर्वोच्च सत्ताको दो भागोंमें बाँटा है—(१) जनता, जो चुनाव, सुझाव और नियन्त्रणके अधिकार द्वारा राजनीतिक सत्ताका उपयोग करेगी और (२) सरकार, जो व्यवस्था, क़ानून, न्याय, परीक्षा और नियन्त्रणके अधिकारों द्वारा शासनकी सत्ताका उपयोग करेगी। इसी प्रकार राष्ट्र-निर्माणके कार्यको भी उन्होंने

तीन भागोंमें बाँटा है—(अ) सबसे पहले शान्ति और व्यवस्थाकी स्थापनाके लिए सबको सरकारके फ़ौजी अनुशासन मानना चाहिए। (ब) शान्ति और व्यवस्थाकी स्थापनाके बाद सरकारके राजनीतिक संरक्षणमें जनता संगठित, समृद्ध और स्वावलम्बी बननेके साधनोंको अपनाय। इस प्रकार सब प्रदेश अपने-आपको स्व-शासनके योग्य बनायँ। (स) इतना हो जानेपर स्थायी विधान बनानेके लिए राष्ट्रीय काँग्रेसका अधिवेशन बुलाया जाय। इस प्रकार नए विधानसे जो नई राष्ट्रीय सरकार बनेगी, वह राष्ट्रीय दलके प्रति जवाबदेह न होकर गण-राष्ट्रीय काँग्रेसके प्रति जवाबदेह होगी।

१९२७ में स्थापित हुई चीनकी राष्ट्रीय सरकार डा० सुनयात-सेनके इन्हीं तीन मार्गोंको लक्ष्य बनाकर कार्य कर रही है। १९२८ तक क़ानून और व्यवस्थाकी स्थापनाके लिए उसका फ़ौजी कार्यक्रम चला। उसके बादके ६ वर्षों तक राजनीतिक संरक्षणका युग चला, जिसमें प्रत्येक प्रदेशको हर तरहसे स्व-शासनके योग्य बनानेका प्रयत्न किया गया। १९३१ में सरकारने भावी स्थायी विधानका एक प्राथमिक मसविदा भी पेश किया, जिसपर १९३४ से अमल होने लगा। ५ मई, १९३६ को सरकारने स्थायी विधानका एक नया मसविदा तैयार किया, जो १२ नवम्बर, १९३७ को होनेवाली राष्ट्रीय काँग्रेसमें पेश होना था; पर जापानियोंके हमलेके कारण न हो सका। अब फिर युद्धके कारण फ़ौजी कार्यक्रम शुरू हो गया है।

- ३ -

अगर जापानियोंने यह समझकर चीनपर आक्रमण किया है कि वे उसे आपसी झगड़ों और मतभेदोंके कारण विगठित, विपन्न और मुक़ाबलेके लिए कम तैयार या तैयार नहीं पायँगे, तो उन्हें गहरी निराशा हुई होगी। उनके आक्रमणने कुओमिन्तांगके नेतृत्व और नीतिको कहीं ठोस बना दिया है और उसके झण्डेके नीचे पूर्ण संगठित रूपसे चीनी जनता उनका मुक़ाबला कर रही है। चीनके कम्यूनिस्टों तक ने—जो केन्द्रीय चीनमें कई वर्षोंसे सरकारकी हथियार रख देनेकी आज्ञा न मानकर उसके विरुद्ध लड़ रहे थे—देशव्यापी आत्म-रक्षाके युद्धमें कुओमिन्तांगका नेतृत्व स्वीकार

कर लिया। ७ जुलाई, १९३७ को चीनपर आक्रमण हुआ है और २२ सितम्बरको चीनकी कम्यूनिस्ट-पार्टीने घोषणा कर दी कि वह डा० सुनयात-सेनके सिद्धान्तोंकी सफलताके लिए कुओमिन्तांगकी राजनीतिक सत्ता छीननेको होनेवाली बग़ावत, ज़मींदारोंकी ज़मीनोंकी ज़ब्ती और सरकारके विरुद्ध गुप्त प्रचार तथा शासनकी सोवियत्-प्रणाली आदि छोड़कर लाल-सेनाको पुनः संगठित करेगी और देश-रक्षाके लिए उसे प्रधान राष्ट्रीय रक्षा-परिषदके अधीन कर देगी। इस घोषणाका स्वागत करते हुए परिषदके अध्यक्ष जनरलिसिमो चांगकाई-शेकने कहा कि इससे मालूम होता है कि राष्ट्रीय हितोंके सम्मुख कम्यूनिस्टोंने अन्य सब बातोंका विचार ही त्याग दिया है। इन पाँच वर्षोंमें कम्यूनिस्टोंने व्यपनी घोषणापर वफ़ादारीके साथ अमल किया है और कभी किसी प्रकारका गम्भीर मतभेद या फूट नहीं पड़ी है।

अगस्त, १९३७ में शंघाई में भयंकर युद्ध हुआ, जिसकी लपटें नवम्बरमें पश्चिम तक फैल गईं और दिसम्बरमें नानकिंग भी धाँय-धाँयकर जल उठा। अपनेसे कई गुना अधिक शक्तिशाली शत्रुका वीरतापूर्वक मुक़ाबला करते हुए चीनी पीछे हटते गए। दिसम्बरके मध्यमें भयंकर क्षतिके बाद उन्हें नानकिंग भी छोड़ देना पड़ा। अब युद्धने काफ़ी भयंकर रूप धारण कर लिया था, जिसके कारण कई नई समस्याएँ उपस्थित हो गई थीं, जिनका हल किया जाना आवश्यक था। युद्धके कारण राष्ट्रीय काँग्रेसके नए चुनाव होने सम्भव नहीं थे, अतः १९३५ में चुनी गई पाँचवी काँग्रेसका ही एक विशेषाधिवेशन मार्च, १९३८ में हांकोमें किया गया। इसमें मुख्यतया तीन बातोंपर विचार किया गया—(१) कुओमिन्तांगका कार्य, संगठन और शक्तिको कैसे सुव्यवस्थित और व्यापक बनाया जाय ? (२) युद्धके लिए जनताको कैसे संगठित और शिक्षित किया जाय ? (३) आर्थिक सामंजस्य और सरकारके कार्योंको किस प्रकार शीघ्रगामी बनाया जाय ? इनपर कई प्रस्ताव पास हुए। डा० सुनयात-सेनकी मृत्युके बाद नियमित रूपसे दलका कोई नेता नहीं था और न दलके विधानमें इसके लिए कोई व्यवस्था ही थी। अतः इस अधिवेशनने एक विशेष प्रस्ताव द्वारा दलके कार्य-संचालन और नेतृत्वका भार जनरलिसिमो चांगकाई-शेकको सौंप दिया। उन्हें दलके 'प्रधान-संचालक' (Tsugtsai) की संज्ञा दी गई।

इस विशेषाधिवेशनका सबसे उल्लेखनीय कार्य है 'सशस्त्र मुक़ाबले और राष्ट्रीय पुनर्निर्माणका कार्यक्रम', जिसकी मुख्य बातें इस प्रकार हैं—(१) युद्ध-कालमें सारी सेना और सत्ता कुओमिन्तांग और जनरलिसिमो चांगकाई-शेकके अधीन रहेगी। डा० सुनयात-सेनके क्रान्तिकारी सिद्धान्त और उपदेश ही, सर्वोच्च सत्ता होगी और उन्हींके अनुसार युद्ध-कालमें सब कार्य और राष्ट्र-निर्माणका काम होगा। (२) चीन अपने साथ सहानुभूति रखने, शान्ति और न्यायके लिए लड़ने, जापानकी साम्राज्य-लिप्साकी पूर्त्तिके लिए होनेवाले आक्रमणोंका सामना करने, सुदूर-पूर्वमें शान्ति बनाए रखने और शान्ति-स्थापनाको अपना चरम उद्देश्य समझनेवाले सभी राष्ट्रोंके साथ पूरा-पूरा सहयोग करेगा, उनके साथ मिलकर लड़ेगा, उनके साथ हुए सन्धि-समझौतोंका वफ़ादारीसे पालन करेगा तथा उनके साथ मैत्री-सम्बन्ध बढ़ायगा। (३) सेनाको अधिक राजनीतिक शिक्षा दी जाय, सभी स्वस्थ और सक्षम लोगोंको सैनिक शिक्षा दी जाय, सशस्त्र गुरिल्ला-सेनाका संगठन किया जाय, हताहत सैनिकोंके परिवारवालोंको पेन्शन तथा मोर्चोंपर लड़नेवाले सैनिकोंके परिवारवालोंके साथ विशिष्ट व्यवहार किया जाय। (४) लोक-शक्तिके संगठन, राष्ट्रके उत्कृष्ट मस्तिष्कोंके उपयोग तथा राष्ट्रीय नीतियोंके निर्धारण और उनपर अमल करनेके लिए एक 'गण-राजनीतिक परिषद' स्थापित की जाय। (५) युद्धको राजनीतिक और सामाजिक दृष्टिसे व्यापक बनाने और आगे चलकर स्थायी विधान-निर्माणके लिए यह आवश्यक है कि बस्तियों (ग्रामों) को स्थानीय स्व-शासनकी प्राथमिक इकाई बनाया जाय। (६) युद्धकी आवश्यकताओंको पूरा करनेके लिए केन्द्रीय सरकारकी रूप-रेखा और कार्य-प्रणालीको अधिक सरल और शीघ्रगामी बनाया जाय। (७) ग्राम-सुधार, सहयोग-समितियोंकी स्थापना, अर्थनीतिक पुनर्गठन, खानोंकी खुदाई आदिको प्रोत्साहन देना, युद्ध-कालीन करोंका लगाना, बैंकोंके कार्योंका नियन्त्रण, यातायातकी सुविधा करना, सट्टा और चीज़ोंके अनुचित रूप या मंशासे एकत्र किए जानेको रोकना। (८) जनताको भाषण, लेखन (पत्रोंकी) और सभा करनेकी पूरी आज़ादी होगी, बशर्त्ते कि वह क़ानून और डा० सुनयात-सेनके क्रान्तिकारी सिद्धान्तोंकी अवहेलना या विरोध न करे। (९) शिक्षा-प्रणालीकी नए सिरेसे व्यवस्था हो, युवकोंको समुचित

शिक्षा (ट्रेनिंग) दी जाय और कुशल कारीगरोंको उचित काम दिया जाय। (१०) चीनकी भूमिमें जापान द्वारा स्थापित नक़ली राजनीतिक संस्थाएँ और उनके कार्य ग़ैर-क़ानूनी माने जायँ।

अप्रैल, १९३८ में जब यह कार्यक्रम प्रकाशित हुआ, तो समूचे देशने एक स्वरसे इसका स्वागत किया। राष्ट्रीय समाजवादी दल और चीनी युवक-दलने—जो किसी समय कुओमिन्तांगके कटु आलोचक थे—कुओमिन्तांगको कार्यक्रमसे अपनी सहमति प्रकट करते हुए उसको कार्यान्वित करनेमें पूर्ण सहयोग देनेका आश्वासन दिया। मई, १९३१ में तैयार किए गए विधानके प्राथमिक मसविदेके पूरक अंगके रूपमें यह कार्यक्रम युद्ध-कालका सबसे बड़ा क़ानून बन गया है। इसकी अधिकांश बातोंपर अमल किया जा रहा है। १९३८ में २०० निर्वाचित और मनोनीत सदस्योंकी पहली 'गण-राजनीतिक-परिषद' की स्थापना की गई, जिसके ५ अधिवेशन हुए। तीसरी परिषदके संगठनकी तैयारी हो रही है। सरकारकी प्रत्येक देशी और विदेशी नीतिका निर्णय यह परिषद ही करती है। इसके प्रस्ताव बहुमतसे पास होते हैं। इसके कार्य और संगठनसे ही यह स्पष्ट है कि कुओमिन्तांग देशको राजनीतिक जनतन्त्रके मार्गपर अग्रसर कर रहा है। बहुत सम्भव है कि आगे चलकर यही चीनकी विधान-निर्मातृ 'गण-परिषद' का रूप धारण कर ले।

इस कार्यक्रमके अनुसार चीनके युवकोंके शिक्षण और संगठनका कार्य जुलाई, १९३८ में डा० सुनयात-सेनके तीन सिद्धान्तोंको माननेवाले 'युवक-दलों'की स्थापनाके रूपमें आरम्भ हुआ। इन दलोंका सदस्य १६ से २५ वर्षकी आयुका कोई भी युवक दो सदस्योंकी सिफ़ारिशपर हो सकता है। भर्त्ती होनेके बाद उसे डा० सुन-यात-सेनके सिद्धान्तोंकी उचित शिक्षा दी जाती है। पिछले चार वर्षोंमें इन दलोंकी सदस्य-संख्या ४००,००० हो गई है। इनकी शाखाएँ न केवल चीनी भू-भागमें ही हैं, बल्कि जापानियों द्वारा अधिकृत चीन और विदेशों तकमें हैं। २५ वर्षकी आयु पूरी करनेपर इन दलोंका सदस्य स्वतः ही कुओमिन्तांगका सदस्य हो जाता है। इन दलोंकी स्थापनाके समय जनरलिसिमो चांगकाई-शेकने इनके उद्देश्य बतलाए थे—(१) चीनकी शत्रुसे मुक़ाबला करनेकी शक्तिको बढ़ाना और राष्ट्रीय पुनर्निर्माणके

कार्यको आगे बढ़ाना। (२) क्रान्तिको आगे बढ़ानेके लिए शक्ति संचय करना। (३) डा० सुनयात-सेनके तीनों सिद्धान्तोंपर अमल करना। इन दलोंके प्रत्येक सदस्यको भर्त्ती होते समय डा० सुनयात-सेनके सिद्धान्तोंपर अमल करने, नेताकी आज्ञा और दलका अनुशासन तथा नियमादि मानने, नवजीवन-आन्दोलनके अनुसार आचार-व्यवहार रखने और कठिनाइयोंसे भय न खाकर चीनके लिए बड़ेसे बड़ा त्याग करनेकी शपथ लेनी पड़ती है।

कार्यक्रमके दूसरे जिस निश्चयपर अमल हुआ है, वह है बस्ती (ग्राम) की स्व-शासनकी इकाई बनानेका। प्रत्येक ज़िलेको वार्ड (chia), ग्राम (pao), क़स्बा (जो ग्रामीण क्षेत्रमें hsiang और शहरी क्षेत्रमें chen कहलाता है) आदिमें विभाजित किया गया है। ग्रामीण क्षेत्रोंमें ८००,००० और क़स्बोंमें ८०,००० स्कूल खोले गए हैं। इनमें वार्डसे लेकर ज़िले तकमें प्रतिनिधि-सभाएँ स्थानीय मामलोंको सरकारकी स्थानीय इकाइयोंके रूपमें निपटाती हैं। सबसे ऊँची प्रतिनिधि-सभाको बजट और क़ानून पास करने तथा लोगोंकी सामाजिक और अर्थनीतिक स्थिति सुधारनेको आवश्यक योजनाएँ स्वीकार करनेका अधिकार होता है। भविष्यमें ज़िलेकी प्रतिनिधि-सभा शायद अपना हाकिम भी खुद ही चुने। चीनके १००० ज़िलोंने अपना पुनर्गठन किया है, और आशा की जाती है कि थोड़े ही समयमें सबके सब ज़िले स्वावलम्बी व स्वशासनमें निपुण हो जायँगे।

– ४ –

युद्ध छिड़नेसे अब तक १९३५ की राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा निर्वाचित कुओमिन्तांगकी केन्द्रीय व्यवस्था-सबितिके ६ खुले अधिनेशन हो चुके हैं। इनमें से तीन युद्धके पहले हुए और तीन बादमें। इनमें से प्रत्येकमें कुओमिन्तांगके नेताओंने पिछली घटनाओंपर प्रकाश डाला है, वर्त्तमान समस्याओंपर विचार किया है और भविष्यके लिए कार्यक्रम निश्चित किया है। इसमें सदा उन्होंने बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता, उत्तरदायित्वकी भावना, साहस और व्यावहारिक नीतिमत्ताका ही परिचय दिया है। स्थिति कितनी ही कठिन और अन्धकारपर्ण क्यों न हो : पर चीनकी अन्तिम विजयमें उनका अविचल

विश्वास है और इसीसे वे सरकार तथा जनताको उत्साह बँधाते तथा अधिक सबल प्रयत्नोंके लिए अनुरोध करते हुए उनका मार्ग-प्रदर्शन कर रहे हैं।

जनवरी, १९३९ में हुए पाँचवें अधिवेशनमें समितिने 'बौद्धि शक्ति-संग्रह आन्दोलन'का श्रीगणेश किया, जिसके नारे थे—'सबसे ऊपर देश', 'सबसे पहले फ़ौजी आवश्यकताएँ', 'प्रयत्नोंमें एकता' आदि। पर इससे भी कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण था 'प्रधान राष्ट्रीय रक्षा-परिषद' की स्थापना, जिसने कुओमिन्तांगकी राजनीतिक समिति और राष्ट्रीय सरकारके सारे कार्योंको अपने हाथमें ले लिया। इसी अधिवेशनमें जनरलिसिमो चांगकाई-शेकने युद्ध-प्रयत्नोंको लम्बे युद्ध और प्रत्याक्रमणके लिए अधिक ठोस और व्यापक बनानेकी घोषणा की थी। छठे अधिवेशनका सबसे महत्त्वपूर्ण निश्चय था १२ नवम्बर, १९४० को 'गण-परिषद' बुलानेका, जो युद्धके कारण २००० प्रतिनिधियोंके आवागमकी कठिनाईके कारण नहीं बुलाई जा सकी। इसी अधिवेशनमें जनरलिसिमो चांगकाई-शेकको राष्ट्रीय सरकारके व्यवस्था-विभागका अध्यक्ष नियुक्त किया गया। जनवरी, १९४० में हुए ७ वें अधिवेशनमें युद्ध-जनित परिस्थितिके कारण शासन-संचालनको अधिक सुगम और अर्थनैतिक समस्याओंके हल करनेपर ही विचार किया गया। इनके लिए प्रधान राष्ट्रीय रक्षा-परिषदके अधीन 'केन्द्रीय योजना समिति' और 'राजनीतिक प्रचार-समिति'का संगठन किया गया। मार्च, १९४१ में इसका आठवाँ अधिवेशन हुआ, जिसमें युद्धके कारण पैदा हुई आर्थिक स्थितिके विविध पहलुओंपर विचार हुआ, और यह तय हुआ कि अबसे चीनका ७० प्रतिशत युद्ध-विरोध आर्थिक और ३० प्रतिशत सैनिक रूपसे होगा। इसीको दृष्टिमें रखते हुए एक तीनवर्षीय योजना बनाई गई, जिसकी उल्लेखनीय बातें हैं—(१) सारे सैनिक, राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक कार्य युद्ध जीतनेकी दृष्टिसे किए जायँ। (२) फ़ौजी और मुल्की आवश्यकताकी चीज़ोंकी पैदावार बढ़ाई जाय। (३) राष्ट्र-रक्षाके साधनोंको न केवल युद्ध-कालमें ही, बल्कि उसके बादमें भी मज़बूत किया जाय। (४) देशके राजनीतिक ढाँचेको ज़िम्मेदार शासनकी स्थापनाके उद्देश्यसे उन्नत किया जाय। (५) जनताको युद्धके लिए संगठित करनेके लिए सारी सामाजिक, अर्थनीतिक और राजनीतिक संस्थाओंको कुओमिन्तांगकी नीति और कार्यक्रमके अनुसार पुनर्गठित

किया जाय। (६) तीनवर्षीय योजनाके विभागोंके साथ रक्षा-सम्बन्धी शिक्षण तथा सांस्कृतिक तैयारीमें सामंजस्य स्थापित किया जाय। बजट, लगान वसूल करनेकी व्यवस्था, खाद्य-सामग्रीका प्रबन्ध आदिके बारेमें भी इस अधिवेशनमें कई महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुए।

सुदूर-पूर्वका युद्ध ८ दिसम्बर, १९४१ को छिड़ा और १५ को चुंकिंगमें कुओमिन्तांगकी केन्द्रीय व्यवस्था-समितिका नवाँ अधिवेशन शुरू हुआ। इसमें केन्द्रीय सरकारकी जापान, जर्मनी और इटलीके विरुद्ध की गई युद्ध-घोषणाएँ पढ़कर सुनाई गईं और बादमें जब जनरलिसिमो चांगकाई-शेक भाषण देने उठे, तो सब सदस्य खड़े हो गए और उस समय तक खड़े रहे, जब तक कि उनका भाषण समाप्त नहीं हो गया। आपने चीनकी जनतासे शक्ति-संग्रह करने और संगठित रूपसे लड़नेकी अपील की। इसी अधिनेशनमें युद्धके समय सरकारको सलाह देनेके लिए प्रधान राष्ट्रीय रक्षा-परिषद और कुओमिन्तांगके सदस्योंमें से तथा जनताके प्रमुख नागरिकोंमें से सदस्य चुनकर एक परामर्श-दातृ-समिति बनानेका निश्चय किया गया। इसी अधिवेशनमें चीनके रक्षा-युद्ध और पुनर्निर्माणके कार्योंको अधिक सुचारु रूपसे आगे बढ़ानेके लिए जनरलिसिमो चांगकाई-शेकको विशेषाधिकार दिए गए।

—जेम्स शेन

(३) वैधानिक शासनकी ओर

(अ) ऐतिहासिक सिंहावलोकन

चीनके वैधानिक आन्दोलनका इतिहास सन् १८४१ के अफ़ीम-युद्ध या कमसे कम १८९४ के चीन-जापान युद्धसे आरम्भ होता है, जब कि आत्म-विश्वास और दम्भमें भूले चीनके 'स्वर्गीय' साम्राज्यकी आँखें खुलीं और पहले-पहल उसने महसूस किया कि पाश्चात्य सभ्यतासे अभी उसे जो अनेक बातें सीखनी हैं, उनमें वैधानिक शासन-पद्धति भी एक है। १८९४ के बाद तो यह आन्दोलन बिना किसी विघ्न-बाधाके आगे बढ़ता गया और चीनमें वैधानिक शासन-पद्धति स्थापित करनेके कई प्रयत्न हुए। १९०५का वैधानिक ढाँचा, १९११ के १९ नियम, १९१२ की अस्थायी व्यवस्था, १९१३ का तिएन-तान मसविदा, १९२३ का तथाकथित त्साओ-कून विधान और १९३१ का राजनीतिक संरक्षणका अस्थायी मसविदा इस दिशामें किए गए विशेष उल्लेखनीय प्रयत्न हैं। पर चूँकि इनका चीनकी वर्त्तमान वैधानिक प्रगतिसे सीधा सम्बन्ध नहीं है, इनपर विशेष विस्तारसे कुछ न कहकर हम गत १० वर्षोंमें इस दिशामें हुए कार्यों एवं प्रयत्नोंपर ही प्रकाश डालेंगे।

१८ सितम्बर, १९३१ को जब जापानने मंचूरियापर आक्रमणकर चीनके तीन पूर्वी प्रदेशोंपर अधिकार कर लिया, तो कुओमिन्तांगके सदस्यों एवं अन्य दूरदर्शी चीनियोंने अनुभव किया कि ऐसे प्रबल शत्रुका मुक़ाबला चीनकी लोक-शक्ति, फ़ौजी, राजनीतिक और आर्थिक साधनोंके संग्रह एवं संगठन द्वारा ही किया जा सकता है। यह तभी हो सकता है, जब कि दलका शासन खत्मकर देशमें वैधानिक शासन स्थापित

किया जाय। अप्रैल, १९३२ में सियानमें हुई असाधारण राष्ट्रीय कांग्रेसने इस आशयका एक प्रस्ताव भी पास किया कि कुओमिन्तांग अपने दलका शासन शीघ्रातिशीघ्र हटा ले और उसके स्थानपर वैधानिक शासन-पद्धति स्थापित करे। इसपर कुओमिन्तांगकी चौथी केन्द्रीय व्यवस्था-समितिने अपने तीसरे अधिवेशनमें डा० सुन-फोका यह प्रस्ताव स्वीकृत किया कि (१) मार्च, १९३४ में एक गण-परिषद बुलाई जाय और (२) क़ानून-विभागको शीघ्रातिशीघ्र चीनके स्थायी विधानका मसविदा तैयार करनेका आदेश दिया जाय। शीघ्र ही क़ानून-विभागके प्रधान डा० सुन-फोकी अध्यक्षतामें ४२ सदस्योंकी एक समितिने—जिसके उपाध्यक्ष थे दो प्रसिद्ध जूरी डा० जान सी० एच० वू और मि० चांग चि-पेंग—विधानके मसविदेका काम आरम्भ भी कर दिया।

डा० वू ने बड़े परिश्रमके बाद २१४ धाराओंका एक अस्थायी मसविदा पेश किया, जिसे सरकारने लोकमत जानने और भावी मसविदेके आधारके रूपमें प्रकाशित करवाया। प्रथम प्रयास होनेपर भी इसकी खूब चर्चा, टीका-टिप्पणी और आलोचना हुई। इन्हीं सबसे मसाला इकट्ठाकर १२ मार्च, १९३४ को १६० धाराओंका एक दूसरा मसविदा प्रकाशित किया गया। यह क़ानून-विभाग द्वारा तैयार किया हुआ पहला मसविदा था, जो 'चीनी प्रजातन्त्रके विधानका प्राथमिक मसविदा' नामसे प्रसिद्ध है। इसके प्रकाशनके बाद २॥ महीनोंमें क़ानून-विभागके पास इसकी टीका-टिप्पणी, आलोचना, परिवर्त्तन-संशोधन आदिके २८१ पत्र पहुँचे। इन सबकी जाँचके लिए डा० सुन-फोने एक सुयोग्य जूरी और वर्त्तमान वैदेशिक उपमंत्री डा० फू पिंग-श्युंगकी अध्यक्षतामें तीन सदस्योंकी एक समिति नियुक्त की। विचार-विमर्श करनेके बाद समितिने इन सब सम्मतियों, आलोचनाओं आदिको पुस्तक-रूपमें प्रकाशित करवा दिया, जिससे विधान-मसविदा-समितिने काफ़ी लाभ उठाया और 'चीनी प्रजातन्त्रके विधानका संशोधित प्राथमिक समझौता' नामसे दूसरा मसविदा प्रकाशित किया। इसकी भी चर्चा और आलोचना हुई। चीनके प्रसिद्ध जूरी और न्याय-विभागके भूतपूर्व अध्यक्ष तथा हेगकी अन्तर्राष्ट्रीय अदालतके जज डा० वांग चुंग-हुईने भी इसके दोहरानेमें बहुत मदद की। तब क़ानून-विभागने १७८ धाराओं और १२ अध्यायोंका तीसरा

संशोधित मसविदा तैयार किया, जो १६ अक्टूबर, १९३४ को प्रकाशित हुआ। इसे 'अंतिम' मसविदा बतलाया गया।

इस अन्तिम मसविदे पर पहले कुओमिन्तांगकी केन्द्रीय राजनीतिक परिषदने और बादमें केन्द्रीय व्यवस्था-समिति द्वारा नियुक्त स्थायी समितिने विचार किया और इसे लचीला तथा सरल बनानेके उद्देश्यसे कुछ सुधार किए ; आर्थिक और फौजी मामलोंके अध्याय निकाल दिए गए और उनके बदलेमें प्रान्तों, ज़िलों और म्युनिस्पैलिटियों-सम्बन्धी तीन अध्याय और जोड़ दिए गए ; कुओमिन्तांगकी केन्द्रीय व्यवस्था-समिति द्वारा नियुक्त १९ सदस्योंकी एक समितिने चौथी बार संशोधित मसविदेपर फिर विचार किया और उसमें कुछ सुधार सुझाए। उसकी सिफ़ारिशोंके साथ मसविदा क़ानून-विभागको भेज दिया गया, जिसने उसे अन्तिम संशोधित रूप दिया।' इसको केन्द्रीय सरकारने ५ मार्च, १९३६ को प्रकाशित करवाया और साथ ही यह घोषणा भी की कि इसे स्वीकार करनेके लिए १२ नवम्बर, १९३७ को एक गण-परिषद बुलाई जायगी। पर जुलाई, १९३७ में ही जापानने लड़ाई छेड़ दी और गण-परिषद नहीं बुलाई जा सकी।

(ब) विधानका अन्तिम मसविदा

चीनी प्रजातन्त्रके विधानके अन्तिम और उसके पहलेके विधानोंका मूलाधार हैं डा० सुनयात-सेनके प्रसिद्ध सिद्धान्त और उपदेश (San Min Chu I), जो कुओमिन्तांगके लिए वेद-वाक्य हैं। यद्यपि डा० वू के अन्तिम मसविदेके अध्यायोंका चुनाव भी डा० सुनयात-सेनके सिद्धान्तोंके अनुसार तीन भागोंमें करनेकी सिफ़ारिश नहीं मानी गई, पर उनकी मूल भावनाकी छाप अन्तिम मसविदेकी प्रत्येक धारा और अध्यायपर स्पष्ट है। अन्तिम मसविदेकी भूमिकामें कहा गया है—"चीनके समस्त नागरिकोंकी ओरसे मिले अधिकार और चीनी प्रजातन्त्रके संस्थापक डा० सुनयात-सेन द्वारा सौंपी गई उनके सिद्धान्तों एवं उपदेशोंकी थातीके आधारपर चीनी प्रजातन्त्रकी गण-परिषदने इस विधानको स्वीकार किया है। उसीकी ओरसे यह देशभरमें प्रचारित किया जाता है, ताकि सब लोग वफ़ादारीसे इसका पालन करें

अन्तिम मसविदेकी पहली धारा है—"चीनी प्रजातन्त्र डा० सुनयात-सेनके (San Min Chu I) का प्रजातन्त्र है।" इसका अभिप्राय समझाते हुए डा० सुन-फोने कहा है कि डा० सुनयात-सेनके पहले सिद्धान्त (Min Tsu Chu I) का उद्देश्य है चीनको किसी अन्य देश या राष्ट्रके प्रभावमें न रखकर पूर्ण रूपसे स्वतन्त्र बनाना। दूसरे सिद्धान्त (Min Chuan Chu I) का उद्देश्य है चीनको यथार्थमें एक ऐसा जनतन्त्र राष्ट्र बनाना, जिसमें सर्वोच्च सत्ता नागरिकोंकी एक प्रतिनिधि-सभाके हाथमें रहे। तीसरे सिद्धान्त (Min Shang Chu I) का उद्देश्य है सामाजिक और आर्थिक प्रणालियोंको सुधारना, ताकि प्रत्येक व्यक्तिको जीविकोपार्जनके साधन सुलभ हों और वह जीनेके अधिकारको क़ायम रख सके। सूत्र-रूपमें यही उनके सिद्धान्तोंका सार है।

अन्तिम मसविदेकी दूसरी उल्लेखनीय बात है 'सत्ताका पृथक्करण'। राजनीति-विज्ञानके पाश्चात्य विद्यार्थीको सत्ताके पृथक्करणसे तुरन्त उन निषेधों, प्रतिबन्धों और सीमाओंका स्मरण हो आयगा, जो सरकारके व्यवस्था, क़ानून और न्याय आदि विभागोंपर लागू की जाती हैं। किन्तु चीन इस दिशामें भी डा० सुनयात-सेनके ही उपदेशों एवं सुझावोंका अनुकरण करता है। डा० सुनयात-सेनने ३० वर्षोंके अध्ययन-अनुसंधानके बाद 'सत्ताके पाँच विभागों' का सिद्धान्त स्थिर किया था, जो आज भी चीनकी राष्ट्रीय सरकारका मूलाधार है। उनका कहना था कि सुयोग्य होनेके लिए सरकारको काफ़ी सत्ता चाहिए ; पर अगर उसे बहुत अधिक सत्ता मिल गई, तो वह खतरनाक और बेकाबू भी हो सकती है। अतः यह स्थिति न आने देनेके लिए उसपर किसीका प्रभावपूर्ण नियन्त्रण होना आवश्यक है। नियन्त्रणकी यह सत्ता जनताके हाथमें है। इन दोनों प्रकारकी सत्ताओंको डा० सुनयात-सेनने (सरकारकी) 'शासनकी सत्ता' और (जनताकी) 'राजनीतिक सत्ता' कहा है। पर राजनीतिक सत्तासे उनका तात्पर्य केवल चुनावका अधिकार ही नहीं है। इसमें किसी कार्यके आरम्भ कर सकने, किसी कार्य या अधिकारीकी आलोचना कर सकने और उसको हटवानेके अधिकार भी शामिल हैं। इसी प्रकार शासनकी सत्ताके पाश्चात्य ढंगपर केवल क़ानून, न्याय और व्यवस्था-विभागोंमें बाँटे जानेके भी वे क़ायल नहीं। उन्होंने

इनके साथ नियन्त्रण और परीक्षा कर सकनेके अधिकारको भी दो नए विभागोंके रूपमें जोड़ दिया है। इसीलिए उनका सिद्धान्त 'सत्ताके पाँच विभागोंका सिद्धान्त' कहलाता है।

इस मसविदेकी तीसरी उल्लेखनीय बात है इसका उग्र व्यक्तिवाद और उग्र समाजवादके बीचका रूप, जो पूर्णतया डा० सुनयात-सेनके उपदेशोंपर ही आधारित है। अपने भाषणोंमें डा० सेनने कई बार यह बात कही है कि वे न तो १८ वीं सदीके प्राकृत नियमोंके अनुयायियों द्वारा प्रतिपादित उग्र व्यक्तिवादके भक्त हैं और न विशुद्ध मार्क्सवादके सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक रूपोंके ही। वे इन दोनोंके बीचकी स्थिति पसंद करते थे। उनका कहना था कि पूँजीवादको एकदम मिटा देनेकी बजाए उसे नियन्त्रित और संयत रूपमें क़ायम रखना ज़्यादा अच्छा है। साथ ही यह भी ज़रूरी है कि प्रमुख दस्तकारियों तथा लोकोपयोगी उत्पादक-साधनोंपर सरकारका अधिकार रहे। इसी प्रकार ज़मीदारोंके बिल्कुल हटाए जानेके पक्षमें भी वे नहीं थे। उनका कहना था कि बिना परिश्रमके लगानके रूपमें पैदावारका लाभ कोई न उठाय, किन्तु खेती करनेवाला भूमिका मालिक अवश्य हो सके। मसविदेके 'राष्ट्रके अर्थनीतिक जीवन' में इन्हीं सिद्धान्तोंके अनुसार योजनाएँ एवं व्यवस्था सुझाई गई है।

जनताके अधिकार और कर्त्तव्यों तथा शिक्षा आदिकी व्यवस्था भी इन्हीं सिद्धान्तोंके अनुसार की जानेका मसविदेमें उल्लेख है। धारा १३७ में बतलाया गया है कि केन्द्रीय बजटका १५ प्रतिशत तथा प्रान्तीय, जिला और म्युनिस्पल-बजटका ३० प्रतिशत शिक्षापर खर्च किया जायगा। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि चीनके भावी विधानमें शिक्षाको कितना महत्व दिया गया है। निरक्षर जनताके साथ और किसी प्रकारकी सरकार चल सकती है, लेकिन वैधानिक सरकार निरक्षर जनताको लेकर कदापि नहीं चल सकती। वैधानिक सरकारका काम—विशेषकर चीनमें—शिक्षित और बुद्धिजीवी जनताके आधारपर ही सरल हो जायगा। अतः शिक्षाका प्रचार सरकारके वैधानिक उद्देश्यको ही आगे बढ़ाता है।

(स) युद्ध और वैधानिक आन्दोलन

लोगोंकी आम तौर पर यह धारणा होना स्वाभाविक है कि चीन-जापान युद्धके कारण चीनमें सब प्रकारका वैधानिक आन्दोलन बिल्कुल रुक गया होगा। पर दर-असल ऐसी बात नहीं है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि पहले-पहल जब जापानियोंका चीनपर ज़बर्दस्त आक्रमण हुआ और जब उन्होंने नानकिंगपर अधिकार कर लिया, तो चीन-सरकार और चीनियोंने विधान आदिका खयाल छोड़कर अपनी सारी शक्तियोंको केवल आक्रमणकारी शत्रुओंका सामना करनेपर ही केन्द्रित किया। पर जब उन्होंने महसूस किया कि युद्ध लम्बा चलेगा, जिसके लिए राष्ट्रकी सारी शक्तियोंको पूर्णतया संगठित करना होगा और यह तभी सम्भव है जब कि शासनको अधिकसे अधिक वैधानिक बनाया जाय। यहीं हमें चीनियोंके स्वभावकी इस विशिष्टताका परिचय मिलता है कि वह आजके काममें इतना तल्लीन नहीं हो सकता कि कलकी चिन्ता ही न करे! इस समय चीनका नारा है—'आक्रमणके विरुद्ध लड़ने और राष्ट्रीय पुनर्निर्माणकी तैयारी करो।' प्रत्येक चीनीके लिए युद्ध एक साधन-मात्र है और साध्य है राष्ट्रीय पुनर्निर्माण।

पर इसका मतलब यह नहीं कि युद्धका चीनके वैधानिक आन्दोलनपर कोई खास असर नहीं पड़ा और वह बिना किसी विघ्न-बाधाके पूर्ववत् ही चल रहा है। ऐसा कहना अतिशयोक्ति और ग़लतबयानी होगी। यदि आज वहाँ युद्ध न हो रहा होता, तो इसकी प्रगति काफ़ी तेज़ हुई होती। किन्तु इतना तो तय ही है कि युद्धके बावजूद इसकी गति बिल्कुल रुक नहीं गई है। इस दौरानमें कमसे कम तोन काम ऐसे हुए हैं, जिन्हें वैधानिक शासनके विकासकी दृष्टिसे काफ़ी प्रोत्साहक और महत्वपूर्ण कहा जा सकता है।

पहला काम है स्थानीय स्वशासनका प्रसार। पिछले तीन वर्षोंमें इस दिशामें चीनने काफ़ी प्रगति की है। डा० सुनयात-सेनके सिद्धान्तानुसार तो स्थानीय स्वशासन ही वैधानिक सरकारकी स्थापनाका मुख्य आधार अथवा प्राथमिक सीढ़ी है। वे तो वैधानिक सरकारकी स्थापनाका समय ही वह मानते हैं जब कि समस्त चीनमें या उसके

अधिकांश भागमें स्थानीय शासनका पूर्ण विकास हो जाय। इस सम्बन्धमें जनरलिसिमो चांगकाई-शेकने कहा है—"निकट भविष्यमें हमें जो सबसे महत्वपूर्ण कार्य करना है, वह है स्थानीय स्वशासनका प्रचार, क्योंकि यही हमारी भावी वैधानिक सरकारका आधार है।"

दूसरा उल्लेखनीय काम है अखिल देशीय, प्रान्तीय, स्थानीय और म्युनिस्पल प्रतिनिधि-सभाओंकी स्थापना। ये सभाएँ परामर्श-दातृ-समितियाँ हैं, जिनके सदस्य हल्कों अथवा पेशोंके हिसाबसे सरकार द्वारा मनोनीत होते हैं। इनका काम सरकारको सलाह देना और जनताकी ओरसे उसके सम्मुख प्रतिनिधित्व करना है। ये सरकारके विविध महकमोंके अफ़सरोंकी रिपोर्टें सुनकर उनपर प्रश्न भी पूछ सकती हैं। अखिल देशीय गण-परिषदसे पूछे बिना केन्द्रीय सरकार न कोई नवीन नीति निर्धारित कर सकती है और न कोई नया क़ानून ही बना सकती है। यद्यपि इन्हें यथार्थमें जनताकी प्रतिनिधि संस्थाएँ नहीं कहा जा सकता, पर चीनको जनतन्त्र और वैधानिक शासनकी ओर अग्रसर करनेमें इनका बड़ा अनुकूल प्रभाव पड़ा है। इनसे जनतामें प्रतिनिधित्वकी भावना बढ़ी है।

तीसरा उल्लेखनीय काम है कुओमिन्तांग द्वारा विधान स्वीकृत करनेके लिए गण-परिषदका बुलाया जाना। यह प्रयत्न १९४० में हुआ, जब कि चीन-जापान युद्धको छिड़े पूरे तीन वर्ष हो चुके थे। राष्ट्रीय गण-राजनीतिक-परिषदके सुझाव पर कुओमिन्तांगकी केन्द्रीय व्यवस्था-समितिने इस आशयका प्रस्ताव पास किया। शीघ्र ही क़ानून-विभागने डा० फू पिंग-श्युंगकी अध्यक्षतामें इसके लिए एक प्रचार-समिति स्थापित की। पर युद्ध-जनित कठिनाइयोंके कारण यह परिषद हो नहीं सकी।

(द) भविष्यवाणी

यद्यपि कुओमिन्तांग अपने दलका शासन खत्मकर चीन-सरकारको वैधानिक जामा नहीं पहना सका, पर जब उसने युद्ध-कालमें विधान स्वीकृत करनेके लिए गण-परिषद बुलानेका आयोजन किया, तो युद्धके बाद वह अपने इस निश्चयको पूरा क्यों नहीं करेगा? इस युद्धसे पूर्व और इसके दौरानमें उसने वैधानिक सरकारकी स्थापनाके

मादाम चांगकाई-शेक चुंकिंगमें मनाए गए अन्तर्राष्ट्रीय महिला-दिवसके अधिवेशनमें भाषण दे रही हैं ।

लिए जो कुछ किया है, उसे देखते हुए इतना तो कहा ही जा सकता है कि युद्ध समाप्त होते ही वह प्रस्तावित गण-परिषद अवश्य बुलायगा और चीनका स्थायी विधान तैयार करेगा। कुओमिन्तांगके नेता जनरलिसिमो चांगकाई-शेकने अभी हालहीमें कहा था—"चीन-सरकारका स्थायी विधान बनाने और उसे कार्यान्वित करनेकी मेरी प्रबल इच्छा कोई एक या दो सालकी नहीं है, बल्कि पिछले १० सालसे है। मैं बराबर इस बातपर ज़ोर देता रहा हूँ कि हमें जल्दीसे जल्दी विधान बना लेना चाहिए।" एक दूसरे अवसर पर उन्होंने कहा था—"व्यक्तिगत रूपसे गण-परिषद बुलाने और राजनीतिक संरक्षणके १९३१ के अस्थायी मसविदेको अमलमें लानेके बादसे एक क्षणके लिए भी मैं इस बातको भुला नहीं सका हूँ कि शीघ्र से शीघ्र हमें स्थायी विधान बनाना चाहिए। यह हमारे नेता डा० सुनयात-सेन द्वारा छोड़ा हुआ अधूरा कार्य और हमारे क्रान्तिकारी प्रयत्नोंका अन्तिम लक्ष्य है। मेरी इस अभिलाषाको सब देशवासियोंने इतनी अच्छी तरह समझ लिया है कि उसके सम्बन्धमें विशेष कुछ कहना अनावश्यक है।"

यह मान लेनेपर कि युद्धके बाद गण-परिषद बुलाई जायगी, जो स्थायी विधान स्वीकार करेगी, प्रश्न हो सकता है कि वह विधान कैसा होगा? जहाँ तक हमारा अनुमान है, यह विधान ५ मई, १९३६ को स्वीकृत हुए 'चीनी प्रजातन्त्रके अन्तिम मसविदे' से बहुत भिन्न नहीं होगी। शायद उसमें व्यवस्था-विभागका अधिकार-क्षेत्र और व्यापक कर दिया जाय और राष्ट्र-रक्षा-विभागके लिए भी विशेष गुंजाइश रखी जाय।

—मेइ-जू-आओ

२. फ़ौजी हलचलें

(१) कुछ प्रसिद्ध लड़ाइयाँ : उनकी युद्ध-नीति और महत्व

चीन-जापान युद्धके इन पाँच वर्षोंमें न मालूम कितनी ऐसी लड़ाइयाँ हुई हैं, जिनमें चीनियोंने अपनेसे कई गुना अधिक शक्तिशाली शत्रुओंके छक्के छुड़ाकर असाधारण वीरता एवं युद्ध-कौशलका परिचय दिया है। पर स्थानाभावके कारण उन सबका या अबतक हुई प्रमुख लड़ाइयोंका संक्षेपमें भी वर्णन करना सम्भव नहीं। अतः इस पहलूपर प्रकाश डालनेके लिए हम यहाँ केवल इस युद्धके पाँचवें वर्षमें (जुलाई १९४१ से जून १९४२ तक) हुई कुछ लड़ाइयोंपर ही प्रकाश डालेंगे।

चीनके रक्षात्मक युद्धकी प्रधान नीति रही है अपनी ओर खींचकर या घेरकर शत्रुकी सेनाका नाश करना। इसके लिए चीनी सेनाने पिछले वर्षोंकी भाँति सक्रिय रक्षात्मक युद्धकी परम्पराको तो क़ायम रखा ही, पर साथ ही कई बार शत्रुसे आक्रमणके आरम्भ करनेका दाँव भी छीन लिया और स्वयं उसपर आक्रमण कर उसे ध्वस्त कर दिया। पिछले वर्षोंकी भाँति इस वर्ष भी उसने 'चुम्बकीय युद्ध-प्रणाली' का ही पालन किया। इसके अनुसार वे धीरे-धीरे पीछे हटकर शत्रुको अपनी ओर बढ़नेका मौक़ा देती गई और जब वह अपने आधार-केन्द्रसे काफ़ी दूर चला आया, तो उसे अचानक घेरकर या उसके यातायात और खाद्य तथा युद्ध-

सामग्रीका आगमन रोक कर उसे प्रत्याक्रमण द्वारा ध्वस्त कर डाला। इस वर्ष इस दिशामें सबसे उल्लेखनीय बात यह रही कि चीनी सेनाके विभिन्न विभागों (स्थल और हवाई सेना) में पूरा सहयोग और विविध युद्ध-क्षेत्रोंमें पूरा सामंजस्य रहा।

इस वर्षकी सबसे पहली उल्लेखनीय लड़ाई बर्माकी है। इसका एक अन्तर्राष्ट्रीय महत्व भी है और वह यह कि चीन अपने मित्र-राष्ट्रोंकी सहायतार्थ तथा अपने सम्मिलित हितोंके लिए अपनी सीमासे बाहर भी सेना भेज सकता है। १९४२ के आरम्भमें जब जापानने बर्मापर आक्रमण किया, तो प्रसिद्ध अमरीकन सेनापति जनरल स्टिलवैलकी अध्यक्षतामें तीन चीनी सेनाएँ बर्मा भेजी गईं, जिन्होंने रंगून-मांडले रेलवेके पूर्वसे बर्मा-थाई सीमान्त तकके ५०० मीलके क्षेत्रमें मोर्चेबन्दीकी। पेगूपर हमला होते ही चीनी सेना यहाँसे आगे बढ़कर केन्द्रीय बर्मामें आ गई। इस समय इरावदी-मोर्चेपर स्थिति बड़ी गम्भीर हो गई थी, अतः मार्चके प्रथम सप्ताहमें चीनी सेनाकी अगुआ टुकड़ियाँ टुंगू तक बढ़ आईं। यहीं १९ मार्चको चीनी और जापानी सेनाओंमें भिड़न्त हुई और लगातार १० दिन तक चीनी सेनाके केवल एक डिवीज़नने जापानकी ५५वीं मोटर-वाहिनी और ३३वें डिवीज़नकी कई टुकड़ियोंसे डटकर लोहा लिया। बम-वर्षा, भारी तोपोंकी गोलाबारी और ज़हरीली गैसके प्रयोग तक जब चीनियोंको एक पग भी पीछे न हटा सके, तो जापानी दस्युओंने सुरंगें खोदकर टुंगू पहुँचनेका उपक्रम किया (जैसा कि उन्होंने १९०४-०५ के रूस-जापान युद्धमें पोर्ट आर्थरके क़िलेके चारों ओर किया था)। इसपर मजबूरन चीनियोंको पीछे हटना पड़ा।

टुंगूके पतनके बाद चीनी सेना उत्तर-बर्माकी ओर चली आई। इनानजांवमें लाशियोसे आई सहायक-सेनाके साथ चीनियोंने फिर डटकर जापानियोंसे लोहा लिया। इसपर जापानियोंने उत्तरी शान-राज्यों द्वारा तीन ओरसे उनपर चढ़ाई की। टौंजी, लोयेलम और मांडलेमें चीनियोंने कई बार जापानियोंको पीछे खदेड़ा। बर्मा-रोड होकर ३ मईको युन्नान प्रदेशमें पहुँचनेवाले जापानी दस्तोंकी कई टुकड़ियोंको सालवीन नदी पार करते समय चीनियोंने यमलोक पहुँचाया। बर्मासे

ब्रिटिश और भारतीय फौजोंके हटा लिए जानेपर भी चीनी सेनाएँ पीछेसे जापानियोंको तंग करनेके लिए बनी रहीं। इन्हें बर्मियोंसे किसी प्रकारका सहयोग-सहायता न मिलनेसे खाद्य-सामग्री तक हवाई-जहाज़ोंसे पहुँचाई जाती थी। बर्माके युद्धकी तुलना १९३७ में हुई शंघाईकी लड़ाईसे ही की जा सकती है, जहाँ चीनियोंको जापानकी जल, स्थल और हवाई-सेनाओंसे मोर्चा लेना पड़ा था। शंघाईमें उसे जो भयंकर बलि देनी पड़ी थी, उसकी पुनरावृत्ति टुंगूमें हुई। टुंगूमें चारों ओरसे घिर जानेपर भी चीनियोंने जिस वीरतासे आखरी दमतक लोहा लिया और जापानी टैंकों, तोपों और बमोंकी मारके बावजूद उनके मोर्चोंमें घुसकर उन्हें तहस-नहस किया, वह चीनके ही नहीं, विश्वके सैनिक-इतिहासका एक सुनहला अध्याय है।

बर्माकी ही तरह चांगशाकी दूसरी (सितम्बर-अक्टूबर, १९४१) और तीसरी (जनवरी, १९४२) लड़ाइयाँ भी विशेष उल्लेखनीय हैं। चांगशाको पहली लड़ाई अक्टूबर, १९४१ में हुई थी। दूसरी लड़ाईका आरम्भ १७ सितम्बर, १९४१ को हुआ, जब कि सिन्तस्यांग नदी पारकर १२०,००० जापानियोंने छोटे जंगी जहाज़ों और बम-वर्षकोंकी सहायतासे चीनियोंको पीछे खदेड़ दिया। चीनियोंका विचार कई ओरसे जापानियोंको घेरकर मिलो नदीके दक्षिणमें उनपर ज़ोरदार हमला करनेका था, किन्तु समय पर सहायता न पहुँचनेसे उन्हें चांगशाके दक्षिण-पूर्वकी लाओताओ नदीकी ओर हटना पड़ा। यहाँसे उन्होंने ज्यों-ज्यों जापानी चांगशामें बढ़ते गए, उन्हें पीछे तथा आजू-बाजूसे घेर लिया और लगातार ऐसा धुना कि उनका यातायातका सम्बन्ध भी टूट गया और उनके लिए बिना हथियारोंके लड़ना असम्भव हो गया। जापानियोंने तुंगतिंग झीलके किनारोंपर कई सैनिक दस्ते उतारे। कई दस्ते हवाई-जहाज़ों (पैराशूट-द्वारा) से उतारे। घिरे हुए सैनिकोंको हवाई-जहाज़ोंसे हथियार पहुँचाए। 'पाँचवी सेना' के लोगों द्वारा चीनी सेनाओंकी गति-विधिकी गुप्त खबरें प्राप्त कीं। टेलीफ़ोनके तार कटवा डाले। तरह-तरहकी झूठी अफ़वाहें फैलाइं। कई चीनी गाँवोंमें आग लगवादी। पर इन सब उपायोंने भी जापानियोंकी रक्षा न की और उन्हें ज़बर्दस्त हार खानी पड़ी। इस युद्धमें ४१, २५० जापानी सैनिक हताहत हुए।

इस हारके दो मास बाद ही जापानने एक लाख सैनिकोंको लेकर फिर चांगशा पर ज़बर्दस्त आक्रमण किया। २३ दिसम्बरको जापानियोंने चीनकी पहली मोर्चा-बन्दी ध्वस्तकर सिन्तस्यांग नदी पारकी। चीनियोंने कोई तगड़ा मुक़ाबला नहीं किया और चांगशाको मध्य-बिंदु बनाकर ऐसा अर्द्धवृत्ताकार घेरा बनाया कि जापानी सेना बड़ी सुगमतासे मिलो, लाओताओ और ल्यूयांग नदियाँ पर करती हुई चांगशाकी ओर बढ़ने लगी। सारी प्रधान सड़कें चीनियोंने पीछे हटते समय तहस-नहस कर दी थीं, जिससे जापानी भारी तोपें और टैंक न ला सके। पहले-पहल जापानियोंकी चीनी सेनासे मिलो और चांगशाके बीचमें मुठभेड़ हुई। फिर दक्षिण-पूर्वकी ओर बढ़ने पर चांगशाकी उत्तरी सीमापर भयंकर लड़ाई हुई और जापानियोंको पीछे हटना पड़ा। दक्षिणी सीमापर होनेवाली लड़ाईमें तो ११ बार दोनों सेनाओंने मोर्चे बदले। जब चांगशा तीन ओरसे घिर गया, तो चीनियोंने अपने घेरेके बिन्दुसे दक्षिणकी ओर बढ़कर पीछेसे जापानियोंपर हमला किया। इसी समय ल्यूयांग नदीकी ओरसे जापानियोंपर भयंकर प्रत्याक्रमण किया गया। पहाड़ियोंपर लगी उनकी तोपोंको चुपकर दिया गया और पीछेसे उनकी यातायातकी लाइन काट दी गई। लगातार ११ दिनके घमासान युद्धके बाद जापानी सेनाने घुटने टेक दिए और १५ जनवरीसे उनके रहे-सहे सैनिक उत्तरमें सिन्तस्यांग पारकर भाग निकले। इस युद्धमें ५७,००० जापानी हताहत और २,३०० युद्ध-बन्दी हुए तथा बहुत-सी युद्ध-सामग्री चीनियोंके हाथ लगी। यह इस वर्षकी मित्र-राष्ट्र-पक्षकी सर्वोत्तम विजय थी, जिसने यह सिद्धकर दिया कि जापानी अविजेय नहीं हैं!

चांगशाकी इन लड़ाइयोंमें चीनियोंने उसी युद्ध-नीतिका प्रयोग किया, जिसका पहली लड़ाईमें किया था। उत्तरी क्यांगसीमें जब जापानी काफ़ी आगे बढ़ आए, तो आजू-बाजूसे जाकर चीनियोंने उनको धुनना शुरू किया और एक दस्तेने जाकर उनकी यातायातकी लाइन काट दी। इससे जापानियोंमें भगदड़ मचगई और उन्हें इधर-उधर भागना पड़ा। इस युद्धमें उनके लगभग ४०,००० आदमी हताहत हुए। इस युद्ध-नीतिका पहले-पहल सफलतापूर्वक प्रयोग १९३८ में तायेरच्वांगमें किया गया था, जब कि दो जापानी सेनाओंकी क्यांगसू रेलवे-केन्द्रकी ओर बढ़नेकी

सुविधा देकर बादमें घेरकर ध्वस्तकर डाला गया था। चीनी सेनाओंकी यही सर्वप्रथम आश्चर्यजनक विजय थी। मई १९३९ में त्साओयांग (उत्तरी हूपेह), मई १९४० में त्साओयांग-इचांग (पश्चिमी हूपेह), जनवरी-फरवरी १९४१ में दक्षिणी हूणान और मार्च १९४१ में शांकाओ (उत्तरी क्यांगसी) की लड़ाइयोंमें भी इसी युद्ध-नीतिका प्रयोग किया गया।

चौथी उल्लेखनीय लड़ाई है पश्चिमी चेकियांगकी, जिसका आरम्भ मई-जून १९४२ में हुआ था। १८ अप्रैलको जापानके नगरोंपर बम गिराकर जब ब्रिगेडियर-जनरल जेम्स डूलिटिलके फौजी यान चीनकी ओर आए, तो जापानियोंने देखा कि चीनके चेकियांग और क्यांगसी क्षेत्रोंके हवाई-अड्डोंको नष्ट किए बिना उनका देश अरक्षित ही रहेगा। अतः १५ मई को एक लाखसे अधिक जापानियोंने पश्चिमी चेकियांगके रेलवे-केन्द्र किन्ह्वापर आक्रमण किया। शाओशिंग, शाओशान और फूयांगसे जापानी सेनाएँ इन प्रदेशोंकी ओर बढ़ीं। भारी तोपों, बम-वर्षकों और गैसकी सहायतासे जापानियोंने किन्ह्वापर अधिकार कर लिया, जिसके लिए उन्हें ५००० लोगोंकी बलि देनी पड़ी। इसके बाद जापानी चेकियांग-क्यांगसी रेल्वेके मार्गसे आगे बढ़े, जहाँ कई जगह चीनियोंने डटकर उनसे लोहा लिया।

शत्रुका मुक़ाबला करने और अपने सैनिक-महत्वके केन्द्रोंकी रक्षा करनेके साथ ही साथ चीनियोंने शत्रुके मोर्चोंपर कई तगड़े आक्रमण भी किए हैं। अक्टूबर १९४१ में इचांगपर हुआ आक्रमण इसीका उदाहरण है। इसमें १५ जापानी मोर्चे चीनियोंके हाथ आए। और कोई चारा न देखकर जापानियोंको गैसका प्रयोग करना पड़ा, जिससे लाचार होकर चीनियोंको पीछे हटना पड़ा। इसमें जापानके लगभग १०,००० आदमी हताहत हुए और १४ बम-वर्षक नष्ट हुए। लगभग इतना ही सफल आक्रमण १९३९ में कुनलुनक्वानपर किया गया था, जिसमें चीनी तोपखाने और हवाई-सेनाने भी स्थल-सेनाका साथ दिया था। यहाँसे भी जापानियोंने गैसका अत्यधिक प्रयोग करके चीनियोंको हटाया।

इस प्रकार जून १९४१ से जुलाई १९४२ तक चीनियोंको कुल ५५८० लड़ाइयाँ लड़नी पड़ीं। इनमें इन्होंने शत्रुके १७,००० आदमियोंको हताहत किया और

५,०९४ को युद्ध-बन्दी बनाया तथा ३८ बड़ी तोपें, ४२० मशीनगनें, १२,७७ बंदूकें और बहुत-सी अन्य प्रकारकी युद्ध-सामग्री हस्तगत की। पर आजकलकी लड़ाईयाँ कोरी वीरता, साहस और दृढ़-निश्चयसे ही नहीं जीती जा सकतीं। उनके लिए इन सबके अतिरिक्त बड़ी तोपें टैंक, बम-वर्षक और पीछा करनेवाले (झपटानी) यान आदि अत्यावश्यक हैं। यदि ये सब पर्याप्त मात्रामें चीनियोंको मिलें, तो वे और भी अधिक आश्चर्यजनक परिणाम दिखा सकते हैं।

—सेमुअल चाओ

(२) छोटा किन्तु महान : चीनका हवाई-बेड़ा

पश्चिमी राष्ट्रों—और पूर्वमें जापान—के मुक़ाबलेमें चीनका हवाई-बेड़ा अभी बहुत नया और छोटा है। इसकी नींव १९३१ में डाली गई थी और जापानके आक्रमणके समय इसकी संख्या २०० थी। पर इतने यानोंसे ही इसने जो आश्चर्य-जनक परिणाम दिखाया, उससे सारे देशने इसके महत्वको भली भाँति समझा और इसकी शक्ति बढ़ानेके लिए मुक्त हस्त होकर दान दिया। पिछले ५ वर्षोंमें चीनियोंने इस कार्यके लिए ७ करोड़ डालर दिए (इसमें से लगभग आधा दान अमरीकामें रहने वाले चीनियोंका था), जिससे २-२ लाख डालरके २०० बम-वर्षक और लड़ाकू-यान खरीदे गए।

१९३१ में चियेनचियाओ (हांगचोके निकट) के केन्द्रीय चीनी हवाई-शिक्षा विद्यालयको पुनर्गठितकर अमरीकन हवाई-बेड़ेके कर्नल जोन एच० जोएट की अध्यक्षतामें १३ शिक्षकों और ४ मिस्त्रियोंकी सहायतासे चीनी युवकोंको उड़नेकी शिक्षा देनेका काम नए सिरेसे आरम्भ किया गया। १९३५ में जब ये लोग अमरीका लौटे, तो इनका स्थान चीनी शिक्षकोंने ले लिया। जापानका आक्रमण होने पर यह विद्यालय पश्चिममें चला आया। १९३८ में इसका फिर पुनर्गठन हुआ, जिसके परिणाम-स्वरूप इसमें उड़ाका-अफ्सरोंको शिक्षा दी जाने लगी और साधारण हवाई-शिक्षा इसकी शाखाओं द्वारा दी जाने लगी। इसमें शिक्षा पाए हुए अफ्सरोंको 'एयर-फोर्स स्टाफ़ स्कूल' में आक्रमण, पीछा करने, निशाना लगाने, जल और स्थल सेनाओंके साथ सहयोग करने आदिकी विशेष शिक्षा दी जाती है। यहाँसे निकले हुए अफ्सरोंको एक महाविद्यालयमें युद्ध-नीतिकी व्यावहारिक शिक्षा दी जाती है,

जिसके बाद उन्हें ज़िलों और प्रान्तोंके हवाई-बेड़ोंमें काम करनेको नियुक्तकर दिया जाता है। इधर १९४१ से विशेष योग्यताके लिए बहुतसे चीनी उड़ाके और अफ़सर एरीज़ोना (संयुक्त-राष्ट्र अमरीका) के थंडरबर्ड और ल्यूक हवाई-केन्द्रोंमें शिक्षा पानेको भी भेजे जा रहे हैं। इनके अध्यक्ष हैं हवाई मेजर-जनरल शेन तेह-सीन।

चीनी लोगोंमें उड़नेके प्रति शौक पैदा करनेके लिए सरकारने १९४० में एक बाल-हवाई-विद्यालयकी स्थापना की, जिसमें १२ से १५ वर्षकी आयुके छात्रोंको साधारण पढ़ाई-लिखाईके अलावा शरीर-विज्ञान, कई विशेष व्यायाम और उड़नेकी मानसिक तैयारीकी शिक्षा दी जाती है। छोटे-छोटे नमूनेके यान बनाकर इन्हें उनकी बनावट आदि समझाई जाती है और मोटर तथा इंजनसे चलनेवाली अन्य सवारियोंके साथ इनकी भिन्नता और साम्य बतलाया जाता है तथा उन्हें चलानेका अभ्यास कराया जाता है। यहाँसे निकलनेके बाद इन्हें विविध हवाई-शिक्षा देनेवाले विद्यालयोंमें नियमित रूपसे उड़नेकी शिक्षा दी जाने लगती है। मई १९४१ में सरकारने चेंगतूमें एक 'राष्ट्रीय उड़ाका-समिति' स्थापित की है, जो छात्रों तथा अन्य युवक-युवतियोंको बिना इंजनके नकली यानों (ग्लाइडर्स) द्वारा हवामें तैरना (ग्लाइडिंग) सिखाती है। यह आज चीनी युवक-युवतियोंका एक मनोरंजक दैनिक खेल बन गया है। कई केन्द्रोंमें छतरियों (पैराशूट) द्वारा हवाई-जहाज़ोंसे नीचे कूदनेकी भी शिक्षा दी जाने लगी है। १९४२ में मास्कोकी भाँति चुंकिंगमें भी एक मीनार बनाया गया है, जिसपरसे चीनी उड़ाके छतरियों द्वारा कूदनेका अभ्यास करते हैं। इन सबके साथ ही उड़ाकोंको मिस्त्रीके काम, इंजनके कल-पुर्ज़ोंका ज्ञान, उनकी सफ़ाई, मरम्मत आदि—की भी शिक्षा दी जाती है।

जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं, युद्धके आरम्भमें चीनके पास २०० यान थे, जिनमें से कुछ लड़ाकू (झपटानी और पीछा करनेवाले) और शेष बम-वर्षक थे। पहली श्रेणीके अधिकांश यान १९४० में चुंकिंगपर हुए जापानियोंके अनेक हवाई आक्रमणोंमें शत्रुसे लोहा लेनेके परिणाम-स्वरूप नष्ट हो गए। अब चीनके पास जितने यान बचे हैं, उनमें से अधिकांश बम-वर्षक ही हैं। इन पाँच वर्षोंमें इस छोटे-से हवाई-बेड़ेने जो कुछ किया है, उसका विस्तृत वर्णन करना सहज नहीं है।

अतः यहाँ हम केवल इस पाँचवें वर्षके ही उसके कुछ कार्योंका संक्षेपमें उल्लेख करेंगे। इस सिलसिलेमें यह जान लेना आवश्यक है कि इस वर्ष उसे 'अमरीकन स्वयं-सेवक दल' (American Volunteer Corps) से विशेष सहायता मिली है। ३०० उड़ाकोंके इस दलकी स्थापना मादाम चांगकाई-शेककी अपीलपर गत वर्ष हुई थी।

इस वर्ष जितनी भी महत्वपूर्ण लड़ाइयाँ—चांगशाकी दूसरी और तीसरी लड़ाइयाँ, इचांगका आक्रमण, बर्मा-युन्नानकी लड़ाई आदि—हुई हैं, उनमें चीनी बम-वर्षकों और लड़ाकू यानोंने जापानी मोर्चों, अवरोधों और यातायातकी लाइनोंको नष्टकर तथा शत्रु-यानोंको हमला करनेसे पहले ही खदेड़ या नष्टकर चीनकी जल और स्थल सेनाओंको बहुमूल्य सहायता पहुँचाई है। चीनी हवाई-बेड़ेका पहला हमला इस वर्ष चांगशाकी दूसरी लड़ाई (सितम्बर-अक्टूबर, १९४१) के दौरानमें हुआ। जापानके ६ डिवीज़न जब तुंगतिंग झीलको आधार बनाकर दक्षिणी चांगशामें घुसने लगे, तो चीनी यानोंने उनके जहाज़ों, नौकाओं तथा यिंगतियेन और लूलिनतांगके केन्द्रोंपर आश्चर्यजनक सफलताके साथ हमला किया। इसके दो दिन बाद इन्हीं यानोंने ल्यूयांग और लाओताओ नदियोंके बीच जापानके सैनिक-पड़ावोंपर सफलतापूर्वक आक्रमण किया। यह आक्रमण इतना ज़बर्दस्त था कि अकेले फुलिन्पूमें एकत्रित ५००० जापानियोंमें से आधेके लगभग मारे गए और युद्ध तथा खाद्य-सामग्रीसे भरी नावोंके छिन्न-भिन्न होनेसे मिलो नदी भर गई। आक्रमणोंके बाद एक चीनी गश्ती यानने युद्ध-क्षेत्रपर कई चक्कर लगाए और अपने निरीक्षणकी रिपोर्ट चुंकिंग जाकर स्वयं मार्शल चांगकाई-शेकको दी। इसी रिपोर्टके आधारपर जनरलिसिमोने चांगशामें लड़नेवाली चीनी सेनाको आगेके लिए आवश्यक हिदायतें भेजीं। इसके दो मास बाद हुई चांगशाकी तीसरी लड़ाईमें भी चीनी हवाई बेड़ेने ऐसा ही महत्वपूर्ण सहयोग दिया। जब जापानी फौजें हूणानकी राजधानीकी ओर अग्रसर हो रही थीं, तो चीनी बम-वर्षकोंने चांगलो-चीहमें जापानी सैनिक-पड़ावोंपर आक्रमण किया और मिलो नदी पार करनेको बनाए हुए उनके कई पुलोंको तहस-नहस कर दिया। अभी ये हमला करके लौट ही रहे थे कि जापानके पीछा करनेवाले यानोंने आकर इन्हें रोका और २० मिनट तक आकाशमें खूब लड़ाई हुई, जिसके परिणाम-स्वरूप ५ जापानी यान नष्ट हुए। दो

चीनी यानोंको भी कुछ हानि पहुँची । १ अक्टूबर १९४१ को जब चीनी सेनाएँ इचांगपर आक्रमणकर रही थीं, तो चाँदनी रातमें बादलोंमें से होकर चीनी यानोंने शत्रुके हवाई-अड्डों, युद्ध-सामग्री-भरे जहाजों, नदीके घाटों और गोदामोंपर बड़े सफल आक्रमण किए । कई जगह इन आक्रमणोंके कारण आग भी लग गई ।

पर स्थल-सेनाको सबसे अधिक और प्रभावपूर्ण सहायता चीनी हवाई-बेड़ेने अप्रैल-मई, १९४२ में बर्मा-युन्नान सीमापर हुई लड़ाईमें पहुँचाई । जब जापानी बर्मा-रोडकी ओर बढ़ रहे थे, तो चीनी हवाई-बेड़े और अमरीकन स्वयं-सेवक (हवाई) दलने उनकी मोटरवाहिनी टुकड़ियोंपर बेतहाशा हमले किए । तूफ़ान और आँधीके बावजूद इन्होंने न्यूलाशियोके हवाई-अड्डे, जापानके सैनिक-पड़ावों और सामग्रीके केन्द्रोंपर हमले किए, जिनके परिणाम-स्वरूप कई जगह आग भी लगी । इसके कुछ ही समय बाद उन्होंने लाशियो और वान्तिगके बीच सेनवीके पास जापानी टैंकों और बर्मा-रोडपर बढ़नेवाले जापानी तोपखानेपर हमले किए । जापानके एक सैनिक-पड़ावपर भी उन्होंने भयंकर हमला किया । वान्तिगके आसपास जंगलोंमें छुपे जापानियोंपर भी इन्होंने नीचे आकर मशीनगनोंसे हमले किए । इसी क्षेत्रमें आगे बढ़ती हुई चीनी सेनाओंपर जब जापानी यानोंने आक्रमण करना चाहा, तो चीनी लड़ाकू यानोंने बढ़कर उन्हें मार्गमें ही रोका और लगभग आध घंटे तक दोनोंमें भीषण आकाश-युद्ध हुआ ।

६ मईको जब जापानी सालवीन नदीकी ओर बढ़ने लगे, तो चीनी यानोंने नीचे आकर नदीके पश्चिमी तटपर एकत्र हुए जापानी टैंकों और सशस्त्र मोटरोंपर बमों और मशीनगनोंसे कई बार हमले किए । ७ मईको लुंगलिगमें १३०० गज़की ऊँचाईसे जापानी सेनापर हमले किए गए और नीचे आकर मशीनगनोंसे गोलियाँ बरसाई गईं । जापानकी बहुत-सी सशस्त्र मोटरोंमें आग भी लग गई १० और ११ मईको मूसलधार वर्षाके बावजूद मांगशीहमें जापानी सेनाकी कई लारियों और मोटरवाहिनी टुकड़ियोंको बम-वर्षा द्वारा तहस-नहस कर दिया गया । मईके अन्तमें जब चीनी सेनाएँ तेंगचुंग और लुंगलिंगपर प्रत्याक्रमणकर रही थीं, तो चीनी यानोंने कानलानचाई और लुंगलिंगपर बम-वर्षा कर जापानी सेनाको जन और सामग्रीकी काफ़ी हानि पहुँचाई ।

इस प्रकार चीनी हवाई-बेड़ेने चीनकी जल और स्थल-सेनाकी शत्रुके हवाई-आक्रमणसे रक्षा करके, ज़रूरत पड़नेपर उसे हवाई-मार्गसे शस्त्रास्त्र और खाद्य-सामग्री पहुँचाकर, हवाई-गश्त द्वारा उसकी प्रगतिकी रफ़्तार बढ़ाकर तथा शत्रुकी जल, स्थल और हवाई शक्तियोंपर ज़ोरदार हमले करके आक्रमणात्मक और रक्षात्मक लड़ाइयोंमें बहुत महत्वपूर्ण सहायता पहुँचाई है। यह सहायता १९३७, १९३८ और १९३९ की लड़ाइयोंमें भी कम प्रभावपूर्ण नहीं रही है। २५ दिसम्बर, १९३९ को पातंग, च्यूतांग और कुनलुनक्वानमें जापानी मोर्चोंपर चीनी हवाई-बेड़े द्वारा किए गए बेपनाह हमलोंके ही कारण दक्षिणी क्वांगसीके दर्रोंपर फिर चीनियोंका अधिकार हो सका था। इसी प्रकार होणान-हूपेहकी लड़ाइयोंमें भी उसने जापानी सेनाको जन और सामग्रीकी काफ़ी हानि पहुँचाई। १६-१७ मई, १९४२ को चीनी हवाई-बेड़ेने चीनकी सीमासे बाहर जाकर बैंकोक, टाक, चिएँगमाई और थाइलेण्ड तथा हिन्दी-चीनके कई अन्य स्थानोंपर भी आक्रमकर जापानके सैनिक-पड़ावों तथा युद्ध-सामग्रीके केन्द्रोंको पर्याप्त हानि पहुँचाई। इसके द्वारा अबतक कुल ३३ जापानी जहाज़ डुबोए गए और १०० को नुकसान पहुँचाया गया।

चीन-सरकारने केन्द्रीय सैनिक-समितिके अधीन हवाई-मामलोंका एक राष्ट्रीय कमीशन नियुक्त किया है, जो हवाई-हमलोंसे देशकी रक्षा करनेके सम्बन्धमें आवश्यक व्यवस्था कर रहा है। इसकी शिक्षाके लिए एक विद्यालय भी खोला गया है। इसमें यान-नाशक तोपों, शत्रु-यानोंके आगमनकी आहट जाननेके सूक्ष्म यन्त्रोंका प्रयोग, आकाशमें दूरतक रोशनी फेंककर शत्रु-यानोंको देखने तथा ऐसे ही अन्य कामोंकी शिक्षा दी जाती है। यान-नाशक तोपोंने सैकड़ों जापानी बम-वर्षकोंको नष्ट किया या नुक़सान पहुँचाया और न मालूम कितनोंको अधिक ऊँचा उड़नेपर मजबूर किया है।

ध्यान रहे, यह सारी सफलता चीनको थोड़े-से यानोंसे मिली है। यदि उसके पास अधिक यान हों अधिक हवाई-युद्ध-सामग्री और अधिक कुशल उड़ाके हों, तो वह आसानीसे अधिकाधिक सफलताके साथ शत्रुको पराजित कर सकता है।

—सेमुअल चाओ

(३) नई चीनी सेनाकी शिक्षा

लड़ाइयाँ प्रायः जन, धन और हथियारोंसे लड़ी जाती हैं, किन्तु कभी-कभी वे केवल जनसे ही लड़ी जाती हैं। धन और हथियारोंके काफ़ी होनेपर भी लड़ाईका परिणाम अधिकांशतः जन-शक्तिपर ही निर्भर करता है। आधुनिक शस्त्रास्त्र और साधन-सुविधाओंके बावजूद यदि उनका उपयोग करनेके लिए सुशिक्षित सैनिक न हों, तो युद्ध-यन्त्र निर्जीव-सा रहता है। इस दृष्टिसे चीन भाग्यशाली है, क्योंकि उसके पास अपार जनशक्ति है। पिछले पाँच वर्षोंसे जापानके साथ होनेवाले इस युद्धमें उसका सबसे ज़बर्दस्त अस्त्र यही रहा है।

औसत चीनी स्वस्थ, सबल, सहज-बुद्धिवाला और दिल्का मज़बूत होता है। सारी हिदायतें वह न केवल भली-भाँति समझ ही लेता है, बल्कि उनका पालन भी बड़ी वफ़ादारीके साथ करता है। सहानुभूति और सद्व्यवहारके साथ पेश आनेवाले अपने अफ़सरके आदेशपर वह हँसते-हँसते प्राणोंको न्यौछावर कर सकता है। भयका वह नाम भी नहीं जानता। उसकी ईमानदारीमें कोई सन्देह नहीं कर सकता। दुःख-कष्टोंको वह बड़ी शान्ति और धैर्यके साथ सहन कर लेता है। यदि शिक्षा और नेतृत्व ठीक ढंगसे हो, तो वह संसारके किसी भी सिपाहीसे पीछे या कम योग्य नहीं है। इसीलिए चीनकी सैनिक व्यवस्थाका मूल मन्त्र रहा है—'लड़नेकी अपेक्षा लड़ाईकी शिक्षा कहीं अधिक आवश्यक है।' सैनिककी मानसिक शिक्षापर भी वहाँ बड़ा ज़ोर दिया जाता है। हांको-पतनके बाद नवम्बर १९३८ में हुई नानयो-सैनिक-कांफ्रेंसमें भाषण करते हुए जनरलिसिमो चांगकाई-शेकने कहा कि अनुशासन और साहससे एक आदमी भी सौके बराबर काम कर सकता है। उन्होंने

बतलाया कि चीनके पास शस्त्रास्त्रकी जो कमी है, उसकी पूर्त्ति केवल लड़नेकी सुदृढ़ता एवं सैनिकोंके मानसिक बलसे ही की जा सकती है। इसी उद्देश्यको दृष्टिगत रखकर १९२४ में जनरलिसिमोकी अध्यक्षतामें केण्टनके निकट व्हाम्पाओ सामरिक विद्यालयकी स्थापना की गई। इसमें शारीरिक, सैनिक और डा० सुनयात-सेनके सिद्धान्तों द्वारा राजनीतिक शिक्षा देनेके अलावा सैनिकोंको 'मानसिक शिक्षा' भी दी जाती है। १६ जून, १९४२ को हुए इसके १८ वें वार्षिकोत्सवपर बोलते हुए मार्शल चांगकाई-शेकने कहा कि इस विद्यालयमें सैनिकोंको स्वशासन, स्वेच्छासे कार्य करना, स्वबल, स्वाभिमान, अनुशासन तथा अपने दायित्व और व्यक्तित्वका अनुभव करना सिखाया जाता है। जीवनकी सुख-सुविधाओंका मोह छोड़कर उन्हें चीनी क्रान्तिकी सफलता एवं जापानसे चीनकी रक्षा करनेके लिए आत्म-त्याग करना सिखाया जाता है। इसका परिणाम तो सर्वविदित है ही।

इस प्रकार चीनी सैनिकोंकी शिक्षाको दो भागोंमें विभक्त किया गया है। एक शारीरिक और यान्त्रिक तथा दूसरी मानसिक। मानसिक शिक्षाका नाम शायद ही किसी देशकी सैनिक शिक्षामें सुनाई पड़े। इस शिक्षाकी मोटी-मोटी बातोंका पालन चीनके सैनिक ही नहीं सब सरकारी कर्मचारी, छात्र और कुओमिन्तांगके सदस्य भी करते हैं। इसके मुख्यांशोंका संकलन चीनके कुछ प्रधान सेनापतियों एवं अन्य उल्लेखनीय व्यक्तियोंके सुभाषित वाक्योंमें से किया गया है। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं—(१) देशभक्तिका आधार वफ़ादारी और साहस है। (२) सुसंस्कृत परिवारका आधार सन्तान-प्रेम है। (३) सद्भावनापूर्ण सम्बन्धोंका आधार सदिच्छा एवं दान (औदार्य) हैं। (४) सफल जीवनका आधार वफ़ादारी और ईमानदारी हैं। (५) संसारमें निभनेके लिए शान्ति-प्रियता आवश्यक है। (६) संयम और शिष्टता अच्छे शासनका आधार हैं। (७) सम्माननीय होनेके लिए आज्ञाकारिता आवश्यक है। (८) शारीरिक स्वास्थ्यके लिए स्वच्छ-संयत रहना ज़रूरी है। (९) परस्पर सहायता करनेकी भावना ही सुखकी कुंजी है। (११) ज्ञान ही संसारकी सेवा करनेका साधन है। (११) लगन ही सफलता प्राप्त करनेका साधन है।

सैनिकोंके लिए विशेष रूपसे जनरलिसिमो चांगकाई-शेकने दस हिदायतें लिखकर जारी करवाई हैं। वे हैं—(१) डा० सुनयात-सेनके तीन सिद्धान्तोंका पालन करना और बिना किसी विरोध या लापरवाहीके देशकी रक्षा करना। (२) बिना किसी छल या अवज्ञाके केन्द्रीय सरकार और अधिकारियोंकी आज्ञाओंका पालन करना। (३) बिना किसी उद्दण्डता या रूखेपनके जनताकी रक्षा और अपने सहयोगियोंसे प्रेम करना। (४) बिना किसी हील-हुज्जत या कायरताकी भावनाके अपना कर्त्तव्य पालन करना और वफ़ादारीके साथ हुक्म मानना। (५) बिना किसी तरहकी सुस्तीके वीर, दृढ़-निश्चयी और अनुशासन-प्रिय होना। (६) बिना किसी टालमटूल या अव्यवस्थाके सहयोग और साथीकी-सी भावना रखना। (७) बिना किसी लोभ या दुरुपयोगके दायित्व, लज्जा और सैनिक-नीतिका पालन करना। (८) बेईमानी या फ़ज़ूलखर्चीसे बचना और कष्ट-सहन, मितव्ययिता तथा सादा जीवन बिताना। (९) बिना किसी दिखावट या कृत्रिमताके स्वच्छ और शिष्टतापूर्वक रहना (१०) नीचता या धोखा देनेकी भावनासे बचना और सच्चा तथा सुकृती होना।

दूसरी तरहकी शिक्षाका सारा प्रबन्ध राष्ट्रीय सैनिक-कौन्सिल द्वारा फरवरी, १९३८ में नियुक्त हुआ सैनिक-शिक्षा-बोर्ड करता है। चीनी सेनाकी पुनर्व्यवस्था, निरीक्षण, सामरिक विद्यालयोंकी स्थापना और उनका निरीक्षण, सैनिकों और सैनिक-अफ्सरोंकी विशेष शिक्षाकी व्यवस्था, सैनिकोंके लिए पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों, पाठ्य-पुस्तकों, चार्टों तथा नक्शोंका प्रकाशन आदि सब कार्य यह बोर्ड ही करता है। इसके अध्यक्ष चीनी सेनाके उप-सेनापति जनरल पाई चुंग-सी हैं। वर्त्तमान युद्ध छिड़नेसे पहले कुल १२ सैनिक विद्यालय थे, जिनमें सैनिकों और साधारण सैनिक अफ्सरोंको फौजी शिक्षा दी जाती थी। बोर्डने इनकी संख्या बढ़ाकर २६ कर दी। इनके अलावा केन्द्रीय सैनिक महाविद्यालयकी ७ शाखाओं और एक कालेज द्वारा सैनिक अफ्सरोंको उच्च फौजी शिक्षा देनेका प्रबन्ध भी है। रसाला, युद्ध-सामग्री पहुँचाने, इंजीनियरिंग, यातायात, तोपखाना, गुरिल्ला युद्ध-नीति आदिकी शिक्षा एक ही जगह न दी जाकर विविध विद्यालयोंके रूपमें अलग-अलग दी जाने लगी है। जापान द्वारा अधिकृत प्रदेशोंके चीनियोंको गुप्त रूपसे फौजी—और विशेष कर गुरिल्ला युद्ध-

नीतिकी—शिक्षा देनेका भी प्रबन्ध किया गया है। विशिष्ट फौजी कार्यों के लिए विशेष शिक्षा देनेका भी प्रबन्ध है, जो कुछ खास-खास अनुभवी सैनिक-अफ्सरोंको ही दी जाती है।

केन्द्रीय सैनिक-विद्यालयमें मंगोलों, मुसलमानों, लोलो, मियो, याओ और सीमान्तकी अन्यान्य जातियोंको फौजी शिक्षा देनेकी विशेष रूपसे व्यवस्था की गई है। इसकी एक शाखा द्वारा विदेशोंमें रहनेवाले चीनियोंको फौजी शिक्षा देनेकी भी व्यवस्था की गई है। कक्षाकी पढ़ाई, अभ्यास और युद्ध-क्षेत्रके व्यावहारिक अनुभवका बड़ा घनिष्ट सन्बन्ध है। शिक्षकोंमें से अधिकांश युद्ध-क्षेत्रमें काम किए हुए अफ़सर ही होते हैं। दिसम्बर १९३८ से अब तक बोर्डने ६ फौजीदल-केन्द्रों, १६२ प्रधान फौजी केन्द्रों, ३५६ डिवीज़नों, १० ब्रिगेडों और कई रंगरूटोंके शिक्षा-केन्द्रोंको पुनःसंगठित किया है। अनुभवसे मालूम हुआ है कि इन केन्द्रोंमें शिक्षा पाकर लड़नेको गए चीनी सैनिकों और अफ़सरोंने विशेष कौशल दिखाया है। युद्धमें भाग लिए हुए सैनिकोंको रक्षात्मक और आक्रमणात्मक युद्धोंकी जो नए ढंगसे शिक्षा दी गई है, उसका परिणाम भी बड़ा आशाप्रद हुआ है। प्रत्येक सेनाके अपने अफ़सर, यातायातवाले, इंजीनियर, रसद पहुँचानेवाले आदि अलग-अलग हैं। प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च फौजी शिक्षक, उपशिक्षक, सहायक शिक्षक, फौजी कप्तान, ग्राम-सेनाके शिक्षकों आदिके अलावा उनका काम देखने और उसे अधिक उन्नत रूपमें चलानेकी हिदायतें देनेके लिए कई अनुभवी सैनिक अफ्सरोंको इंस्पैक्टरके रूपमें भी रखा गया है।

शस्त्रों और आधुनिक युद्ध-यन्त्रोंके प्रयोगके अलावा चीनी सेनाको गैस-आक्रमणोंका सामना करनेकी भी शिक्षा दी जाती है। इस शिक्षाका आरम्भ अभी सन् १९३६ में ही किया गया, जब कि पेलिंगमियाओमें चीनियों द्वारा खदेड़े जानेपर जापानियोंने गैसका प्रयोग किया। १९३७ में हुए हमलेके बादसे अब तक तो जापानी कोई १००० से ऊपर गैस-आक्रमण कर चुके हैं। अब चीनी भी इन आक्रमणोंका सामना करनेके अभ्यस्त हो गए हैं।

पाठ्य-पुस्तकोंके अलावा चीनी सेनाके पढ़नेके लिए विविध विषयोंकी पुस्तकों,
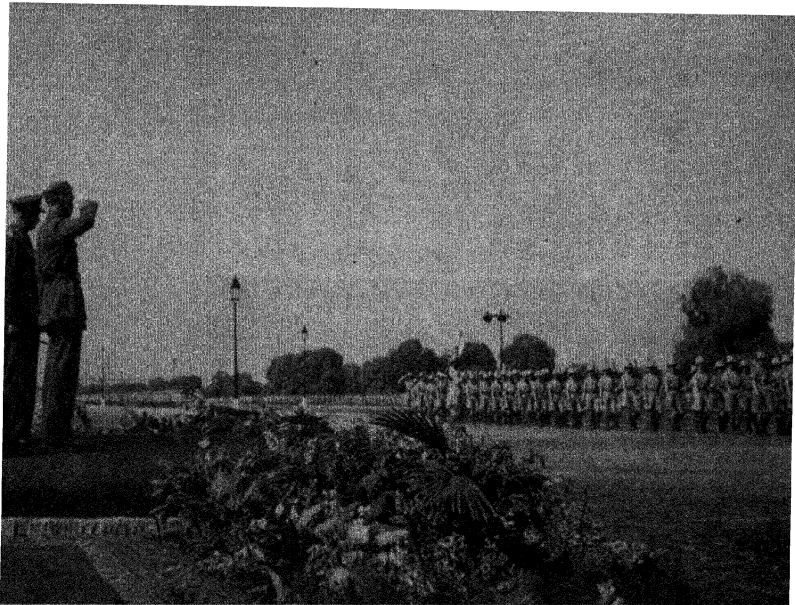
जनरलिसिमो चांगकाई-शेक गत फरवरी, १९४२ में नई दिल्लीमें अपने आगमनमें हुई फौजी क़वायदमें सलामी ले रहे हैं।
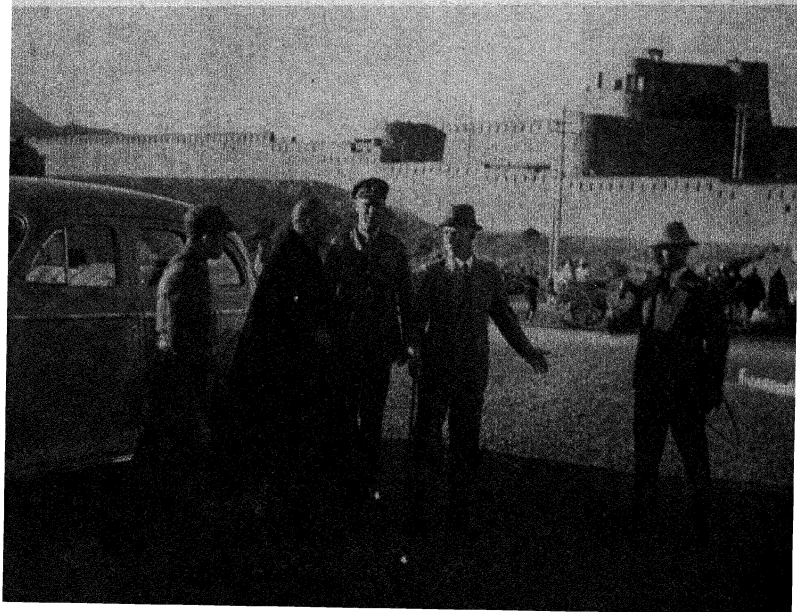
जनरलिसिमो चांग खैबरके दर्रेका परिदर्शन कर रहे हैं।

चुंकिंगमें मनाए गए सयुक्त-राष्ट्र-दिवसके अवसरपर जनरलिसिमो और
मदाम चांगकाई-शेकके साथ कूटनीतिक प्रतिनिधि।

चुंकिंगमें मनाए गए संयुक्त-राष्ट्र-दिवसके अवसरपर भारतके चीन-स्थित एजेण्ट-जनरल सर ज़फरुल्लाखाँ भाषण दे रहे हैं

पत्र-पत्रिकाओं, नक्शों, चार्टों आदिका सम्पादन और प्रकाशन करनेके लिए सैनिक-विद्यालयमें एक विशेष विभाग है। अभी तक उसकी ओरसे ६२७ प्रकाशन हो चुके हैं। इनके अलावा सैनिकोंकी शिक्षा और दैनिक जीवनसे सम्बन्धित प्राथमिक नियमोंकी पुस्तक बीस लाखसे अधिक छप चुकी है।

चीनी सेनाको आधुनिक शस्त्रास्त्रोंसे सुसज्जित करनेकी ओर भी विशेष ध्यान दिया गया है। इस दिशामें सैनिक-विशेषज्ञोंके एक दलने कई देशोंके अनुभवसे लाभ उठाया है। चीनी पल्टनका सैनिक १५, तोपखानेवाला ४, इंजीनियर १, यातायात-वाला २, सिगनेलर ५, टैंक-दलवाला २ और गैस-युद्धमें भाग लेनेवाला ४ युद्ध-यन्त्रोंका प्रयोग करता है। इन सबको मई १९४२ में चुंकिंगमें हुई वार्षिक सैनिक-शिक्षा-कॉन्फ्रेंसके अवसरपर हुई फौजी-प्रदर्शिनीमें दिखाया भी गया था।

युद्धसे पहले जहाँ चीनमें अर्द्ध-शिक्षित या साधारणतया शिक्षित २०० डिवीज़न थे, इस समय सुशिक्षित एवं सुसज्जित ३०० डिवीज़न हैं। इनके अलावा १५,०००,००० अतिरिक्त सैनिक भी हैं। नए ढंगसे दी गई शिक्षाके परिणाम-स्वरूप चीनी अधिक अच्छी तरह लड़ते हैं और पहले जहाँ उनका और जापानियोंका हताहतोंका अनुपात ३:१ था, अब वह उसकी बजाए १:१ हो गया है। इसके अतिरिक्त पहलेकी भाँति अब वे जापानियोंकी उच्च फौजी शिक्षा और श्रेष्ठ हथियारोंको देखकर आतंकित भी नहीं होते और पूरे साहस, आत्म-विश्वास और दृढ़ताके साथ उनका डटकर मुक़ाबला करते हैं।

—सेमुअल चाओ

३. अर्थनीतिक प्रगति

(१) युद्ध-कालीन औद्योगिक परिवर्त्तन

लड़ाईके इन पाँच वर्षोंने मध्य-युगीन चीनको एक आधुनिक अर्थनीतिक राष्ट्र बना दिया है। इससे पूर्व चीनमें ७४५ कोयलेकी और ३३ लोहेकी खानें थीं, जिनकी खुदाई पुराने ढर्रेपर होती थी। सेच्वानमें कुल ३३ कारखाने थे, जो कोयलेकी सहायतासे देशी लोहेके छोटे-मोटे औज़ार-हथियार बनाते थे। तेल साफ़ करने, शराब खींचने या सीमेंट बनानेका कोई कारखाना नहीं था। बड़ी-बड़ी मशीनें तो बाहरसे आती ही थीं, पर बड़े-बड़े उद्योग-धन्धे भी विदेशियोंके ही हाथोंमें थे। राष्ट्रीय सरकारने देशी उपकरण-साधनोंका उपयोग करने तथा राष्ट्रीय उद्योगोंको प्रोत्साहन देनेके लिए एक तीन-वर्षीय योजना बनाई थी, किन्तु उसपर अमल होनेसे पहले ही युद्ध छिड़ गया, जिससे उसका काम मंद पड़ गया और उसकी रूप-रेखा भी बहुत-कुछ बदल गई।

ज्यों-ज्यों युद्धकी लपटें उत्तर-पूर्वसे चीनके भीतरी भागोंमें पहुँचने लगीं, औद्योगिक पुनर्निर्माणके लिए स्थापित किए गए केन्द्र पश्चिमके कम उपजाऊ और पिछड़े हुए प्रदेशोंमें हटाने पड़े। क्यांगसी, हूणान और हूपेहके कारखाने सेच्वान, सिक्यांग, युन्नान, क्वीशो, क्वांगसी और कांसू आदिमें ले जाए गए। पर इन सब दिक़्क़तोंके बावजूद आज चीनमें १३५० वैयक्तिक कारखाने और अर्थनीतिक विभाग-द्वारा नियुक्त किए गए राष्ट्रीय उपकरण-कमीशनकी देख-रेखमें काम करनेवाले १०८ बड़े कारखाने

हैं। इस्पातको छोड़कर औद्योगिक पुनर्निर्माण तथा युद्ध चलानेके लिए आवश्यक सामग्री प्रस्तुत करनेको चीनके पास किसी खास चीज़की कमी नहीं है।

राष्ट्र-रक्षा-सम्बन्धी उद्योग

युद्धसे पहले चीनके सारे उद्योग-धन्धे विदेशियों अथवा उनके प्रभाव एवं अधीनतामें काम करनेवाले चीनियोंके हाथोंमें ही थे। 'राष्ट्रीय उद्योग' कहे जानेके लिए चीनमें बहुत थोड़े उद्योग-धन्धे थे। युद्धसे पूर्व चीनमें कुल ३८४९ रजिस्ट्रीशुदा निजी कारखाने थे, जिनमेंसे १२९०—लगभग एक-तिहाई—अकेले शंघाई नगरमें ही थे। युद्ध छिड़ते ही इनमें से अधिकांश अर्थनीतिक-विभागकी सहायता-सहयोगसे चीनके भीतरी भागोंमें चले आए। अब नए-पुराने १३५० कारखाने स्वतन्त्र चीनमें जहाँ-तहाँ बिखरे हुए हैं। इनमें से ४४३ चुंकिंगमें हैं। धातु-उद्योगके कारखानोंकी संख्या ४ से ८७, मशीनें बनानेवालोंकी ३७ से ३७६, बिजलीका सामान बनानेवालोंकी १ से ४४, रासायनिक द्रव्य बनानेवालोंकी ७८ से ३८० और कपड़ा बुननेवालोंकी १०२ से २७३ हो गई है। सीमेंट तैयार करनेके तीन कारखाने खुल चुके हैं और तीन शीघ्र ही खुलनेवाले हैं। शराब खींचनेवाले कारखानोंकी संख्या १३३ है। अकेले सेच्वानमें ही ४,०००,००० गैलन शराब बनती है। नए ढंगका कागज़ बनानेवाली मिलोंकी संख्या भी ३ से १७ हो गई है। मोटरका तेल और गेसोलिन बनानेवाले कारखानोंकी संख्या भी क्रमशः १५ और २२ है। इस समय चीनमें कोयलेकी १६२९ और लोहेकी १२२ खानें काम कर रही हैं।

औद्योगिक पुनर्निर्माणके इस सारे कामकी देख-रेख अर्थनीतिक-विभाग द्वारा १९३३ में नियुक्त राष्ट्रीय उपकरण-कमीशन करता है। युद्धसे पहले चीनमें राष्ट्र-रक्षा-सम्बन्धी उद्योगोंकी कोई खास व्यवस्था नहीं थी। कमीशनने युद्ध छिड़नेके बाद ही धातु, मशीनें और रासायनिक द्रव्य तैयार करनेवाले उद्योगोंको प्रोत्साहन देनेकी एक योजना तैयार की। इसके अन्तर्गत निजी उद्योगोंको प्रोत्साहन तो दिया जाता हैं, पर प्रधानतया तीन बातोंका ध्यान रखा जाता है—(१) कच्चा माल, मज़दूर, शक्ति और बाज़ारकी सुविधाके अनुसार उद्योगोंका विभाजन। (२) निजी

उद्योगोंपर अधिकाधिक नियन्त्रण। (३) कच्चे माल और मज़दूरीमें मितव्ययिता करनेके लिए उत्पादनका मानदण्ड उन्नतकर कमीशनने कच्चे माल और खनिज पदार्थोंकी शोध करनेके बाद १९३६ में औद्योगिक पुनर्निर्माणकी एक योजना बनाई और यांगसीके क्यांगसी, हूणान और हूपेह प्रदेशोंमें कार्यारम्भ किया। इन पाँच वर्षोंके कार्यके परिणाम-स्वरूप आज उसने ४१ कारखाने खोलने, ४३ खानोंमें खुदाईका काम कराने और २४ केन्द्रोंसे बिजली पैदा करनेमें आशातीत सफलता प्राप्त की है। इनमेंसे चीनके लोहे और इस्पातके उद्योगके आधार-स्वरूप हनेहपिंग कम्पनी विशेष उल्लेखनीय है। पहले इसका केन्द्र हूपेहमें था, जो बादमें युद्धके कारण सेच्वानमें स्थान्तरित कर ली गई।

राष्ट्रीय उपकरण-कमीशनका पहला काम था कोयले और लोहेका राष्ट्रीकरण, इस्पातके दो बड़े कारखानोंकी स्थापना, कोयलेकी दो खानोंकी खुदाई, ३ ताँबा साफ़ करनेके कारखानोंकी स्थापना और मशीनें तथा छोटे-मोटे औज़ार-हथियार तैयार करवाना। पानीसे बिजली पैदा करने, उसका प्रचार करने तथा युद्धकी आवश्यकताओंको पूरा करनेवाले रासायनिक द्रव्योंको तैयार करानेकी व्यवस्था करना। इसके अलावा चीनके भीतरी भागमें स्थानान्तरित हुए ६०० निजी कारखानोंमें से ३०० युद्धोद्योगमें लगे हैं। कमीशन और सरकारकी ओरसे राष्ट्र-रक्षा-सम्बन्धी युद्धोद्योगमें क़दम बढ़ानेवाले निजी कारखानोंको पूरा-पूरा सहयोग और प्रोत्साहन दिया जाता है।

उद्योग-धन्धे और लोगोंकी जीविका

चीनियोंकी जीविकाका एक प्रमुख आधार वस्त्र-उद्योग रहा है, जो युद्धसे पूर्व अधिकांशतः विदेशियोंके ही हाथोंमें था। चीनी इनकी प्रतियोगिता नहीं कर सकते थे और जो कुछ थोड़ा-बहुत कपड़ा वे तैयार करते थे, उसके लिए भी उन्हें रुई बाहरसे मँगानी पड़ती थी। रासायनिक द्रव्योंके उत्पादनमें तो वे बहुत ही पिछड़े हुए थे। चीनके शहरी और ग्रामीण बाज़ारोंमें सर्वत्र विदेशी मालहीका बोलबाला था। किन्तु युद्ध छिड़नेके बाद ज्यों-ज्यों चीनी बन्दरगाहोंपर शत्रुका कब्ज़ा होता गया और विदेशी मालका आयात कम और अनियमित होता गया, कपड़े और

रासायनिक द्रव्योंके उत्पादनकी ओर चीनियोंने विशेष ध्यान दिया। पहले जहाँ केवल ४०,००० तकलियाँ चलती थीं, अब चीनमें २३०,००० तकलियाँ चलती हैं, जिनसे प्रति वर्ष १००,००० गाँठ (प्रति गाँठ ५० मन) कपड़ा तैयार होता है। इनमें से सेच्वानमें १५०,००० ; शेंसीमें ५०,००० ; हूणान और युन्नानमें १०-१० हज़ार और क्वांगसीमें २००० तकलियाँ चलती हैं।

लोगोंकी जीविकाके प्रश्नको हल करने और चीनके अर्थनीतिक जीवनको अधिक विकसित एवं संगठित करनेमें 'प्रादेशिक उन्नति-संघों' (Provincial Develop-ement Corporations) ने विशेष सहायता पहुँचाई है। इनका काम है राष्ट्रीय औद्योगिक पुनर्निर्माणके कार्यको आगे बढ़ानेके लिए प्रान्तोंके उपकरणोंका भरपूर उपयोग करनेवाले उद्योगोंकी स्थापना, प्रोत्साहन और एकीकरण। अब तक निम्न १४ प्रान्तोंमें ये संघ क़ायम किए गए हैं :—

प्रान्त	स्थापन-काल	लागत (डालरमें)
क्वीशो	१९३९	१५,०००,०००
फूकोन	१९४०	३५,०००,०००
शेंसी	१९४०	२०,०००,०००
अन्हवेई	१९४१	१०,०००,०००
क्यांगसी	१९४१	३०,०००,०००
क्वानतुङ्ग	१९४१	४९,०००,०००
क्यांगसी	......	....
युन्नान	१९४१	....
सेच्वान-सिक्यांग	१९४२	७०,०००,०००
पश्चिमी युन्नान	......	४०,०००,०००
कान्सू	१९४२	२०,०००,०००
हूपेह	......	५०,०००,०००
सुइयुवान	१९४२	५,०००,०००
सिक्यांग	......	....

इन संघोंकी स्थापनासे प्रान्तोंकी जो औद्योगिक उन्नति हुई है, वह सर्वथा स्पृहणीय एवं आशातीत है। अकेले सेच्वानमें ७०० के लगभग कारखाने हैं, जिनमेंसे १०० मशीनें, ३४ यातायातके कल-पुर्ज़े, ३७ बिजली, १६ शराब, १२ कागज़, ९० कपड़ा तैयार करते हैं तथा ५४ छापाखाने हैं। १२०,०००,००० डालरकी लागतसे चीनका जो सबसे बड़ा औद्योगिक संघ खोला गया है, उसके अन्तर्गत १०-१० लाखके ५२ कारखाने हैं, जिनमें से ५० औद्योगिक केन्द्र सेच्वानकी प्रान्तीय सरकारके अधीन काम करते हैं। यह आज युद्धोद्योगका सबसे बड़ा केन्द्र बन रहा है। इसके साथ-ही-साथ औद्योगिक शोध-कार्य भी यहाँ निरन्तर होता रहा है। सिक्यांगमें युद्धसे पहले चमड़ेका कुछ काम होता था, किन्तु अब वहाँ ३० लाख डालरकी लागतसे खुले १० कारखाने काम कर रहे हैं। इनमें ऊनी कपड़ा, कागज़, चमड़ेकी चीज़ें, शराब, वनस्पति तैल, तौलनेके बाँट, रासायनिक द्रव्य आदि तैयार होते हैं। अभी हाल ही में यहाँ लोहेकी एक खान भी पाई गई है। क्वीशो उन्नत न होनेपर भी उपकरणोंकी दृष्टिसे ग़रीब प्रान्त नहीं है। इस समय यहाँ ५० आधुनिक कारखाने हैं, जिनमें कपड़ा, कागज़, मशीनें व औज़ार, रासायनिक द्रव्य, शराब, चीनी, सीमेंट और मोटर तथा बिजलीका सामान तैयार होता है। युन्नान अपेक्षाकृत उन्नत है। युद्धसे पहले यहाँ १० कारखाने थे। बादमें खानोंकी खुदाई तथा कई कारखानोंके खुलनेसे काम और भी बढ़ गया। इसी प्रकार क्वान्तुंगमें भी १० सरकारी और २६ निजी कारखाने हैं। हूणानमें ३७ कपड़े और २५ कागज़की मिलोंके अतिरिक्त धातुका सामान, शराब, औज़ार आदि बनानेके कई छोटे-बड़े कारखाने थे, जिनपर चांगशाकी लड़ाइयोंसे बहुत बुरा असर पड़ा है। कपड़ा, कागज़, रासायनिक द्रव्य और चमड़ेका सामान तैयार करनेवाला हूपेह प्रान्त तो शत्रुके अधिकारमें चला ही गया। क्यांगसी प्रदेश औद्योगिक क्षेत्रमें स्वावलम्बी है, इसीलिए उसके कारखानोंका नाम 'मिन-सेन' (लोगोंकी जीविका) रखा गया है। यहाँके लगभग ४२ कारखानोंकी वार्षिक आय ८०,०००,००० डालर है। चेक्यांगमें १०० कारखाने हैं। फुकीनके लगभग सभी कारखाने जनताकी जीविकाका सवाल हल करनेको ही खोले गए हैं।

उत्तर-पश्चिममें भी औद्योगिक उन्नति विशेष कम नहीं हुई है। शेंसीमें इस समय १०० कारख़ाने हैं, जो प्रतिमास ५,००० गाँठ कपड़ा, ४००,००० टन मशीनें और औज़ार तथा ५००० चमड़े (सफ़ाई एवं रंगाई) तैयार करते हैं। इनके अलावा शेंसीकी प्रान्तीय सरकारने मशीनोंकी एक दुकान तथा कपड़ा, कागज़, शराब, तैयार करने तथा आटा पीसने और तेज़ाब निकालनेके केन्द्र भी स्थापित किए हैं। इनमें काम करनेवालोंकी शिक्षाका भी उसने विशेष प्रबन्ध किया है। कान्सूमें भी कपड़ा बुनने तथा सीमेंट, मशीन, औज़ार और रासायनिक द्रव्य तैयार करनेके ३० कारख़ाने हैं। चिंगाई (कोकोनोर) में युद्धसे पहले माचिस बनानेका एक साधारण-साथे कारख़ाना था, जब कि आज वहाँ ऊन, चमड़ा और रासायनिक द्रव्योंका काम करनेवाले अनेक कारख़ाने हैं।

गुरिल्ला उद्योग-धन्धे

चीनके युद्ध-कालीन उद्योग-धन्धोंमें गुरिल्ला-उद्योगोंका विशेष महत्वपूर्ण स्थान है। उसके जिन भागोंपर शत्रुका कब्ज़ा हो चुका है, वहाँके उद्योग-धन्धे बड़े औद्योगिक केन्द्रों एवं बाज़ारोंसे विछिन्न हो जानेपर भी सर्वथा मर नहीं गए। स्थानीय आवश्यकताओंको पूरा करनेके लिए ग्रामीण क्षेत्रोंके उद्योग-धन्धे न केवल क़ायम ही रहे, बल्कि उन्नत और व्यापक भी हो गए। जापान-अधिकृत चीनमें एक स्थानसे उठाकर दूसरे स्थानमें ले जाए जा सकनेवाले छोटे-छोटे कारखानों (Portable workshops) ने इस दिशामें विशेष उल्लेखनीय कार्य किया है। चीन-सरकार द्वारा स्थापित सहयोग-समितियोंने घरेलू उद्योग-धन्धोंको जीवित रखने तथा पुनर्गठित करनेमें विशेष सहायता पहुँचाई है।

उदाहरणके लिए क्यांगसूको लीजिए। प्रान्तीय सरकारने यहाँ रेशमके कीड़े पालने, मिट्टीके बर्तन बनाने तथा अन्य प्रकारके कुटीर-शिल्पको काफ़ी प्रोत्साहन दिया है। इसी प्रकार पूर्वी हूपेहमें कागज़, मोमबत्तियाँ, साबुन, आटा-पिसाई, रँगाई आदिके कामको भी सरकारी प्रोत्साहनसे काफ़ी सहायता मिली है। जनताके दैनिक व्यवहारकी चीज़ें बनानेके लिए अन्हवेई प्रान्तकी सरकारने १० बड़े और ३ कपड़ेके

कारखाने खोले हैं। सरकारने अपनी ओरसे नए ढंगके चर्खे बनवा कर जनतामें वितरित किए हैं। तापीहके पहाड़ी प्रदेशमें तम्बाकू, चमड़ेका सामान, बिजलीकी बैटरियाँ, कागज़, साबुन, माचिस, वनस्पति तैल, चाय, नापनेके माप और तौलनेके बाँट, अचार-मुरब्बे तथा शराब आदि दैनिक आवश्यकताकी चीज़ें बनाई जाती हैं। पश्चिमी चेक्यांगमें रेशम, साबुन, कागज़ और औज़ार आदि बनते हैं। जापान द्वारा अधिकृत क्षेत्रोंसे आए हुए लोगोंको काम देनेके लिए सरकारने इस प्रान्तमें अनेक नए उद्योग-धन्धे स्थापित किए हैं।

शान्तुग प्रान्तने गुरिल्ला-उद्योगोंको प्रोत्साहन देनेके लिए एक योजना बनाई है। ५६ ज़िलोंके इस प्रान्तको १७ क्षेत्रोंमें बाँटा गया है। ऊन-उद्योगका पुनर्गठन किया गया है और कारीगरोंकी शिक्षाकी भी व्यवस्था की गई है। ऐसे कारखाने खोले गए हैं, जिनमें किसान अपने खाली समयके ६ महीने काम कर सकें। इस अर्सेमें उनके द्वारा १,०००,००० ऊनी कपड़े, ४०,००० गाँठें ऊनी कटपीस और ४०,००० कम्बल तथा अन्य ऊनी चीज़ें तैयार होती हैं। कागज़, रँगाई, रासायनिक द्रव्य आदि भी यहाँ बनने लगे हैं। इस प्रकार यह प्रान्त गुरिल्ला उद्योग-धन्धोंमें स्वावलम्बी है। इसके निवासी ६ मास तक कारखानोंमें काम कर जीविकोपार्जन करते हैं और शेष ६ महीने शत्रुके विरुद्ध गुरिल्ला-युद्ध चलाते हैं।

हूणान तो एक युद्ध-प्रान्त ही है। इसमें दैनिक आवश्यकता की चीज़ोंके अलावा साधारण औज़ार और लड़ाईके छोटे-मोटे अस्त्र तैयार होते हैं। चेंगचोकी कपड़ेकी मिलोंको भीतरी हिस्सोंमें स्थानान्तरित कर लिया गया है। युद्धके बादसे कपड़ा बनानेवाली ५० नई मिलें खुल गई हैं। शेंसी और सुइयुवान प्रान्तोंमें भी कुटीर-शिल्पका पुनर्गठन किया गया है। सहस्रोंकी संख्यामें कुशल कारीगर आज प्रत्येक ग्राममें मौजूद हैं, जिनके द्वारा ग्राम-शिल्पको विशेष उत्तेजन मिला है। यह आशाकी जाती है कि इसके परिणाम-स्वरूप चीनके ग्रामीण अधिक समृद्ध और स्वावलम्बी होंगे और युद्धके बाद चीनके व्यापक औद्योगीकरणमें विशेष सहायक सिद्ध होंगे।

अन्य औद्योगिक परिवर्त्तन

युद्ध-कालीन चीनकी एक प्रमुख समस्या रही है आक्रान्त अथवा अधिकृत क्षेत्रोंसे भीतरी भागमें पहुँचनेवाले लोगोंकी जीविकाके प्रश्नको हल करना। इस दृष्टिसे सरकारने जो औद्योगिक परिवर्त्तन एवं पुनर्व्यवस्थाकी है, उसमें उद्योगोंको प्रोत्साहन देने एवं पुनर्गठित करनेको खोली गई सहयोग-समितियाँ, सरकारी उद्योगोंकी स्थापना, शरणार्थियोंके लिए नए कारखाने खोलना, कारीगरोंको शिक्षित करना तथा औद्योगिक उन्नतिके लिए शोध-कार्य करना आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

युद्धसे पहले चीनमें सहयोग-समितियोंका नाम तक भी नहीं था। १९३८ में पहले-पहल औद्योगिक सहयोग-समितियोंकी स्थापना की गई। इस समय इनकी संख्या २००० और सदस्य-संख्या ३०,००० है। उद्योगोंको प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूपसे प्रोत्साहन देनेके अलावा इनका काम लोगोंमें औद्योगिक शिक्षा, सहयोग-भावना और अपने फालतू समयका सदुपयोग करनेकी प्रवृत्ति पैदा करना भी है। इसके द्वारा घरेलू उद्योग-धन्धोंके रूपमें स्थानीय स्वावलम्बनकी भावनाको विशेष प्रश्रय मिला है। इनमें से जो निर्यातका काम करती थीं, उन्होंने अपने कार्यको व्यापक एवं उन्नत किया है और जो लोगोंकी जीविकाका प्रश्न हल करनेमें लगी थीं, उन्होंने अपने आपको अधिक सुदृढ़ और स्थायी बनाया है। इनके द्वारा सरकार अपने नमक, तम्बाकू, चीनी, माचिस, चाय और शराब आदि तैयार करनेके एकाधिकारकी व्यवस्था भी सुचारु रूपसे कर सकी है। राष्ट्रीय सहायता-कमीशनने शरणार्थियोंके लिए जगह-जगह जो कारखाने खोले हैं, उनकी देखरेख भी इन्हींके द्वारा होती है।

पर औद्योगिक विस्तारके साथ ही साथ काम सीखे हुए कारीगरोंकी माँग भी बढ़ने लगी, जिसे पूरा करनेके लिए सरकारने कई कालेज और स्कूल खोले। चीनके १२९ विश्वविद्यालयोंमें औद्योगिक तथा वैज्ञानिक शिक्षाके ७२५ केन्द्र हैं, जिनमें से ३८ रसायन-शास्त्र और ३१ इंजीनियरिंगके हैं। उत्पादनका मापदण्ड ऊँचा उठाने, उसका परिमाण बढ़ाने तथा कच्चे मालके उपयोगकी विधियोंको कम खर्चीला और वैज्ञानिक बनानेके लिए गत ११ वर्षोंसे राष्ट्रीय औद्योगिक शोध-विभाग प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। चीनके उपकरणोंका अधिकाधिक सदुपयोग करनेकी नई-नई विधियाँ

खोज निकालनेके लिए इस विभागके अधीन १७ प्रयोगशालाएँ, १० प्रयोगात्मक कारखाने और ४ विस्तार-केन्द्र तत्परतासे काम कर रहे हैं। ऊन, अनाजके डंठलों तथा अन्य रेशेवाले पौधोंसे कृत्रिम उपायों द्वारा रबड़ बनानेके उद्योग तो काफ़ी चल पड़े हैं। १९४१ तक इस विभागने लगभग ३००० खनिज एवं रासायनिक पदार्थोंकी शोध की है। इस वर्ष ५०० अन्य पदार्थोंकी शोध होनी है। शराब खींचनेके उपायों एवं साधनोंके सम्बन्धमें हुई खोजके परिणाम-स्वरूप अब चीनमें जो शराब बनती है, वह पहले फारमोसा और जर्मनीसे आनेवाली शराबोंसे कहीं अच्छी होती है। १४ रेशेवाले पौधोंकी शोधसे कागज़के उद्योगमें विशेष उन्नति हुई है। चीनी, रुई, ऊन, शराब और चमड़ा साफ़ करने तथा रँगनेकी मशीनें, बिजली तथा तेलसे चलनेवाली मोटरें, आटेकी चक्कियाँ, नमक उबालनेके यन्त्र, स्टीम-इंजन तथा औज़ार आदि इसी विभागकी देख-रेखमें बनते हैं। विस्तार-केन्द्र विभाग द्वारा प्रस्तुत यन्त्रोंका प्रचार करते हैं। ल्यांगशान (पूर्वी सेच्वान) के कागज़ बनानेवाले इन्हीं यन्त्रोंकी सहायतासे मोटे कागज़की जगह अब लिखनेका महीन-चिकना कागज़ बनाने लगे हैं। नेक्यांग (केन्द्रीय सेच्वान) में इसी विभागकी सहायता और यन्त्रों द्वारा अधिक चीनी तैयार होने लगी है। होच्वानमें नए कोल्हूसे अधिक तेल निकाला जाने लगा है। नानच्वानमें अधिक सुन्दर और मज़बूत ईंटें तैयार होने लगी हैं।

युद्धके बादका उद्योगीकरण

युद्धके बाद चीनका जो उद्योगीकरण होगा, उसकी रूप-रेखा यद्यपि सर्वथा नई और भिन्न होगी, फिर भी इस बातसे इन्कार नहीं किया जा सकता कि उसका आधार मौजूदा उद्योगीकरण ही रहेगा। कुछ उद्योग फिर समुद्र-तटवाले प्रदेशोंमें चले आयँगे और कुछ नए सिरेसे शुरू होंगे। चीनी अर्थनीतिक-विभागके मन्त्री डा० वोंगवेन-हाओका कथन है कि युद्धके बाद चीनके औद्योगिक पुनर्निर्माणके लिए उपकरणों और लोगोंकी क्षमताके उपयुक्त एक दश-वर्षीय योजना बनाई जायगी। आपका कथन है कि इस दौरानमें चीनको निम्न-लिखित मूल्यकी चीज़ें तैयार करनेकी क्षमता प्राप्त कर लेनी चाहिए :—

उद्योग या चीज़ें	परिमाण	मूल्य (लाख डालरोंमें)
इस्पात	१४,०००,००० टन	१९५,०००
कोयला	५००,०००,००० „	१२५,०००
सोना	१२,०००,००० औंस	७५,०००
सीमेंट	८५,०००,००० बोरे	४५,०००
मशीनें	....	१००,०००
इस्पातकी चादरें	५,०००,००० टन	७५,०००
सूती धागा	२९,५०००,००० गाँठें	५९०,०००
रेल्वे-लाइन	४५,००० किलोमीटर	(नई लाइनें)
रेलके डिब्बे	३,३६०,००० टन	....
स्टीम-इंजन	२,४०००	....
स्टीमर (जहाज़)	३,०००,००० टन	... ...

राष्ट्रीय उपकरण-कमीशनने, जिसके कि डा० वोंग अध्यक्ष हैं, चीनको स्वावलम्बी बनानेके लिए युद्धके बादकी औद्योगिक पुनर्निर्माणकी पंच-वर्षीय योजनाकी रूप-रेखा तैयार करनेका काम भी आरम्भ कर दिया है। इसका मुख्य उद्देश्य उद्योगीकरण द्वारा चीन-निवासियोंकी रहन-सहनको उन्नत करना तथा उसकी रक्षाके साधनोंको सुदृढ़ करना है। इसके द्वारा चीनी लोहे और इस्पातकी चीज़ोंके उद्योगको उन्नत किया जायगा, जिससे वह अपनी आवश्यकतानुसार मोटरें, इंजन, शक्ति पैदा करनेवाली मोटरें, जहाज़, वायुयान, सूत कातने और कपड़ा बुननेके यन्त्र, रासायनिक द्रव्य तथा रेडियो आदि अपने यहाँ ही तैयार कर सके। साथ ही लोहा, कोयला, पारा, तेल, एल्यूमीनियम, टिन, सुरमा (antimony) और तुंगस्त (tungsten) आदिकी उत्पत्तिके साधनोंको सस्ता और सुगम बनानेका भी प्रयत्न किया जायगा। इन सब कामोंके लिए ३०,००० इंजीनियरों, ८००,००० सुदक्ष कारीगरोंको शिक्षित भी किया जायगा। इस प्रकार चीन केवल कच्चेमाल और सस्ते मज़दूरोंका ही केन्द्र न रहकर एक आधुनिक उद्योगी राष्ट्र बन जायगा।

—चू फू-सुंग

(२) चीनकी खनिज सम्पत्ति

सुदीर्घ कालसे चीन अपनी खनिज सम्पत्तिका उपयोग करता आया है, पर अभी तक उसने जितनी अधिक और वैविध्यपूर्ण यह सम्पत्ति है, उसका पूरा-पूरा उपयोग कभी भी नहीं किया। अन्य देशोंके मुक़ाबलेमें चीनमें खनिज पदार्थोंकी वैज्ञानिक ढंगसे होनेवाली खुदाई अभी अपनी शैशवावस्थामें ही है। इतना होनेपर भी आज तुंगस्टन और सुरमेकी उत्पत्तिमें उसका स्थान संसारमें सर्वप्रथम है। संसारके पर्याप्त मात्रामें कोयला पैदा करनेवाले देशोंमें भी उसकी गिनती है। उसकी खानोंमें अनुमानतः २५०० करोड़ टन कोयला है, जो उसके वर्त्तमान खर्चको देखते हुए १०,००० वर्षोंके लिए काफ़ी होगा। उसके लोहेका अनुमान १० करोड़ टन है। इसके अलावा शीशा, ताँबा, सोना और मांगल (manganese) भी उसके यहाँ पर्याप्त मात्रामें पाए जाते हैं। उत्तर-पश्चिममें तथा प्राकृतिक गैसके सोतोंका भी पता लगा है। यद्यपि चीनके समुद्र-तटीय और उत्तर-पूर्वी प्रदेशोंपर जापानका अधिकार हो जानेसे उसकी खनिज-सम्पत्तिका बहुत-सा भाग शत्रुके कब्ज़ेमें चला गया है, फिर भी युद्ध-संचालन और औद्योगिक पुनर्निर्माणके लिए अभी भी उसके पास पर्याप्त खनिज पदार्थ हैं।

सन् १९२७ में जब नानकिंगमें वर्त्तमान राष्ट्रीय सरकारकी स्थापना हुई, तो उसने अन्य अनेक कार्योंके साथ ही देशकी भूगर्भ-सम्बन्धी सर्वे भी करवाई। खनिज पदार्थोंकी खोज, खुदाई और रक्षाके लिए १९३० में 'खदान-क़ानून' बनाया गया।

इसके अनुसार यह घोषित किया गया कि देशकी सब खानोंपर सरकारका एकाधिकार है, यद्यपि उनकी खुदाईमें सरकार खानगी कम्पनियोंका भी सहयोग लेगी। जो आदमी किसी खानकी खोज निकालेगा उसे २० वर्षोंके लिए नाम-मात्र शुल्कपर उसका रियायती ठेका दे दिया जाता है। इसके बाद वह खान सरकारकी अधीनतामें कार्य करने लगती है। यह रियायती शुल्क प्रथम ५ वर्षोंतक २ सेंट प्रति १०० वर्गमीटर और बादमें ५ सेंट प्रति १०० मीटर होता है। इसी रियायतका फल है कि १९२७ में जो ७८० ठेके थे, वे १९३० में ८२७ हुए, १९३१ में ९७१, १९३३ में १३८४, १९३५ में १७१४ और १९३७ में २०१९ हो गए।

राष्ट्रीय भूगर्भ-सर्वे-समितिने अबतक कोयला, तेल, लोहा, ताँबा, पेट्रोलियम, शीशा और निकल आदिपर विशेष ध्यान दिया है। हूणान, क्वीशो, शेंसी, कान्सू, सिकेंग, सेच्वान, युन्नान, फूकीन, होणान आदिमें हुए सर्वे-कार्यके फल-स्वरूप सेच्वानमें कोयले, लोहे, पेट्रोलियम और ताँबेकी ; हूपेहमें कोयले और लोहेकी ; हूणानमें टिन, लोहे, कोयले, शीशे, जस्ते, सुरमे, तुंगस्त और गन्धककी ; क्वीशोमें कोयलेकी ; युन्नानमें टिन, ताँबे और कोयलेकी ; क्वांगसीमें टिन, तुंगस्त और सोनेकी ; क्वांगसीमें तुंगस्त, सुरमे और कोयलेकी तथा अन्हवईमें कोयलेकी नई खानोंका पता लगा है। तुंगक्वान, शेंसी, मिंसहीन और कान्सूमें कोयले तथा वेइयुन्नान, हुआन-ग्युआन और चिंगाईमें सोनेकी खानोंके पाए जानेकी आशासे खुदाई और जाँच-पड़ताल हो रही है। इस जाँचके परिणाम-स्वरूप कान्सूमें तेल, कोयले और लोहे ; युंगसीन, जियांगयुंग और मितूमें कोयले ; युन्नानके चेंगकुंग और कुनमिंग स्थानोंमें एल्यूमीनियम ; सुइचेंगमें लोहे ; स्यूवेनमें कोयले और एल्यूमीनियम ; क्वीनिंग (क्वीशो) में कोयले और शीशे ; पश्चिमी हूपेहमें लोहे और गन्धक तथा क्वांगसीमें खड़िया मिट्टी (Gypsum) की नई खानोंका पता लगाया गया है। कई धातुओंको साफ़ करने तथा रंग आदिमें काम आनेवाले खनिज द्रव्योंका भी पता चला है। एल्यूमीनियमकी सफ़ाई, मांगलकी ईंटें बनाने, ताँबेको अधिक साफ़ करने तथा कोयले और प्लाटिनमकी नई खानोंके सम्बन्धमें शोध आदिके कार्य भी इसी समितिकी देख-रेखमें हो रहे हैं।

नई खानोंकी खुदवाई

राष्ट्रीय सरकारकी स्थापनाके बादसे खानोंकी खुदाईके ठेकोंमें जो असाधारण वृद्धि हुई है, उससे मालूम होता है कि सरकारने चीनकी अज्ञात खनिज सम्पत्तिकी खोज और ज्ञात सम्पत्तिकी खुदवाईकी ओर कितना ध्यान दिया है। १९३८ से १९४१ तक कुल १३१ खानोंकी खुदवाई सरकारी तौरपर और १४३२ की खानगी ठेकेदारों द्वारा हुई है। सरकारकी ओरसे जिन् खानोंकी खुदवाई हो रही है, उनमें से ५८ कोयलेकी, ६० लोहेकी, ८ ताँबेकी, ११६ तुंगस्तकी और १० पेट्रोलियमकी हैं। ये खानें सेच्वान, हूणान, क्वांगतुंग, युन्नान, क्वीशो, सिकेंग, क्यांगसी, होणान, फुकीन और कान्सू प्रदेशोंमें हैं। जिन १४३२ खानोंकी खुदाई खानगी ठेकेदारों द्वारा होती है, उनमें से अधिकांश कोयले, लोहे, टिन, सोने, तुंगस्त और सुरमेकी हैं और शेष शीशे, मांगल, पारे, गन्धक, खड़िया-मिट्टी तथा चूनेके पत्थरकी हैं। इनके अलावा नदियों, पहाड़ों तथा जंगलों आदिमें ५३० सोनेकी खानोंकी खुदाईके रियायती ठेके सरकारने पृथक् रूपसे दिए हैं। प्रान्तवार खानोंका व्यौरा इस प्रकार है :—

प्रान्त	खानकी ठेकोंपर	सरकारके अधीन	कुल क्षेत्रफल (कुङ्गमोंमें*)
सेच्वान	१३८५७९३.४२	६३२४८५.५४	७७१०५५८९६
क्वांगसी	६७०८५८.३६	....	६७०८५.३६
हूणान	११०९८१९.२९	२२११४१९.५०	३३१११३८७९
क्वांगतुङ्ग	८३२३७७.५६	४५३९८०८१	१२८६३५८.३७
युन्नान	२६५७६५.९३	९३३६३९.६३	११९४०५.५६
क्वीशो	२८६३५१.४८	१४०२३६.०७	४२६५८८.१५
क्यांगसी	३४९२३९.९९	४५८५३०.४१	८०७७७०.४०
शेंसी	५७३३२८.४६	....	५७३३२८.४६
होणान	७४,८८८.८६	६२०,००९ ४६	६९४३९८.३२
सिकेंग	८५०१.८५	६५२२९.१८	७३७३१.०३
अन्हवेई	११२२२.६३	....	११२२२.६३

* १ कुङ्गमो=१०० वर्गमीटर।

कान्सू	१४३६१.७९	५१०५२२.२७	५२४८८४.०६
हूपेह	३०१३८.८७	....	३०१३.८४
फुकीन	११७२.८४	३४८७.००	४६५९.८४
चेक्यांग	३८०.५९	....	३८०१.५९
निंगसिया	८०७५.७५	....	८०७५.७५
योग	५,६२५,६३८.६७	१०,७२१,८८०.४७	१७,३४७,५१९.१४

(चीनी अर्थनीतिक-विभागके खनिज-महकमे द्वारा संकलित)

कोयलेकी उत्पत्तिमें वृद्धि

अर्थनीतिक विभागकी ओरसे हुई खोजके फल-स्वरूप क्यांगसी, हूणान, युन्नान, क्वीशो, क्वांगसी और सेच्वानमें अनेक बड़ी-बड़ी कोयलेकी खानोंका पता लगा है। ठीक ढंगसे इनकी खुदाई आरम्भ होनेपर इनमें से प्रति वर्ष ५००,००० टन कोयला निकलने लगेगा। इनमें से कुछमें खुदाई आरम्भ भी हो गई है। चूँकि कोयला उद्योग-धन्धों और सर्वसाधारणके दैनिक उपयोगकी चीज़ है, सरकार सेच्वान, शेंसी, कान्सू, युन्नान और क्वांगसीमें नई खानोंकी खुदाई शीघ्र आरम्भ करानेका विचार कर रही है। इनमें से कुछका काम केन्द्रीय सरकार अपने हाथमें लगी और कुछ प्रान्तीय सरकारोंके सुपुर्द करेगा।

सेच्वान-सिकैंग क्षेत्रमें तियेनफूकी खानमें कोयलेकी उत्पत्ति ७०० टन प्रतिदिन बढ़ गई है। ह्वीयुआनकी खानका काम शुरू हो गया है और कियांगकी खानसे ३०० टन प्रतिदिन अधिक कोयल पैदा होने लगा है। यातायातकी कठिनाईके कारण अन्य खानोंकी उन्नति अभी पर्याप्त नहीं हो पाई है, यद्यपि कुछ ग़ैरसरकारी और अर्द्ध-सरकारी कम्पनियाँ इस दिशामें काफ़ी सचेष्ट हैं। युन्नान-क्वीशो, हूणान-क्यांगसी तथा शेंसी-कान्सू-होणान क्षेत्रोंमें भी कोयलेकी उत्पत्तिमें काफ़ी वृद्धि हुई है। खनिज विभागकी रिपोर्टके अनुसार इस समय चीनमें प्रतिवर्ष ६,०००,००० टन कोयला पैदा होता है।

लोहे और इस्पातकी उन्नति

इसी प्रकार लोहेकी उत्पत्तिमें भी वृद्धि हुई है। १९४० में जहाँ चीनमें कुल ३००,००० टन लोहा प्रति वर्ष पैदा होता था, अब १४,६८८,५९० टन लोहा और इस्पात होता है। कच्चा लोहा उत्तर-पश्चिममें १००, २००, टन होता है, जिसमें से ३४,००० टन अकेले सेच्वानमें और शेष शेंसी, युन्नान और हूणानमें। नई भट्ठियोंसे तैयार किया जानेवाला लोहा १५,००० टन था। १९४१ में सरकारने १००,०००, ००० डालरकी लागतके लोहा साफ़ करनेके नए कारखाने खोले, जिनके परिणाम-स्वरूप लोहेकी उत्पत्ति बहुत बढ़ गई। इस समय चीनमें लोहा पिघलानेकी २० ऐसी भट्ठियाँ हैं, जो प्रतिवर्ष ४,२१० टन कच्चा लोहा पिघला कर साफ़ करती हैं। भीतरी भागोंमें १२ नई भट्ठियाँ खोली गईं हैं, जिनसे लोहेमें चीनके इस वर्ष स्वावलम्बी हो जानेकी आशा है।

२० जनवरी, १९४० को सरकारने लोहे और इस्पातके राष्ट्रीकरणकी घोषणा की और १२ फरवरीको लौह-इस्पात-नियन्त्रण-समिति क़ायम की गई, जिसका उद्देश्य इन दोनों धातुओंमें चीनको स्वावलम्बी बनाना है। चूँकि इन दोनों धातुओंकी जितनी आवश्यकता है, उसे चीन अभी पूरा नहीं कर सकता, इनके आयातके लिए कम्पनियोंको कर और यातायात-सम्बन्धी बहुत-सी सुविधाएँ दी गई हैं। इनके दुरुपयोगको रोकनेके लिए इनकी दरें भी सरकारने तय कर दी हैं और इस बातकी ओर पूरा-पूरा ध्यान दिया जाता है कि कोई इनका दुरुपयोग न करे अथवा इन्हें गुप्त रूपसे जमा कर नाजायज़ फ़ायदा न उठाय। १९३७ से १९४० तक देशी लोहेकी पैदावार कोई तिगुनी हो गई, अतः सरकारने उसकी दर ११०० डालर प्रति टनकी बजाए २२०० डालर कर दी। उसकी उत्पत्ति और वितरणके लिए सरकारने एक विशेष समिति नियुक्त की। इस समय चीनमें पैदा होनेवाले लोहेका तीन-चौथाई हिस्सा फौजी कामोंमें प्रयुक्त होता है और शेष चौथाई भाग औद्योगिक कामोंमें। लोहेको पिघलाने और साफ़ करनेके अनेक वैज्ञानिक यन्त्र काममें लाए जाने लगे हैं।

इस्पातकी पैदावार भी खासी बढ़ी है। उसके लिए नई भट्ठियाँ (Bessomer Converters) खोली गई हैं। लोहे और इस्पातकी उन्नतिके लिए खुलनेवाली
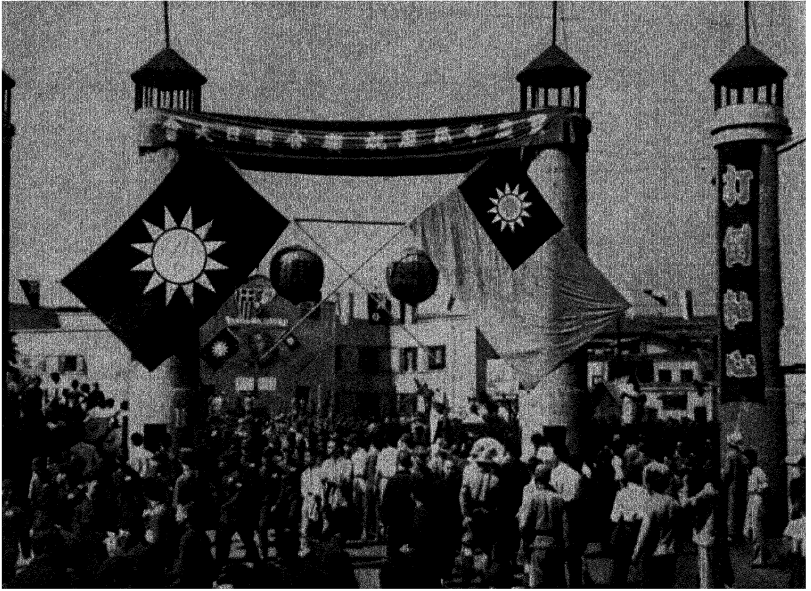
चुंकिगमें सयुक्त-राष्ट्र-दिवसका उत्सव ।

नई दिल्लीमें मनाए गए संयुक्त-राष्ट्र-दिवसमें भाग लेनेवाली एक चीनी टुकड़ी ।

चीनी उड़ाकोंको जापानपर आक्रमण करने जानेसे पूर्व कुछ आखिरी हिदायतें दी जा रही हैं ।
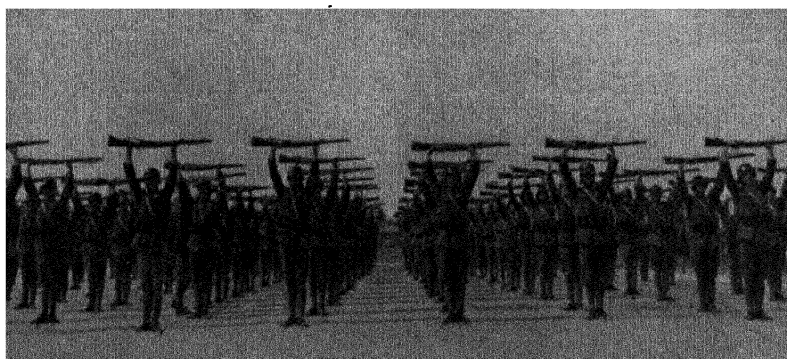
केन्द्रीय सामरिक विद्यालयके छात्र ।

खानगी कम्पनियोंको सरकारने चारों सरकारी बैंकोंके संयुक्त-बोर्डकी मार्फत ५,६७०,००० डालर कर्ज़ दिया है। अब लोहे और इस्पातकी कुल पैदावार १४,६८८,५९० टन है, जिसके क्रय, विक्रय तथा यातायातके लिए सरकारकी ओरसे रियायती लाइसेन्स दिए गए हैं।

अन्य खनिज पदार्थ

चीनमें पैदा होनेवाले खनिज तेलकी मात्रा विशेष नहीं है। सबसे महत्वपूर्ण तेल-केन्द्र शेंसीके उत्तरमें है और सबसे अधिक तेल फूशूनके लाओलिंग कारखानेमें साफ़ किया जाता है। फूशूनमें पहले ६५०,००० गैलन तेल तैयार होता था; किन्तु अब यह शत्रुके कब्ज़ेमें चला गया है। दूसरा बड़ा तेल-क्षेत्र सेच्वान है। कान्सूके यूमेन और तुंग हुआंग ज़िलों, सिक्यांगके उसमयी, सुइलाई, उसू, ताचेंग ज़िलों तथा क्वीशोके अनेक स्थानोंमें तेलके सोते मिले हैं। स्टैण्डर्ड तेल कम्पनीके अनुमानसे शेंसी और सेच्वानमें १,३७५,०००,००० ढोल तथा फूशूनमें २,१०९,००० ००० ढोल तेल है। इस हिसाबसे चीनका स्थान संसारके तेल-उत्पादक राष्ट्रोंमें छठा है। १९४१ में कान्सूके यूमेन तेल-क्षेत्रमें हुई खोज और खुदाईके फल-स्वरूप वहाँ ३,६३०,००० गैलन कच्चातेल निकलने लगा है, जिसमें से बहुत-सा गैसोलिन बनानेके काम आता है। पाहसीन और सेच्वानमें गैसके सोते भी मिले हैं। इसे एकत्र करके मोटरें चलानेके काममें लाया जा रहा है।

दूसरा उल्लेखनीय खनिज पदार्थ ताँबा है, जो शताब्दियोंसे सिक्कोंके काममें लाया जाता है। इसके अलावा यह और भी अनेक कामोंमें लाया जाता रहा है। चूँकि इसकी खुदाई कई शताब्दियोंसे हो रही है, दक्षिण-पश्चिमी भागोंको छोड़कर अब चीनमें ताँबेकी इफ़रात नहीं है। चीनमें प्रतिवर्ष ६,००० टन ताँबा काममें लाया जाता है, जिसमें से अधिकांश बाहरसे आता है। युन्नान, सेच्वान और सिकेंगमें ताँबेकी पैदावार बढ़ानेके लिए सरकारने काफ़ी प्रयत्न किए हैं। इस दिशामें काम करनेवाली खानगी कम्पनियोंको सरकारकी ओरसे सुविधा-सहायता दी जाती है। सरकारने इसकी दर तय कर दी है और इसके फौजी तथा औद्योगिक उपयोगपर कड़ा नियन्त्रण है। सबसे पहले इसके प्रयोगमें शस्त्रागारों, टकसालों और आवश्यक

उद्योगोंको तरजीह दी जाती है और बादमें अन्य साधारण उद्योगोंका नम्बर आता है। इस नियन्त्रणके फल-स्वरूप सरकारने नवम्बर १९३८ से जून १९४१ तक १,५४७ टन ताँबा एकत्र किया और ११३ टन अपने कारखानोंमें तैयार किया। इसमें से ८६९ टन शस्त्रागारोंको, १७३ टन केन्द्रीय टकसालको और ११२ टन विविध कारखानोंको बेचा गया। चुंकिंग और युन्नानमें बिजलीसे ताँबा साफ़ करनेके जो कारख़ाने हैं, वे अब २०० टन तांबा प्रतिवर्ष साफ़ करते हैं। इनमें तथा हूणानके कारख़ानोंमें शीशा और जस्ता भी साफ़ होता है।

सुरमेके उत्पादनमें चीनका बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। संसारका ७० प्रतिशत सुरमा चीनमें ही पैदा होता है। इसका प्रथम केन्द्र है सिकुआंगशान (सिन्धुआ ज़िलेमें) और दूसरा पांची (अन्हुआ ज़िलेमें), जो दोनों हूणान प्रान्तमें हैं। प्रथम यूरोपीय महायुद्धके समय यहाँ ३०,००० टन सुरमा उत्पन्न हुआ, जो इसकी सबसे अधिक उत्पत्ति थी।

तुंगस्तकी उत्पत्तिमें भी चीनका बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। संसारमें इस समय १५,००० टन तुंगस्त प्रतिवर्ष पैदा होता है, जिसका ८० प्रतिशत भाग चीन और बर्मासे आता है। यह क्वांतुंग, हूणान और विशेषकर क्वांगसीमें पैदा होता है। गत पर्ष चीनने ११,५०० टन तुंगस्त, ७००० टन टिन, ७६०० टन सुरमा और १२० टन पारा पैदा किया। इन चीज़ोंके विभाजन आदिकी व्यवस्था करनेके लिए सरकारने हूणान और क्यांगसीमें अपने दफ़्तर खोले हैं। इसका उद्देश्य यह है कि चीन उन्हें अधिकाधिक मात्रामें बाहर भेजकर इनके बदलेमें कर्ज़ या अन्य चीज़ें प्राप्त कर सके। इनके अलावा अन्य भी कई खनिज पदार्थ चीनमें होते हैं।

सोनेकी उत्पत्ति बढ़ी

यद्यपि चीनमें सोना बहुत बड़े पैमानेपर उत्पन्न नहीं होता, तथापि सरकारी खनिज-विशेषज्ञों द्वारा अबतक की गई खोज और खुदवाईके फल-स्वरूप उन्हें खासी सफलता मिली है। सेच्वान-सिकेंगमें सोनेकी खुदवाईका काम काफ़ी आगे बढ़ा है। सरकारका अनुमान है कि यदि यह प्रगति जारी रही, तो चीनमें सोनेके उत्पादनमें ४००० औंस प्रति वर्षकी उन्नति होगी। सरकारने विशेषज्ञोंकी सम्मतिके अनुसार

१९३८ में सेच्वान और सिकेंगमें सोनेकी खुदवाईका काम आरम्भ किया। जून १९३८ में सुंगपान तथा कई अन्य क्षेत्रोंमें भी यह काम आरम्भ हुआ। इस प्रकार उत्तर-पश्चिम सेच्वानमें सुङ्गपान, नानची और नानपू, सिकेंगमें ताइनिंग और ताओफू तथा यिएनयुवान और मिंनिगमें सोनेकी खुदाईके केन्द्र स्थापित हुए। इनमें से अनेक खानगी कम्पनियों द्वारा संचालित थे, जो पहाड़ोंकी खुदवाईके अलावा नदियोंके गर्भमें से भी सोना एकत्र करते हैं।

चिनवेईके पास मिन और तातू नदियोंसे, नानचीके पास यांगसीसे और नानपूके पास चाएलिंग नदीसे सोना निकालनेके भी बहुत-से केन्द्र हैं। इन स्थानोंके पास नदी-गर्भमें स्वर्ण-मिश्रित धूल पाई जाती है, जिससे सोना निकालनेके लिए यातायात और पासकी घनी आबादीसे मज़दूरोंकी काफ़ी सुविधा है। 'रेस्टोन ड्रिल' द्वारा नदी-गर्भमें १०० फीट नीचे तककी रेत निकाली जा सकती है, जिसे हाथ या अन्य सामान्य उपायोंसे निकालना सम्भव नहीं। प्रत्येक 'ड्रिल' औसतन ४,००० वर्ग गज़के क्षेत्रफलमें काम करती है। पहाड़ी-प्रदेशोंसे सोना निकालनेका सर्वोत्तम उपाय बिजलीकी शक्तिका उपयोग है। कहते हैं कि पश्चिमी सेच्वान और सिकेंगकी चट्टानोंमें सोनेकी विशेषता है, कारण पहले ये नदियोंकी घाटियाँ थीं। यहाँ कई बार सोनेकी बड़ी-बड़ी कंकरियोंवाली चट्टानें ८-८ परतोंमें पाई गई हैं। सिकेंगमें स्वर्ण-मिश्रित पत्थरोंको बड़ी-बड़ी भारी मिलोंसे चूर्ण कर सोना निकालनेकी प्रथा अब भी सुगम और सस्ती समझी जाती है। यदि इस प्रान्तमें १,००० मज़दूरोंसे चलनेवाली ५० पुराने ढंगकी जल-कलें चलाई जायँ, तो नदियोंमें से प्रति दिन ३५ टनके लगभग सोनेवाली रेत निकाली जा सकती है। चाएलिंग, मिन और तातू नदियोंके गर्भकी रेतको छान-फूँककर सोना निकालनेका रिवाज अब भी जारी है।

सन् १९४१ के प्रथम ६ महीनोंमें खानगी कम्पनियों द्वारा १००,००० औंस और सरकारी केन्द्रों द्वारा ५४०८ औंस सोना पैदा किया गया। १९४० के उत्तरार्द्धके छः महीनोंमें यह वज़न क्रमशः १८८,५०० और ६,०३९ औंस था। इसके अलावा सरकारने व्यक्तियों एवं गैर सरकारी संस्थाओंसे १९४० में २७०,००० और १९४१ में ८४,००० औंस सोना ख़रीदा।

—स्टानवे चग

(३) औद्योगिक सहयोग-समितियाँ

चीनके उत्तर-पूर्वसे दक्षिण-पूर्वके अर्ध-चन्द्राकार भू-भागपर शत्रुका अधिकार हो जानेसे उसके न केवल अधिकांश उत्पादक-केन्द्र ही शत्रुके हाथमें चले गए हैं, बल्कि उसके बन्दरगाह भी उससे छिन गए हैं। इसके परिणाम-स्वरूप उसके कच्चे मालका बाहर जाना और बाहरसे उसके दैनिक जीवनके लिए आवश्यक निर्मित चीज़ोंका आना बन्द-सा हो गया है। अतः चीन-सरकारको कच्चे मालके उपयोग और लोगोंकी आवश्यकताकी चीज़ोंको बनानेकी व्यवस्था स्वयं ही करनी पड़ी है। इसके लिए उसने जो अर्थनीतिक एवं औद्योगिक पुनर्निर्माणकी चेष्टाएँ की हैं, उनमें सहयोग-समिति-आन्दोलनका विशेष महत्त्व है।

इसका श्रीगणेश १९३८ में शंघाईसे हुआ। इसके दो मुख्य उद्देश्य थे—(१) चूँकि चीनका युद्ध लम्बा होगा, शत्रुसे हथियारोंके मुकाबलेके साथ ही साथ अर्थनीतिक मुक़ाबला करना भी ज़रूरी है। (२) इस लड़ाईका उद्देश्य केवल जापानको हराना ही नहीं, बल्कि युद्धसे उत्पन्न हुई स्थितिका उपभोग कर डा० सुनयात-सेनके सिद्धान्तोंके अनुसार चीनको एक सबल और आधुनिक अर्थनीतिक राष्ट्र बनाना भी है। पहले उद्देश्यकी पूर्त्तिके लिए नागरिकोंके दैनिक इस्तैमालकी चीज़ें तैयार करना और सैनिकोंके लिए युद्ध-सामग्री और दूसरेके लिए चीनके व्यापक उद्योगोंके लिए सहयोग-समितियोंके रूपमें राष्ट्रका औद्योगिक पुनर्निमाण करना। इस अर्थनीतिक स्वावलम्बनके लिए चीज़ोंका उत्पादन बढ़ानेका नारा दिया गया। पर जिनके पास कच्चा माल था, उनके पास उससे चीज़ें बनानेके साधन-उपकरण नहीं थे और जहाँ लोग बेकार काफ़ी थे, वहाँ कच्चे

माल, चीज़ें बनानेके साधन और रुपएका अभाव था। अतः सरकारने इसकी व्यवस्था अपने हाथमें ली। कुछ उद्योग उसने स्वयं शुरू किए और कुछ लोगोंको कर्ज़ देकर शुरू करवाए गए।

सरकारने औद्योगिक पुनर्निर्माणको तीन क्षेत्रोंमें बाँटा। पहला देशका भीतरी भाग, जिसमें बड़े-बड़े उद्योग-केन्द्र खोले गए। दूसरा मध्यका—उत्तरमें कान्सूसे लेकर दक्षिणमें फूकीन तकका—भाग है। चूँकि इस भाग तक शत्रुके अभी शीघ्र पहुँच सकनेकी सम्भावना नहीं है, अतः यहाँ छोटे-मोटे उद्योग-धन्धे जहाँ-तहाँ फैले हुए हैं। तीसरा है युद्ध-क्षेत्रके निकटका तथा शत्रु-अधिकृत चीनका भाग। यहाँ छोटे-मोटे 'गुरिल्ला उद्योग' ही हैं, जो युद्धके फैलनेके साथ ही आगे-पीछे हटते रहते हैं। पिछले एक वर्षमें सरकारने इन क्षेत्रोंके उद्योगोंको व्यवस्थित ढंगसे चलानेके लिए लगभग १००० सहयोग-समितियाँ स्थापित की हैं। इन्होंने युद्ध-क्षेत्रके निकटके बड़े-बड़े उद्योग-धन्धोंको स्थानान्तरित करने, शरणार्थियोंको काम देने-दिलाने, शिक्षित मज़दूर प्रस्तुत करने, कच्चे मालकी खरीद तथा निर्मित चीज़ोंकी फरोख्त और यातायात की सुविधाएँ करने, नागरिकों एवं सैनिकोंकी आवश्यकताकी चीज़ोंका उत्पादन बढ़ाने आदिमें आश्चर्यजनक सफलता दिखाई है।

चीनकी ग्रामीण जनतामें व्यक्तिवादी और परस्पर सन्देह करनेकी प्रवृत्ति काफ़ी असेंसे रही है। सहयोग-समितियाँ उन्हें सहायता देकर, साधन जुटाकर, मिलकर काम करनेको उत्साहित करती हैं। इस दिशामें जो प्रयत्न किए गए हैं, उनसे काफ़ी सफलता प्राप्त हुई है। एक जगह कुछ लुहारोंको सम्मिलित रूपसे उद्योग करनेके लिए सरकारने कुछ आर्थिक सहायता दी और कुछ पूँजी उन्होंने स्वयं जमा की। कुछ ही वर्षोंमें उन्होंने देखा कि इस प्रकार के सम्मिलित उद्योगसे उनमें से प्रत्येक पहलेकी अपेक्षा अधिक कमा लेता है। यह पहली सहयोग-समिति थी। दूसरी और तीसरी सहयोग-समितियोंकी स्थापना तो और भी कुतूहलपूर्ण है। हूणानके ३० शरणार्थियोंने सरकारी सहायतासे सियानसे मशीनें मँगाकर स्वयं मोज़े बनानेका कार्यारम्भ किया और शीघ्र ही काफ़ी मुनाफ़ा उठाने लगे। इनकी देखा-देखी १२ व्यक्तियोंने साबुन और मोमबत्ती बनानेके लिए तीसरी सहयोग-समितिकी

स्थापना की। दोही महीनों बाद इसे इतना मुनाफ़ा होने लगा कि इसने सरकारसे लिए हुए २००० डालरके कर्ज़में से ५०० डालर चुका दिए। कहते हैं कि चीज़ें तैयार करनेके बाद ये लोग गलियों और रास्तोंमें ढोल बजा-बजाकर आवाज़ लगाते और अपना माल बेचते। इस प्रकार इनकी चीज़ोंकी माँग होने लगी और इन्हें काफ़ी लाभ होने लगा। इस प्रकार धीरे-धीरे लोगोंमें सहयोग-भावना फैली और यह आन्दोलन काफ़ी व्यापक हो गया।

इस वर्ष यह आन्दोलन कहाँ तक बढ़ा है, इसके आँकड़े अभी उपलब्ध नहीं हैं। पर १९४१ में चीनमें कुल १७३७ सहयोग-समितियाँ थीं, जिनकी सदस्य-संख्या २३,०८८ थी। इनको सरकारकी ओरसे १,९७२,२०४ डालर कर्ज़ दिया गया तथा १४,४७८,७९२ डालर हिस्सों द्वारा उनके प्रतिष्ठाताओंने एकत्र किया। इनमें वे आज़मायशी कारखाने शामिल नहीं हैं, जो सेनाके लिए कम्बल आदि बनाते हैं या जहाँ नए आदमियोंको काम सिखाया जाता है। इन सबके शामिल होनेपर सहयोग-समितियों द्वारा पैदा किए जानेवाले मालका मूल्य ३०,०००,००० डालर होगा। इधर युद्धके बढ़ते जानेसे कच्चे मालका उत्पादन भी कम हो गया है और उसके मूल्य भी चढ़ गए हैं। नवीन उद्योगोंमें लगानेके लिए सरकारके पास पर्याप्त धन भी नहीं। इन कारणोंसे इस वर्ष सहयोग-समितियोंका कार्य विशेष आगे नहीं बढ़ सका। हाँ, इस वर्ष उनके पुनर्गठनका कार्य अवश्य हुआ है। जिन समितियोंका कार्य सन्तोषजनक नहीं समझा गया, उन्हें तोड़ दिया गया। जिनकी स्थिति विशेष उन्नत नहीं होती देखी गई अथवा जिन एक-सा काम करनेवाली समितियोंमें प्रतियोगिताकी भावना पैदा होने लगी उन्हें संयुक्त कर दिया गया। इस प्रकार उनकी सदस्य-संख्या और पैदावारमें काफ़ी उन्नति हुई।

जिन उद्योगोंमें ये समितियाँ लगी हुई हैं, उनमें से मशीनें और धातुकी चीज़ें बनाना; खानोंकी खुदाई; कपड़ा, रासायनिक पदार्थ, खाद्य-सामग्री, मिट्टीके बर्त्तन तैयार करना; यातायातके साधन सुविधाएँ और अन्य स्फुट चीज़ें बनाना आदि मुख्य हैं। इनमें से कपड़ा बनानेका काम ३४ प्रतिशत समितियाँ करती हैं। इनका प्राथमिक कार्य था जल्दी-जल्दी बड़े उद्योगोंको देशके भीतरी भागोंमें ले जाना और

बाहरसे आनेवाली चीज़ोंके न आनेके कारण उत्पन्न हुई उनकी माँगको यथाशक्ति पूरा करना। साथ ही युद्ध-क्षेत्र या शत्रु-द्वारा अधिकृत प्रदेशसे चीनके भीतरी भागोंमें पहुँचनेवाले शरणार्थियोंको काम देनेका भी सवाल था। इस दृष्टिसे चांगसी नदीके उत्तर-दक्षिण सिन यू और चे-वानके युद्ध-क्षेत्रोंके निकट—कुछ छोटे-बड़े अस्थायी उद्योग स्थापित किए गए, जिनमें शरणार्थियों और लड़नेके अयोग्य हुए सैनिकोंको काम दिया गया। इन उद्योगोंसे सैनिकों और नागरिकोंकी आवश्यकताएँ भी पूरी होने लगीं और युद्ध-संचालनमें भी सुविधा होने लगी।

इस आन्दोलनके ८६ केन्द्र (Depots) चीनके १८ प्रान्तोंमें विभाजित हैं। इन्हें कार्यके अनुसार फिर ७ विभागोंमें बाँटा गया है। ये हैं उत्तर-पश्चिममें शेंसी, कान्सू, निंगसिया, चिंघाई, हूपेह, चुआन-कांग, सेच्वान और सिकेंग ; दक्षिण-पश्चिममें हूणान और क्वांगसी ; दक्षिण-पूर्वमें क्यांगसी, क्वांगतुंग और फूकीन ; तिन-शिएनमें युन्नान और क्वीशो ; सिन-यूमें शांसी और हूणान ; चे-वानमें चेकियांग और अन्हवेई। ये सातों विभाग चुंकिंगके प्रधान-कार्यालयके अधीन हैं। यह कार्यालय बोर्ड आफ़् डाइरेक्टर्सकी देख-रेखमें चलता है, जिसके अध्यक्ष व्यवस्था-विभागके उपाध्यक्ष डा० एच० कुंग है, जो चीनके-सहयोग-समिति आन्दोलनके जन्मदाता हैं। आपको परामर्श तथा सहायता देनेके लिए एक स्थायी समिति है, जिसके तीन सदस्योंका काम प्रधान-कार्यालयके लोगोंको नीति और योजनाओंके सम्बन्धमें आवश्यक जानकारी कराना हैं। प्रधान-कार्यालयके मुख्य कार्य हैं—(अ) सहयोग-समितियोंका संगठन और व्यवस्था, इंजीनियरिंग तथा चीज़ें पहुँचाना और उनकी बिक्रीका प्रबन्ध करना (ब) समितियोंके अधीन काम करनेवालोंकी शारीरिक, आर्थिक और शिक्षा-सम्बन्धी उन्नति करना तथा शोध आदि। (स) कर्ज़ देना, हिसाब-किताबकी जाँच करना आदि। (द) बाहरसे होनेवाला पत्र-व्यवहार, उम्मेदवारोंकी रजिस्ट्री तथा अन्य व्यापार-सम्बन्धी कार्य।

प्रधान-कार्यालय अपनी शाखाओं द्वारा १२ से १६ साल तककी आयुके लड़के-लड़कियोंसे लगाकर वयस्क तथा बूढ़े स्त्री-पुरुषोंको उनकी रुचि तथा योग्यताके अनुसार दस्तकारीकी या यान्त्रिक शिक्षा देता है। इस शिक्षाके कई क्रम हैं। कहीं-कहीं

तो पूरे-के-पूरे परिवारको शिक्षा दी जाती है। कमकरोंकी सुख-सुविधाके लिए मनोविनोदके स्थान, खेल आदिके मैदान, अस्पताल, पुस्तकालय, सभा-भवन, जच्चाखाने, स्कूल तथा स्वास्थ्य-रक्षा-केन्द्र आदि खोले गए हैं। युद्धमें घायल हुए सिपाहियोंके लिए इलाजके बाद उनकी स्थितिके अनुसार कुछ खास तरहके कामोंकी व्यवस्था की जाती है, जिससे वे आर्थिक स्वावलम्बनपूर्वक रह सकें। उद्योग-धन्धोंको उन्नत करनेके लिए केन्द्रीय कार्यालयने कई शोध-कार्य किए हैं, जिनके फल-स्वरूप निरन्तर चलनेवाली बुननेकी कलों और लकड़ीके कोयलेसे चलनेवाले इंजनोंका प्रचार हुआ। इसमें विदेशी विशेषज्ञोंसे भी सहायता ली गई है।

चीनी सहयोग-समितियोंकी व्यवस्था खासी लोकतान्त्रिक ढंगसे की गई है। आवश्यक योग्यताके कम-से-कम ७ व्यक्ति अपनी योजना सरकारसे स्वीकृत कराकर उसकी आर्थिक सहायतासे काम शुरू कर सकते हैं। सारी समितियोंके प्रतिनिधियोंकी 'आम-सभा' ही इस आन्दोलनकी सर्वोच्च सत्ता है। यह अपने बोर्ड आफ़् डाइरेक्टर्स तथा निरीक्षक-समितिका चुनाव करती है। बोर्ड सभा द्वारा बनाए हुए नियमोंके अनुसार इस आन्दोलनका संचालन करते हैं। निरीक्षक समिति हिसाब-किताबकी जाँच करने, कामकी प्रगति एवं उन्नतिकी देख-रेख करने, नए सदस्य चुनने और पुरानोंको हटाने, मुनाफ़ोंका विभाजन तथा कमकरोंका वेतन तय करने आदिका काम करती है।

अब तक इस आन्दोलनमें २५,०००,००० डालर लग चुके हैं, जिनमें से ३५ प्रतिशत सरकारी कर्जके रूपमें दिए गए हैं, १० प्रतिशत हिस्सोंके रूपमें और शेष चीनके चारों सरकारी बैंकों द्वारा दिए गए हैं। ज्यों-ज्यों आन्दोलन व्यापक होता जा रहा है, इसकी आर्थिक आवश्यकताएँ भी बढ़ती जा रही हैं। हांगकांग, मनिला, ब्रिटेन, संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका, फिलीपीन, जावा आदिमें रहनेवाले चीनियों द्वारा इस आन्दोलनको लगभग ५,०००,००० डालरकी सहायता मिली है। इसके अलावा उन्होंने विदेशी विशेषज्ञों द्वारा इस आन्दोलनको काफ़ी सहायता पहुँचाई है। इच्छुक लोगोंकी शिक्षा, शोध, मशीनें, प्रकाशन आदिके रूपमें भी उन्होंने काफ़ी सहायता पहुँचाई है। प्रवासी चीनियोंके अलावा कई विदेशी विशेषज्ञों—ख़ासकर अमरीकनों—ने भी उस कार्यमें काफ़ी सहायता पहुँचाई है।

राष्ट्रके औद्योगिक पुमर्निर्माण और अर्थनीतिक स्वावलम्बनके लिए आरम्भ हुए आन्दोलनके अब तकके कार्यसे दो बातें स्पष्ट हैं। पहले तो यह कि औद्योगिक सहयोग-समितियोंकी जड़ काफ़ी सुदृढ़ हो चुकी है और दूसरी यह कि इस आन्दोलनके लिए आज चीनमें बहुत ही अनुकूल समय है। इस आन्दोलनने चीनके लोगोंमें नया जीवन, नई आशा तथा नया सामाजिक और अर्थनीतिक दृष्टिकोण पैदा किया है। लोगोंकी व्यक्तिवादी एवं परस्पर सन्देह करनेकी प्रवृत्ति और अवैज्ञानिक ढंगसे काम करनेकी आदत दूर हो गई है। यद्यपि इस आन्दोलनकी प्रगतिके मार्गमें आनेवाली बहुत-सी विघ्न-बाधाओंको अभी दूर करना बाक़ी है, फिर भी देशी प्रोत्साहन और विदेशी सहयोग-सहायतासे इसके कहीं अधिक सफल होनेकी आशा है। इसके द्वारा न केवल चीन बल्कि मित्र-राष्ट्रोंको इस युद्धमें विजयी होनेमें सहायता मिलेगी। यही क्यों, युद्धके बाद होनेवाली शान्तिपर भी इसके द्वारा वे विजय प्राप्त कर सकेंगे।

—हूबर्ट एस० लियांग
जार्ज ए० फिश

(४) चीनकी ग्रामीण अर्थनीति

ज्यों-ज्यों चीन-जापान युद्ध लम्बा और व्यापक होता गया, छोटे-बड़े उद्योग-धन्धे समुद्र-तटीय क्षेत्रोंसे हटकर चीनके भीतरी भागोंमें स्थानान्तरित होते गए। इससे औद्योगिक कार्यों और उनमें लगे कमकरोंके लिए अनाजकी माँग बढ़ने लगी। मध्यस्थ लोगोंके कमीशन और यातायातके खर्चसे बचननेके कारण किसानोंको अनाजका मूल्य नगरोंमें ले जाकर बेचनेकी अपेक्षा अधिक मिलने लगा। इससे उनकी आर्थिक स्थिति सुधरी, वे अच्छा खाने और अच्छा पहनने लगे। उनका रहन-सहन उन्नत हो गया और उनकी क्रय-शक्ति बढ़ गई। आज चीनी किसानोंके पास अधिक धन है और उनकी क्रय-शक्ति क्रमशः निरन्तर बढ़ती जा रही है।

युद्ध छिड़नेसे पहले चीनी किसानोंकी स्थिति विशेष अच्छी नहीं थी। १९२१ से वे अधिक सूदपर मिलनेवाले कर्ज़के बोझसे दबे जा रहे थे। १९३५ में जब सरकारने इसपर क़ानूनी प्रतिबन्ध लगाया, तब कहीं जाकर उन्हें साँस लेनेका मौक़ा मिला। युद्ध छिड़ते ही अनाजका भाव चढ़ गया—कहीं ५०, कहीं ६०, और कहीं ८० प्रतिशत तक—जिससे किसानोंने अपने कर्ज़ चुका दिए और उनकी क्रय-शक्ति भी काफ़ी बढ़ गई। पर १९३९ में—जब कि युद्धकी परिस्थितिके कारण सरकारी दफ़्तर और छोटे-बड़े उद्योग-धन्धे भीतरी भागमें चले आए तथा बाहरसे आनेवाली चीज़ोंका आयात भी बहुत-कुछ कम हो गया—चीज़ोंके भावोंमें भी ६० से ८० प्रतिशत तक वृद्धि हुई, जिससे किसानोंकी क्रय-शक्तिमें ४५-५० प्रतिशत कमी हो गई। पर १९४० में अनाजका भाव फिर चढ़ने लगा, जब कि किसानों द्वारा खरीदी जानेवाली चीज़ोंके मूल्यकी वृद्धि धीमी पड़ गई थी। इससे फिर किसानोंकी आय और

क्रय-शक्ति बढ़ी। १९४१ में इसमें और वृद्धि हुई। १९४२ के प्रथम छः महीनोंमें तो यह वृद्धि और भी आगे बढ़ी। नीचेकी तालिकासे—जो चीनके ५ प्रमुख प्रदेशोंके आँकड़े लेकर तैयार की गई है—पाठकोंको किसानों द्वारा बेची और खरीदी जानेवाली चीज़ोंकी दरों (चीनी डालरोंमें) की तुलनात्मक जानकारी हो जायगी। ये दरें दिसम्बर १९४१ की हैं :—

किसानों द्वारा विक्रित चीज़ें	पाहसीनमें (सेच्वान)	सिंगनिगमें (कान्सू)	वूचवानमें (क्वीशो)	लिंगलिंगमें (हूणान)	यिंगताकमें (क्वांगतुंग)
गेहूँ (फ़ी पिकुल)	३६५.४०	८०.००	१४२.००	१४०.००	३९५०.
चावल ,,	३५१.८०		१९८.८०	११४.००	९८.८०
रुई ,,	१००५.६०	६१०.००	७१२.३०	४६०.००	
सूअर	३००.००	१८०.००	४००.००	१५०.००	३००,००
किसानों द्वारा ख़रीदी जानेवाली चीज़ें					
केरोसिन (फ़ी केट्टी)	४१.९०				१२.९८
कमीज़का कपड़ा (फ़ी फ़ुट)	२.२५	१.१०	१.००	०.९६	३.२२
नमक (फ़ी केट्टी)	२.२६	३.००	३.३५	५.७०	३.११
माचिस (१० बक्स)	२.००	११.००	२.००	५.००	५.००
चाय (फ़ी केट्टी)		१८.००	३.३५	१.४४	०.७८
भैंस	११००.००		५००.००	४४०.००	३२०.००
हल	४५.००	३.००	१०.००	५.००	३.५०

नानकिंग-विश्वविद्यालयके कृषि-अर्थनीतिक विभाग द्वारा की गई जाँचसे मालूम हुआ है कि १९४० में ग्रामीण क्षेत्रोंकी आर्थिक दुरवस्था दूर हो गई और किसानोंकी आर्थिक अवस्था तथा क्रय-शक्ति निरन्तर बढ़ने लगी। इस वर्ष चावलकी दर १९३८ की अपेक्षा पँचगुनी और गेहूँकी चौगुनी हो गई। १९३७ से अब तक चीनी किसानोंकी क्रय-शक्ति (चीनी डालरोंमें) में इस स्थितिसे कैसे उन्नति हुई है, यह उदाहरणके लिए पाँच प्रदेशोंके विभिन्न स्थानोंसे एकत्र किए गए निम्न आँकड़ोंसे स्पष्ट ज़ाहिर हो जाता है :—

	लोशान	जुंगचांग	व्हेइली	वुचवान	मेंगत्सज़्
सन् १९३७ में	१००	१००	१००	१००	१००
,, १९३८ में	८५	९१	१०३	७७	९०
,, १९३९ में	५६	५५	११०	७२	१०६
,, १९४० में	६४	६५	१२३	७८	११७
,, १९४१ में	१११	११५	१४१	१४५	८८
जन० '४२ में	१०९	११६	१६४	१७२	७२
फर० ,,	१११	११९	१५५	१७२	८६
मार्च ,,	१०५	१२१	१४६	१६६	१०३

यद्यपि चावल (प्रति पिकुल) बोनेका खर्च १९३७ की अपेक्षा १९४१ में (१५२.३१) १९ गुना बढ़ गया, तथापि उसकी दर भी २१०.६ डालरके लगभग हो गई, जिससे किसानको ५८.२९ डालर प्रति पिकुल लाभ होने लगा। चीनी किसानोंमें ७५ प्रतिशत खेतिहर-किसान हैं, जिन्हें कुल पैदावारका ४८.९ प्रतिशत भाग मिलता है और शेष ज़मीदारके पास जाता है। इसमें से किसान अपने खाने-योग्य अनाज रखकर उसका ४.५ प्रतिशत बेचे, तो उसे जीवनकी अन्य आवश्यक चीज़ें खरीदने लायक धन मिल जाता है।

खेतीके लिए कर्ज़

सरकारने सूदखोरोंके जालसे बचानेके लिए किसानोंको कर्ज़ देने और खेतीकी पैदावार बढ़ानेके लिए सब तरहकी यान्त्रिक एवं वैज्ञानिक सहायता देनेकी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ली है। यह कर्ज़ चार सरकारी बैंकों—फारमर्स बैंक आफ़् चाइना, बैंक आफ़् चाइना, बैंक आफ़् कम्युनिकेशंस और सैंट्रल ट्रस्ट - के १९४० में बने संयुक्त-बोर्ड द्वारा दिया जाता है। इसके द्वारा किसानोंको बीज खरीदने, आबपाशीकी व्यवस्था करने, बंजर ज़मीनको उपजाऊ बनाने तथा कुटीर-शिल्प आदिको प्रोत्साहन देनेका कहा जाता है और सरकार हर तरहसे इस दिशामें उनकी सहायता करती है। १९४१ में किसानोंको दिए गए कर्ज़की रक़म ४९८,५६१,००० डालर थी। १९४० में दिए गए कर्ज़की रक़मसे यह ५० प्रतिशत अधिक थी। सरकारने

१९४१ में यह रक़म ४४७,२१५,००० ही तय की थी, पर उसे इसमें ५१,३४६,००० डालरकी वृद्धि करनी पड़ी। यह कर्ज़ १९ प्रान्तोंके ९४८ जिलोंमें ६,०००,००० किसानोंमें बांटा गया, जो १००,००० ग्राम्य सहयोग-समितियोंके सदस्य हैं। प्रान्तवार इस कर्ज़का ब्यौरा इस प्रकार है :—

प्रान्त	१६४१ में दिया गया कर्ज़ (१००० डालरोंमें)	पहले दिया गया कुल क़र्ज़ (१००० डालरोंमें)
सेच्वान	१५७,५२६	१४७,७७७
सिकेंग	११,०९१	७,७८२
क्वीशो	१८,१४८	२०,७५१
युन्नान	३३,६५८	२९,१४५
क्वांगसी	५०,७९१	४७,८६७
क्वांगतुंग	१२,९९४	९,०६८
हूणान	५६,३००	४५,९८९
हूपेह	४,६५७	९,८२६
क्यांगसी	१९,८९५	२०,१७५
ऊन्हवेई	८,३००	१४,४०४
कियांगसू	३९६	२,०७९
चेकियांग	२८,०६१	२१,३७९
फूकीन	३,७३७	३,४९२
होणान	८,७७०	७,४९२
होपेई		१,४१४
शान्तुंग		३,२२६
शेंसी	३६,४८९	२४,१३९
कान्सू	४४,२८१	४५,८४३
किंगसिया	१,५१४	१,०४८

सुईयुवान	१,१०३	७८०
शांसी	८५०	१,००२
अन्यत्र		६६४

चारों बैंकोंके संयुक्त-बोर्ड द्वारा दिए गए उपरिलिखित कर्ज़के अलावा प्रान्तीय सरकारोंने भी इस वर्ष ३,६२३,२१७ डालर कर्ज़ आबपाशीके लिए किसानोंको दिया। अब तक दिया गया यह कर्ज़ कुल ३३,९९१,९१५ डालर होता है। इस वर्ष संयुक्त-बोर्डने आनाजोंकी पैदावार बढ़ानेके लिए आबपाशीके लिए अधिक कर्ज़ देनेका निश्चय किया है। गत वर्ष इन कर्ज़ोंसे आबपाशीके जो छोटे-बड़े काम हुए हैं, उनकी संख्या १८०१ है। इनका प्रान्तवार ब्यौरा इस प्रकार है :—

प्रान्त	नए आबपाशीके साधन	लागत (डालरमें)	कितनी भूमिको लाभ हुआ
सेच्वान	१६४६	७,८५४,१०७	२३२,०४६
क्वीशो	४	१२२,९४९	११,९००
क्वांगसी	२७	७३९,१५८	४९,७००
कियांगसी	१२३	८१६,३००	८८,८६४
होनान	१	४५,८४२	८,५८०

१९४२ में इस कार्यके लिए ९७,३७६,३०२ डालरका कर्ज़ दिए जानेका निश्चय किया गया है, जिसमें से ७७,८७६,३०२ बैंकोंका संयुक्त-बोर्ड देगा। इससे २५५ नए आबपाशीके काम आरम्भ किए जायँगे। इसे मुख्यतया कान्सू, शेंसी, सिकेंग, फूकीन आदिमें बाँटा जायगा। कान्सू और शेंसीमें आबपाशीकी कई नई नहरें बनाई जा रही हैं, अतः इन दोनों प्रान्तोंको क्रमशः २५,६७६,३०२ और १५,०००,००० डालर मिलेंगे। इन कार्योंकी तामीर संयुक्त-बोर्ड द्वारा नियुक्त प्रान्तीय कमीशनोंकी देख-रेखमें होती है।

संयुक्त-बोर्ड द्वारा सारा कर्ज़ ३१७ सहयोग-समिति-बैंकों द्वारा ही किसानोंको दिया जाता है। ये बैंक १३ प्रान्तोंमें फैले हुए हैं। इनका सम्बन्ध चीनके ग्रामीण क्षेत्रोंमें बिखरे १००,००० सहयोग-समिति-केन्द्रोंसे है, जिनके द्वारा

किसानोंको कर्ज़ दिया तथा सूद वसूल किया जाता है। ये बैंक बोर्डसे ९ प्रतिशत मासिक सूदपर रुपया लेते हैं और उसे इन केन्द्रों द्वारा १२ प्रतिशत मासिक सूदपर किसानोंको देते हैं। यह १ से १० वर्षोंके अन्दर किस्तों द्वारा चुकाया जा सकता है। इसका लेन-देन कभी-कभी सिक्कोंमें न होकर बीज, पशु-धन, औज़ार और अन्यान्य यन्त्रोंके रूपमें भी होता है। स्थानीय और प्रान्तीय बैंक भी किसानोंको सहायतार्थ कर्ज़ देते हैं।

अनाजकी पैदावारमें वृद्धि

किसानोंको सरकार द्वारा दी जानेवाली कर्ज़ तथा अन्य प्रकारकी सहायताका एक प्रमुख उद्देश्य है अनाजकी पैदावार बढ़ाना। कृषि-विभागका कार्यक्रम तो यह है कि १९४२ में कुल १९ प्रान्तोंमें मिलाकर ४५,०६३,५०० पिकुल अनाज अधिक पैदा किया जाय। इस विभागके प्रयत्न-स्वरूप गतवर्ष १५ प्रान्तोंमें कुल मिलाकर ८९,७०४, ३०५ पिकुल अनाज अधिक पैदा हुआ। इस समय चीनकी सैनिक और नागरिक आबादीके लिए ६०,०००,००० पिकुल अनाज (चावल और गेहूँ) प्रतिवर्ष खर्च होता है।

अनाजकी पैदावार बढ़ानेमें सरकारका मुख्य अभिप्राय यही है कि प्रत्येक प्रान्त, प्रत्येक ज़िला और होसके तो प्रत्येक ग्राम अन्नके मामलेमें भी स्वावलम्बी हो। जिन स्थानोंमें वहांके निवासियोंका पेट भरने लायक अनाज भी पैदा नहीं होता और उन्हें शेष अनाज बाहरसे मँगाना पड़ता है; उनमें इसकी पैदावार बढ़ानेका विशेष प्रयत्न किया जा रहा है। जो स्थान यातायातके मार्गों एवं साधनोंके निकट हैं, वहाँ अपर्याप्त अन्न पैदा करनेवाले प्रान्तों तथा नगरवालोंके लिए अतिरिक्त अन्न पैदा करनेकी व्यवस्था की जा रही है। युद्ध-क्षेत्रके निकटस्थ स्थानोंमें यह प्रयोग नहीं किया जा रहा, कारण वहाँ पकी-पकाई फ़स्लके शत्रुके हाथोंमें पड़ जानेका पूरा-पूरा खतरा है।

पैदावार बढ़ानेके लिए सरकारने जुताई-बुआईके नवीनतम वैज्ञानिक साधनोंका उपयोग, अच्छी खाद और बीजका इस्तैमाल तथा फ़स्लको हानि पहुँचानेवाले कीड़ों एवं रोगोंके प्रतिरोधका पूरा-पूरा प्रबन्ध किया है। न मालूम कितनी बंजर ज़मीनको

विज्ञानकी सहायतासे उपजाऊ बनाया गया है। आबपाशीके लिए नई-नई नहरें और बाँध आदि बनाए गए हैं। पशु-पालनके तौर-तरीक़ोंको भी उन्नत किया गया है। पशु-धनकी रक्षा और खेती-सम्बन्धी शोध-कार्यके लिए केन्द्रीय कृषि-अनुसंधान-विभाग है, जो विदेशी विशेषज्ञों एवं साहित्यकी सहायतासे इस कार्यमें बहुमूल्य सहायता पहुँचाता है। १९४१ में ४५,९५२,०४६ मो ज़मीन और खेतीके काममें लाई गई। इन सबके परिणाम-स्वरूप इस वर्षमें पैदावारमें जो वृद्धि हुई, उसका प्रान्तवार ब्यौरा निम्न प्रकार है :—

प्रान्त	अनुमानित पैदावार (पिकुलमें)	अतिरिक्त खेती (मो में)	कुल पैदावार (पिकुलमें)
सेच्वान	८,३४४,०००	५,९७२,५५७	१४,०७९,५९०
क्वांगतुंग	९,४६०,०००	३,७८४,१३७	२१,९११,९७४
हूनान	३,९६८,०००	५,३८४,७५६	६,११४,८९४
क्यांगसी	४७९,५०००	४,९५३,८११	१९,५१७,९८८
क्वांगसी	२,२४१,०००	७,०७०,२६३	९,०८६,२८७
चेकियांग	७३६,५००	४,५६९,५०६	५,३४६,५०७
शेंसी	१,२७८,२००	१,७१८,३६६	१,४७९,२८७
क्वीशो	१,४६८,८००	३,८२८,१०३	५,२९९,२६५
युन्नान	५०८,०००	३६६,४५९	९५६,०७४
कान्सू	२१९,०००	२,९७८,४०५	२३६,६८६
हूपह	३३०,५००	२८२,६१०	१०४,६८०
होनान	९९५,०००	१,११०,३७०	१,१३९,१३७
अन्हवेई	९३,०००	१,८५०,१५९	२,३४८,६१८
निंगसिया		२७७,९०९	२७७,५७६
फूकीन	१,१३४,०००	१,८०४,६३५	१,७९८,०४२
सिकेंग		४१५ ०००	
योग	३१,६९०,५००	४५,९५२,०४६	८९,७०४,३०५

केन्द्रीय सामरिक विद्यालयके छात्र फौजी-विज्ञानके अलावा रेल-पथ-निर्माणका काम भी सीखते हैं।
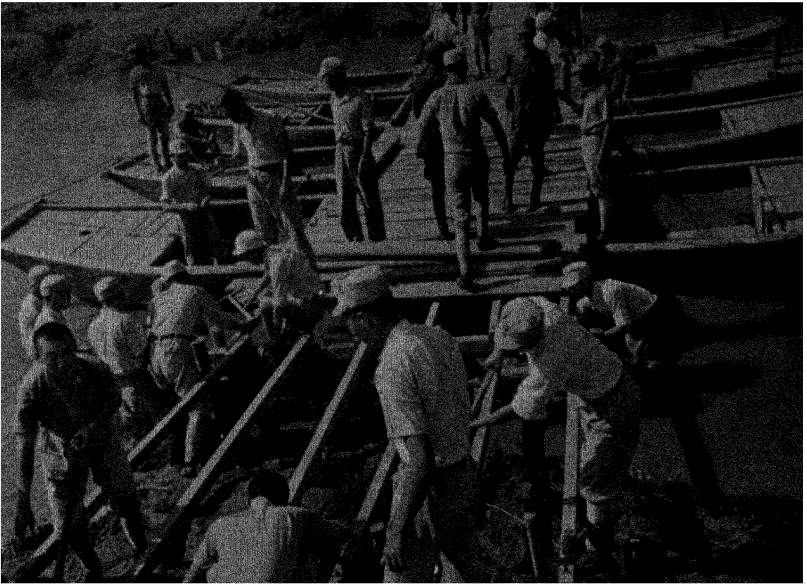
चीनके फौजी इंजीनियर एक पुल खड़ा कर रहे हैं।

चीनी सैनिक गैसकी टोपियोंके प्रयोगका अभ्यास कर रहे हैं।
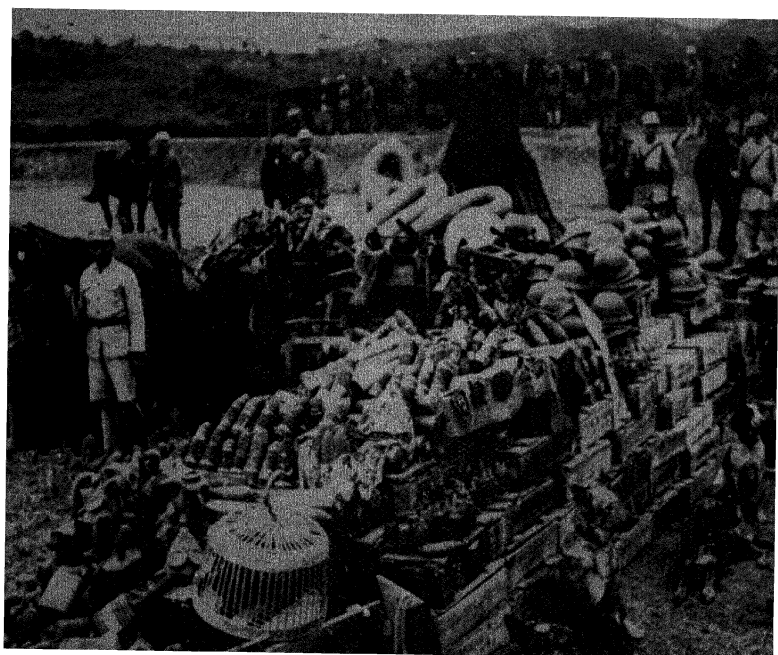
चांगशाकी तीसरी लड़ाईके बादके कुछ जापानी 'तोहफे'।

१९४२ में सरकारका खयाल ४८,५४३,४९० मौ बंजर ज़मीनको उपजाऊ बना कर कुल पैदावारमें ४५,०६३,५०० पिकुलकी वृद्धि करनेका है। गत वर्ष प्रति एकड़ (६ मो) पैदावार बढ़ानेमें सर्वप्रथम स्थान क्वांगसी प्रान्तका रहा। दूसरा सेच्वानका, तीसरा होणानका और चोथा क्यांगसीका। कुल पैदावार बढ़ानेमें सर्वप्रथम स्थान क्वांगतुंगका रहा, जिसने विगत वर्षकी अपेक्षा गत वर्ष २१,९७४ पिकुल अनाज अधिक पैदा किया। भीतरी चीनके १५ प्रान्तोंकी पैदावार ६ प्रतिशतके क़रीब बढ़ी। इनकी ५८०,०००,००० मो ज़मीनमें १,५०००,०००,००० पिकुल अनाज पैदा होता है। पैदावार बढ़ानेके लिए सरकारने जिन उपायोंका अवलम्बन किया है, उनमें से कुछ मुख्य इस प्रकार हैं—सर्दियोंमें गेहूँ बोना, बंजर ज़मीनको उपजाऊ बनाकर वहाँ मोटा अनाज बोना, शराब बनानेमें काम आनेवाले हल्के चावलकी जगह अच्छा चावल बोना, बीज अच्छा बोना, वर्षमें दो बार चावल बोना, गेहूँके अच्छे बीज बोना, नए हलोंका प्रयोग, खाद अच्छी देना, फसलके रोगोंका प्रतिरोध और आबपाशीकी सुविधा।

खेतिहर-किसानोंकी सहायता

जो लोग अपनी ज़मीन खुद जोतते हैं तथा जो खेतिहर-किसान हैं, उनकी रक्षाके लिए सरकारने पूरी व्यवस्थाकी है। सारी उपजाऊ ज़मीनकी सर्वे होकर जो खेत जिसके पास हैं, उनकी रजिस्ट्री हो गई है। जून १९४२ में सरकारने राष्ट्रीय भूमि-व्यवस्था-विभाग नामसे एक नया महकमा खोला है, जिसका काम डा० सुनयात-सेनके सिद्धान्तोंके अनुसार भूमिका सम-विभाजन करना है। चीनकी भूमि-समस्याका हल ही डा० सेनने यह सुझाया है कि ज़मीन जोतने-बोनेवाले किसान ही उसके मालिक हों। अतः सरकार बंजर ज़मीन तो किसानोंको देती ही है, पर अपने भूमि-क़ानूनमें भी यह व्यवस्था रखी है कि जब कोई ज़मीन बेची जाय, तो उसे खरीदनेवालोंमें तरजीह खेतिहर किसानोंको ही दी जाय। इसके साथ ही खेतिहर-किसानोंका लगान कम करने, उस भूमिपर ज़मीदारके अधिकार सीमित और संयत करने तथा उन्हें हटानेके सम्बन्धमें काफ़ी कड़ी शर्तें रखनेकी भी सरकारने बुद्धि-मत्ताकी है।

फारमर्स बैंक आफ़् चाइनाने साधारण स्थितिके खेतिहर किसानोंको ज़मीन खरीदनेके लिए कर्ज़ देनेकी भी व्यवस्था कर रखी है। रहन रखी हुई ज़मीनको छुड़ानेके लिए भी यह कर्ज़ लिया जा सकता है। यह कर्ज़ 'ज़मीनके बौण्ड'के रूपमें भी दिया जाता है। इस वर्ष बैंकने ५०,०००,००० से १०,०००,००० डालर तकके 'ज़मीनके बौण्ड' जारी करनेकी घोषणा की है। इसके द्वारा सरकार कम पैदावारकी ज़मीनके मालिकोंसे ज़मीन खरीदकर खेतिहर-किसानोंको देगी। पहले-पहल यह काम सेच्वान, क्वांगसी और हूणान प्रान्तोंमें किया जायगा, क्योंकि वहाँके खेतिहर-किसान अधिक लगानके बोझसे दबे जा रहे हैं। ये लोग ज़मीन लेकर उसका मूल्य किस्तोंमें सरकारको चुका देंगे।

इस प्रकार चीनकी भूमि-समस्याका हल उसे कुछ लोगोंमें बराबर-बराबर बाँट देना है। डा० सुनयात-सेनके इस सम्बन्ध में तीन आदेश हैं—(१) जो लोग ज़मीन बोते हैं, उनमें इसे बराबर-बराबर बाँट दिया जाय। (२) खेतीके यन्त्रों, ज़मीनको अधिक उपजाऊ बनानेके साधनों, अकाल-निवारण, पैदावार बढ़ाने तथा यातायाताकी सुविधा आदिको प्रस्तुत करना। (३) बंजर भूमिको उपजाऊ बनाकर आबाद करना। यही भूमिके राष्ट्रीयकरणके आदेश हैं। सरकारकी ग्रामीण अर्थनीति—खास कर खेतिहर-किसानोंको दी जानेवाली सहायता—इसी आदर्शको प्राप्त करनेका प्रयत्न है।

—चू फू-सुंग

(५) चीनका युद्धकालीन वैदेशिक व्यापार

वैदेशिक व्यापार चीनके अर्थनीतिक एवं व्यावसायिक जीवनका एक प्रमुख आधार रहा है। मौसम और प्रकृतिकी सुविधाओंसे चीन भूमिज और खनिज पदार्थोंमें काफ़ी सम्पन्न है। पर एशियाके अन्यान्य देशोंके समान पाश्चात्य देशोंकी अपेक्षा यह भी उद्योग-धन्धोंमें काफ़ी पिछड़ा हुआ है। अतः इसका जीवन अधिकांशतः कच्चे मालके निर्यात और अपनी आवश्यकतानुसार निर्मित चीज़ोंके आयातपर ही निर्भर करता रहा है। जापान द्वारा उसके समुद्र-तटीय बन्दरगाहोंपर कब्ज़ा हो जानेसे उसके वैदेशिक व्यापारको भारी धक्का लगा। पर हांगकांग तथा रंगून आदि बन्दरगाहोंसे उसका बाहरी देशोंसे थोड़ा-बहुत व्यापारिक सम्बन्ध बना रहा। किन्तु दिसम्बर १९४१ में प्रशान्त-महासागरमें छिड़ी लड़ाई और विशेषकर बर्मा, मलाया, सिंगापुर, पूर्वी-द्वीपसमूह आदिपर जापानका कब्ज़ा हो जानेके बादसे तो उसके बाहरी संसारसे सम्पर्क रखनेके लगभग सभी मार्ग बन्द हो गए हैं। अब उत्तर-पश्चिममें उसका रूससे और दक्षिण-पश्चिममें आसाम होकर बने नए मार्ग द्वारा भारत तथा ब्रिटेनसे यातायाका सम्बन्ध रह गया है। इन्हीं दो मार्गोंके द्वारा उसकी चाय, बनस्पति तेल, खालें तथा खनिज पदार्थ आदि मित्र-राष्ट्रोंतक पहुँचते हैं।

वैदेशिक व्यापार-कमीशन

अक्टूबर १९३७ में राष्ट्रीय सरकारने एक व्यापारिक-पुनर्गठन-कमीशन बनाया था, जिसे मार्च १९४० में वैदेशिक व्यापार-कमीशनका नाम दे दिया गया। चीनके आयात-निर्यातकी सारी देख-रेख यही कमीशन करता है। साथ ही इसका काम

निर्यात-व्यापारियोंको आर्थिक सहायता देना, यातायातकी सुविधा करना, निर्यातकी चीज़ोंकी पैदावार बढ़ाना और उन्हें होनेवाले नुकसानकी पूर्त्ति करना आदि भी है। ज्यों-ज्यों चीनमें युद्ध लम्बा और व्यापक होता गया, युद्ध और नागरिक जीवनकी आवश्यकताकी चीज़ों और धनकी ज़रूरत बढ़ने लगी। इसकी पूर्त्तिके लिए ब्रिटेन, संयुक्त-राष्ट्र अमरीका और रूससे चीन-सरकारने कर्ज़ लिए और उनके एवज़में चीनमें पैदा होनेवाली चीज़ें—बनस्पति तेल, चाय, खनिज पदार्थ आदि—देनेका तय किया। यह काम भी कमीशनके ही सुपुर्द किया गया और उसे विदेशी विनिमय और आयातके नियन्त्रणका भी अधिकार दिया गया।

कमीशनके अधीन कई व्यावसायिक संघ हैं, जो निर्यातकी विविध चीजोंको एकत्र करने और उन्हें बाहर भिजवानेकी व्यवस्था करते हैं। पहला संघ है फूसिग ट्रेडिंग-कार्पोरेशन, जो अमरीकासे लिए गए कर्ज़के मूल धन तथा सूदके एवज़में बनस्पति तेल भिजवानेका प्रबन्ध करता है। इसका प्रधान कार्यालय चुंकिंगमें है और शाखाएँ तेल-उत्पादक केन्द्रोंमें। बनस्पति तेलका एकमात्र खरीदार और निर्यातकर्त्ता यही संघ है। इसी प्रकार सूअरके बाल खरीदकर निर्यात करनेका एकमात्र अधिकार एक दूसरे संघ फू-हुवा ट्रेडिंग कार्पोरेशनको है। यह ऊन, कच्चा रेशम, खालें और सूअरके बाल आदि भी निर्यात करता है। २६ फरवरी, १९२४ को इसे फू-सिंग ट्रेडिंग कार्पोरेशनमें सम्मिलित कर दिया गया। यह रूससे लिए गए कर्ज़के मूल धन और सूदके एवज़में उपरिलिखित माल भेजता है। जनवरी १९४० में चाइना नेशनल टी-कार्पोरेशनकी स्थापना हुई, जो चीनमें पैदा होनेवाली चायका आधेसे अधिक भाग रूसको भेजती है। निर्यातकी व्यवस्था करनेके लिए दो यातायात-विभाग भी थे—एक दक्षिण-पूर्वी ट्रांस्पोर्टेशन आफ़िस और एक उत्तर-पश्चिमी ट्रांस्पोर्टेशन आफ़िस।

चार वर्षोंके कार्यका सिंहावलोकन

मोटे तौरपर इन चार वर्षोंमें कमीशनने जो कार्य किया है, उसे निम्न श्रेणियोंमें बाँटा जा सकता है—(क) भूमिज पदार्थोंका एकत्रीकरण और निर्यात। (ख) मित्र-राष्ट्रों द्वारा मिले कर्ज़के एवज़में माल देनेकी शर्त्तें तय करके समझौता करना।

(ग) युद्ध और अन्य कार्यौंके लिए आवश्यक चीज़ें खरीदकर एकत्र करना। (घ) आयातका नियन्त्रण। (ङ) उत्तर-पश्चिम और दक्षिण-पूर्वके थल-मार्गौंकी व्यवस्था। (च) चीनी मालके निर्यातसे आनेवाले विदेशी विनिमयका नियन्त्रण। (छ) निर्यातके लायक भूमिज पदार्थौंका उत्पादन बढ़ानेकी चेष्टा करना।

निर्यातके लिए कमीशनने भूमिज पदार्थौंका एकत्रीकरण १९३८ से शुरू किया। प्रशान्त-महासागरमें छिड़े युद्धके कारण चीनके निर्यातमें भी कमी हो गई, जिसके परिणाम-स्वरूप कमीशनने अपना क्षेत्र ज़रा संकुचित और सीमित कर लिया। इन चार वर्षौंमें कमीशनने जो माल खरीदा उसका विवरण इस प्रकार है :—

पदार्थ	मूल्य (डालरमें)
वनस्पति तेल	४२६,५१५,२८९.६८
चाय	१२९,९८२,५३७.८१
सूअरके बाल	६६,००४,४३३.०६
कच्चा रेशम	५४,९०४,८८१.५०
ऊन	३२,१२९,६७४.५८
खालें और फ़र	१८,२२५,९५६ ७३
	१,६८१,०८९.८९
अन्य	८,८४२,१६०.३१

इन चार वर्षौंमें कमीशनने जिन पदार्थौंका निर्यात किया है, उनका व्यौरा इस प्रकार है :—

पदार्थ	मूल्य (डालरमें)
बनस्पति तेल	६७,०९९,३९१
चाय	२०,१२३,९३१
सूअरके बाल	१,७९९,०९७
ऊन	११,६७२,२२०
रेशम	६६२,२८३
	३४४,२४५

फ़र और खालें	१,९३५,६५७
फोशिया चाय	२,९७७,९५९
सूअरकी आँत	९०७,७७१
अन्य	३,४६२,१७७

रूस, ब्रिटेन अमरीका आदिसे मिले कर्ज़के एवज़में भूमिज पदार्थ देनेकी जो व्यवस्था समझौतोंके रूपमें दोनों ओरसे की गई है, कमीशनने उसका समयपर पालन किया। इन वर्षोंमें अमरीकाको कर्ज़के एवज़में २७,२३०,७२१.३१ अमरीकन डालरका वनस्पति तेल, रूसको २४४१, ३८२.५० डालरका अनाज और अन्य भूमिज पदार्थ तथा ब्रिटेनको ७८,४०० पौण्डके सूअरके बाल भेजे गए। धनके रूपमें कर्ज़ लेनेके अलावा कमीशनने मित्र-राष्ट्रोंसे युद्धके लिए आवश्यक चीज़ें—शस्त्रास्त्र, गोसोलिन, मोटरें, युद्ध-सम्बन्धी उद्योग-धन्धोंके लिए आवश्यक सामान आदि—भी उधार खरीदीं। जून १९४० में प्राकृतिक उपकरण-विभाग भी कमीशनके अधीन कर दिया गया, जिसके फल-स्वरूप आयातके नियन्त्रणका कार्य भी इसीको करना पड़ा। इसने अनावश्यक और फैशन-परस्तीकी चीज़ोंका आयात बहुत सीमित और नियन्त्रित कर दिया तथा युद्ध और नागरिक जीवनकी आवश्यक वस्तुओंको मँगानेकी ओर विशेष ध्यान दिया। जुलाई १९३९ से अक्टूबर १९४१ तक इस तरहकी १७८,५१९.९० डालरकी चीज़ें चीनमें आईं, जिनमें से गैसोलिन और केरोसिन मुख्य थीं।

आयात-निर्यातकी सुगमताके लिए यातायातकी व्यवस्थाकी ओर भी कमीशनने पर्याप्त ध्यान दिया है। चीनके बन्दरगाहों और बादमें ब्रिटेनके निकट-पूर्वके बन्दरगाहोंके जापानके हाथोंमें चले जानेके बादसे बाहरी संसारसे चीनके यातायातके केवल दो ही थल-मार्ग रह गए हैं—एक उत्तर-पश्चिममें रूसका और दूसरा दक्षिण-पूर्वमें आसाम होकर भारतका, जिसके द्वारा चीनका मित्र-राष्ट्रोंसे आदान-प्रदान होता है। इन मार्गोंसे माल मँगाने-भेजनेमें कमीशन सभी प्रकारके पुराने और नए वाहनोंको काममें लाता है—जैसे रेल, मोटर-लारियाँ, नावें, गाड़ियाँ और मज़दूर। इस समय कमीशनके पास सड़कोंपर माल ढोनेवाली १००० रबड़के पहियोंकी गाड़ियाँ हैं, जिनकी संख्या शीघ्र ही बढ़ाई जानेवाली है।

चीनने जितने बड़े-बड़े कर्ज़ लिए हैं, उनको चुकानेके लिए उसे इस समय बहुत अधिक मालकी आवश्यकता है। प्रथम तो कमीशनने इसके लिए प्रत्येक उत्पादकके लिए अपनी उपजका एक निश्चित भाग सरकारको (निर्यातके लिए) देनेका नियम बना दिया है। पर दूसरा और अधिक प्रभावपूर्ण उपाय वह यह काममें ला रहा है कि भूमिज पदार्थोंकी पैदावार बढ़ाना। वनस्पति तेल, ऊन, रेशम और चायकी पैदावार बढ़ानेके लिए उसने कई योजनाएँ तैयार की हैं। उत्पादकोंको कर्ज़के रूपमें धन तथा वैज्ञानिक उपायों एवं यन्त्रोंसे भी सहायता पहुँचाई गई है। इनकी पैदावार बढ़ानेके लिए शोध-कार्यकी व्यवस्था भी कमीशनने की है। ५९,३०० एकड़में 'टुंग' के जंगल लगाए गए हैं और ४५,४०० एकड़ नष्टप्राय: जंगलको पुनर्जीवित किया गया है। रेशमके कीड़ोंके अंडोंके ६०,००० छत्ते सेच्वानके किसानोंमें रेशम पैदा करनेवाले कीड़ोंकी उन्नतिके लिए बाँटे गए हैं।

युद्ध-जनित स्थितिका प्रभाव

प्रशान्त-महासागरका युद्ध आरम्भ होनेसे पूर्व कमीशनने (१) निर्यातके पदार्थोंकी खरीदकी सुविधाएँ करने, (२) उनकी पैदावार बढ़ाने, (३) यातायातके साधनों एवं मार्गोंको उन्नत करने और (४) मित्र-राष्ट्रोंसे आदान-प्रदानके अधिक अच्छे समझौते करने आदिके लिए एक पंचवर्षीय योजना तैयारकी थी ; पर युद्ध छिड़ जानेके कारण उसपर ठीक ढंगसे अमल नहीं हो सका। फिर भी इस दिशामें काफ़ी काम हुआ है। टुंगके दरख्त अधिक संख्यामें उगाए जाने लगे हैं और उनका तेल निकालनेवालोंसे यह व्यवस्था की गई है कि सारा तेल वे कमीशनके केन्द्रोंको ही बेचें। इसी प्रकार सारी चाय भी सरकार द्वारा निश्चित किए गए मूल्यपर लेनेकी व्यवस्था करनेकी बात थी और १९४२ में २६०,००० पेटियाँ, १९४३ में ६००,००० तथा १९४४ में १,०००,००० पेटियाँ लेनेका निश्चय किया गया था। सूअर और भालूके बालोंको एकत्र करनेके लिए केन्द्र भी खोले जानेवाले थे। चीज़ोंकी पैदावार बढ़ानेके लिए भी कई नए-नए उपाय सोचे गए थे। पर इन सबपर आंशिक रूपमें ही अमल हो सका।

युद्ध छिड़नेके बादसे चीनने रूससे तीन कर्ज़ोंके रूपमें २५०,०००,००० ; अमरीकासे चार कर्ज़ोंके रूपमें १२०,०००,००० और ब्रिटेनसे दो कर्ज़ोंके रूपमें ३२,०००,००० अमरीकन डालर लिए हैं। इन सबके एवज़में चीनने सम्बन्धित राष्ट्रोंसे भूमिज और खनिज पदार्थ देनेके समझौते किए हैं। इन कर्ज़ोंका बहुत बड़ा भाग चीनको १९४४ तक चुका देना है। इसके लिए उसने अपनी प्रमुख चीज़ोंकी पैदावार बढ़ानेकी निम्न योजनाएँ बनाई हैं :—

(१) वनस्पति तेल—यह १०५ ज़िलोंमें उगनेवाले टुंगके पेड़ोंसे तैयार होता है। अभी फ़ी एकड़ ३,०००,००० पेड़ उगाए जाते हैं और फ़ी एकड़ १,५३५,००० पेड़ोंको पुनर्जीवित किया जाता है। कमीशनने इनमें ९४ प्रतिशत वृद्धि करनेका निश्चय किया है। इसके लिए एक शोध-संघ भी खोला गया है।

(२) भेड़ोंकी ऊन—इस समय चीनमें देशी और विदेशी १५,०००,००० भेड़ें हैं, जिनकी संख्यामें ८७ प्रतिशत वृद्धि की जानी है।

(३) रेशम—५ नए प्रान्तोंमें इसे तैयार करनेका काम शुरू किया जायगा। ५६ निरीक्षण-केन्द्र खोले जायँगे। रेशमके कीड़ोंके खानेके लिए शहतूत अधिक पैदा हों, इसके लिए नए पेड़ लगाए जायँगे। इस तरह रेशमकी पैदावार ५६ से १०० प्रतिशत बढ़ानेकी व्यवस्था की जायगी।

(४) चाय—इस समय १,८००,००० पेटी चाय चीनमें पैदा होती है। इसकी पैदावारमें ४५,००० पेटीकी वृद्धि करनेके लिए कई सुधार-केन्द्र खोले जायँगे। चाय पैदा करनेवालोंको हर प्रकारकी सहायता पहुँचानेके लिए प्रान्तों और ज़िलोंमें सहायता एवं निरीक्षण-केन्द्र खोले जायँगे।

इन योजनाओंको कार्यान्वित करनेके लिए सरकारने लाखों डालरके अलग-अलग बजट स्वीकार किए हैं। प्रशान्त-महासागरका युद्ध छिड़नेके बाद न केवल इन योजनाओंका काम ही अधूरा एवं शिथिल हो गया है, बल्कि कमीशनको अपनी पिछली स्थितिमें भी काम कर सकना कठिन हो रहा है। पहले बाहर भेजी जानेवाली चीज़ोंपर जो पाबन्दियाँ थीं, वे अब धीरे-धीरे हटाई या कमकी जा रही हैं। मार्च १९४२ में जब रंगून-पतनकी खबर चुंकिंग पहुँची, तो सरकारने घोषणाकी कि

जो व्यापारी चाहें, वनस्पति तेल बिना किसी पाबन्दीके खरीद, बेच या बाहर भेज सकते हैं। इसी प्रकार सूअरके बालोंकी खरीद और एकत्रीकरण तथा चायके क्रय और विक्रयके लिए आवश्यक सनद-सम्बन्धी पाबन्दियाँ भी हटा ली गई हैं। बाहर जानेवाली चीज़ोंका निर्यात रुक या कम हो जानेसे सरकारने देशहीमें उनकी खपतकी व्यवस्था की है। ७०,००० टन वनस्पति तेलसे अब वह ४,०००,००० गैलन गेसोलिन तैयार करने लगी है, जो कि पहले उसे बाहरसे मँगाना पड़ता था।

चायकी पैदावार भी कम कर दी गई है। पहले कमीशन जितनी चाय बाहर भेजनेके लिए खरीदता था, इस वर्ष उससे एक-तिहाई चाय ही खरीदी है। हाँ, सारी ऊनका वह सैनिकों तथा नागरिकोंके लिए कपड़े और कम्बल बनानेमें उपयोग कर लेता है। पर रेशम, खालें, सूअरके बाल आदिका क्रय कम हो गया है। अब चाय, रेशम और खालें रूसको तथा सूअरके बाल, कच्चा रेशम, कच्ची धातुएँ (तुङ्गस्त और सुरमा) आदि मित्र-राष्ट्रोंको भेजी जाती हैं। कमीशनका प्रधान उद्देश्य अब चीज़ोंकी मात्राकी अपेक्षा उनकी क़िस्मको उन्नत करना ही अधिक है।

गत ११ मार्च, १९४२ को राष्ट्रीय सरकारने चीनके आयात-निर्यातके सम्बन्धमें १५ नए नियम बनाए हैं, जिनमें से कुछका आशय इस प्रकार है—वैज्ञानिक, औद्योगिक, चिकित्सा, सफ़ाई, लोक-हित, शिक्षा, संस्कृति तथा धर्म-सम्बन्धी चीज़ोंके आयातके लिए भी अर्थ-विभागसे सनद प्राप्त करनी होगी। जो चीज़ें खपतसे अधिक पैदा होती हैं, उनके निर्यातके लिए भी सनद लेनी होगी। चुङ्गीके नियमोंका पालन करते हुए व्यापारी बाहर न जानेवाली चीज़ें बेच सकते हैं। युद्ध-सम्बन्धी आवश्यकताकी चीज़ोंके आयातके लिए भी सनद लेनी होगी। सूअर, उसके बाल, ऊन, वनस्पति तेल तथा खनिज पदार्थोंके निर्यातके लिए भी सनद लेनी होगी। अंडे तथा अंडोंकी चीज़ें, अलसी, मोम, तेल, मूँगफली और लकड़ी आदिके निर्यातकी अनुमति उसी हालतमें मिलेगी, जब कि निर्याता उनसे वसूल होनेवाला विदेशी विनिमय सरकारके हाथ बेच दे।

—स्टानवे चंग

४. युद्ध-कालीन व्यवस्था

(१) यातायातके साधन

सितम्बर १९३१ में जापान द्वारा मंचूरियापर आक्रमण होते ही सुदूर पूर्वमें युद्धके बादल मँडराने लगे। चीनकी राष्ट्रीय सरकारने इसके लिए तैयारी करनेका निश्चय किया और सभी क्षेत्रोंमें कमियोंको पूरा करनेकी ओर ध्यान दिया। यातायातके क्षेत्रमें चीन अभी काफ़ी पिछड़ा हुआ था, अतः उसने इस दिशामें अपने साधन-सूत्र बढ़ानेका यत्न आरम्भ किया। पर इसमें काफ़ी समय लगता। चीन चूँकि ऐसे कामोंके लिए बाहरी देशोंसे आनेवाले सामानपर ही निर्भर करता है, जापानने उसे इस तैयारीके लिए समय देना उचित नहीं समझा। उसने चीनको छेड़नेकी कई बार चेष्टा की और १९३७ में उसपर आक्रमण भी कर दिया। कुछ ही समयमें तिएंतसीन, शंघाई और केन्टनपर जापानी कब्ज़ा हो जानेसे चीनका बाहरी संसारसे सम्बन्ध-विच्छेद हो गया और उसे नए रास्तोंकी खोज करनी पड़ी। किन्तु युद्धके कारण एक तो चीज़ोंका मूल्य बढ़ गया, दूसरे मज़दूर भी सस्ते और अधिक संख्यामें मिलने मुश्किल हो गए, अतएव इस दिशामें विशेष काम नहीं हो सका।

पर युद्ध और उससे पैदा हुई रुकावटोंसे सरकार एकदम निरुत्साहित और निराश नहीं हुई और जो भी स्वल्प साधन-सुविधाएँ उसे मिल सकीं, उन्हींसे कार्य आरम्भ कर दिया। यद्यपि इन पाँच वर्षोंमें चीनके यातायातपर अधिक दबाव युद्ध-प्रयत्नोंका ही रहा, पर अन्य दिशाओंमें भी काफ़ी प्रगति हुई। रेल, तार, टेलीफ़ोन, डाक,

सड़कें, नावें और डोंगियाँ तथा आदमियों द्वारा माल और सवारियोंके एक स्थानसे दूसरे स्थानपर ले जाए जाने आदिके कार्योंमें भी काफ़ी उन्नति हुई है। पर युद्धके कारण इस दिशामें चीनने जो कुछ किया, उसका काफ़ी हिस्सा नष्ट हुआ और फिर बनाया गया। इस प्रकार उसके यातायातके साधनोंके निर्माण, नाश और पुन-र्निर्माणका यह चक्र निरन्तर चल रहा है। यहाँ हम चीनके यातायातके प्रमुख साधनोंकी इन पाँच वर्षोंकी प्रगतिका संक्षेपमें उल्लेख करेंगे।

रेल

चीनमें रेलोंका प्रचलन लगभग ७० वर्ष पहले हुआ। मंचूरियापर जापानका आक्रमण (सितम्बर, १९३१) होनेके समय तक वहाँ कुल १४,००० किलोमीटर लम्बी रेल थी, जो अधिकतर उत्तरी चीन और उसके समुद्र-तटीय प्रदेशमें फैली थी। इसे चीन-जैसे महादेशके लिए न तो पर्याप्त ही कहा जा सकता है और न अच्छा ही। किन्तु १९३७ में जापान द्वारा हमला होते ही सैनिक यातायात और औद्योगिक कार्योंके लिए रेलोंकी महती आवश्यकता प्रतीत हुई। अतः ८,००० किलोमीटर नई रेल बनानेकी योजना बनाई गई। चूँकि इसके लिए धनकी आवश्यकता थी, अतः रेल्वे-विभागके मन्त्री मि० चांगकाई-नगाऊने कुछ तो जनतासे कर्ज़ लिया और कुछ धन रेलोंकी उपयोगिता तथा माल लाने-लेजानेकी आय बढ़ाकर प्राप्त किया। इस प्रकार युद्ध-कालकी असुविधाओं एवं कष्टोंके बावजूद चीनने नई रेलोंका काम आरम्भ किया।

युद्ध-कालमें बनी नई रेलोंमें केंटन-हांको-रेल्वे, जो अप्रैल १९३८ में पूरी हुई, सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। इसके द्वारा हांगकांग और केंटनके बन्दरगाहोंमें आनेवाला माल—विशेष कर युद्ध-सामग्री—चीनके भीतरी भागोंमें पहुँचने लगा। बादमें इसका सम्बन्ध केंटन-काउलून-रेल्वेसे जोड़ दिया गया, जिससे इसके साथ ही काउलून पहुँचनेवाला माल भी आसानीसे केन्द्रीय और उत्तरी चीनमें भेजा जाने लगा। लुंगाई-रेल्वेको भी १७४ किलोमीटर बढ़ाकर पाओशीसे सियान तक ले जाया गया। बादमें देखा गया कि तुङ्गक्वानपर जापानियोंका अधिकार होनेसे सियान-क्षेत्र सुरक्षित रह सकेगा, अतः इस रेल्वेको और पश्चिमकी ओर बढ़ाया गया। इसी प्रकार चेक्यिांग-

क्यांगसी-रेल्वेका ५५४ किलोमीटरका हिस्सा भी पूरा किया गया, जिससे हांगचोसे पिंगसियांग तक यातायात जारी हो सका। इन रेलोंके बननेसे माल और युद्ध-सामग्रीके यातायातमें तो बहुमूल्य सहायता मिली ही, लेकिन उससे कहीं अधिक सहायता मिली सैनिकोंके यातायातमें। सूचो, हांको और नामेचंगके युद्धोंमें दक्षिणसे चेकियांग-क्यांगसी-रेल्वे द्वारा ही सैनिक भेजे गए। सूचोसे काशिंग तक ७५ किलोमीटर लम्बी रेल बनाकर शंघाई-नानकिंग तथा शंघाई-हांगचो रेलोंको जोड़ दिया गया, जिसके परिणाम-स्वरूप शंघाई युद्ध-क्षेत्रमें समयपर पर्याप्त सैनिक तथा उनके लिए युद्ध और खाद्य-सामग्री पहुँचती रही और वे तीन मास तक जमकर लड़ते रहे। इस दृष्टिसे शंघाई-नानकिंग-रेल्वे और तिएतसीन-पूको-रेल्वेको जोड़नेके लिए जारी की गई नानकिंग-फ़ैरी-सर्विस (नदी-मार्गसे नौकाओं द्वारा यातायात) भी विशेष उल्लेखनीय है। नवम्बर १९३७ में चेकियांग प्रान्तके पूर्वी और पश्चिमी भागोंको जोड़नेके लिए तीन वर्षोंमें चेयेनतांग नदीपर बनाया गया पुल शत्रुके हाथमें न पड़ जाय, इसलिए डाइनामाइटसे उड़ा दिया गया। शंघाई-हांगचो-निंगपो रेल्वेके पूरा होनेसे भी सैन्य-संचालनमें काफ़ी सहायता मिली।

कई नई रेलें तो इतने कम समयमें बनाई गई हैं कि पाठक आश्चर्य किए बिना नहीं रह सकते। हूणान-क्वांगसी रेल्वेका हेंगयांगसे क्वीलिन तकका ३६० किलोमीटरका हिस्सा ३६० दिनों (अक्टूबर १९३७ से सितम्बर १९३८) में ही समाप्त कर दिया गया। बहुत-सी रेलें युद्धकी बदलती हुई परिस्थितिको दृष्टिगत रखते हुए ही बनाई गईं और शत्रुके हाथमें पड़ जानेके डरसे शीघ्र ही नष्ट भी कर दी गईं—जैसे नानकिंग-चेञनक्वान, नानकिंग-क्यांगसी, तुङ्गक्वानके निकट पीत-नदीपर बना रेलका पुल, चूचो-क्वीयांग, चैंगतू-चुकिंग तथा युन्नान-बर्मा रेल्वे।

७ जुलाई, १९३७ को हुए 'लूकोशियाओ-काण्ड'के बादसे ही रेलोंका प्रधान कार्य उत्तर और पूर्वमें सैनिक तथा युद्ध-सामग्री पहुँचाना हो गया। इस कार्यमें रेल्वे-विभागने सेना-विभागके साथ जिस तत्परतासे हार्दिक सहयोग किया, उसपर चीनको गर्व है। इसे पाँच कालोंमें बाँटा जा सकता है। पहला लूकोशियाओ-काण्डसे लेकर नानकिंगके पतन तक, जब कि उत्तरी चीन युद्धकी लपटोंमें घिर गया

था। पीपिंग-मुकेडन, पीपिंग-सुईयुवान और तिनसीन-पूको रेल्वे तथा उसके बाद शीघ्र ही चेन्तिंग-ताईयुवान रेलोंपर भी इसका असर पड़ा। इस कालमें रेलोंको न केवल उत्तरमें सैनिक और युद्ध-सामग्री ही पहुँचानी पड़ी, बल्कि वहाँसे शरणार्थियोंको भी दक्षिण और पश्चिमके भागोंमें ले जाना पड़ा। १३ अगस्तको शंघाईमें युद्ध छिड़ जानेके बाद तो रेलोंपर बहुत ही अधिक दबाव पड़ने लगा। हवाई आक्रमण तो प्रायः रोज़ ही होते थे। इस अर्सेमें (जुलाईसे दिसम्बर १९३७) रेलोंने ४,४६७,३७६ आदमियों और १,२३६,६२९ टन मालको वहन किया।

दूसरा काल है नानकिंगके खाली होनेके बाद हुई सूचोकी लड़ाईसे लेकर काफेंगके पतन तक, जब कि, युद्ध पूर्वसे पश्चिमकी ओर बढ़ा। एक ओर यांग्सी नदीके दक्षिण तथा चेकियांग, क्यांगसी, क्यांगसू और अन्हवेई प्रान्तोंमें लड़ाई थम-सी गई और दूसरी ओर शत्रु-सेनाएँ तिएंतसीन-पूको रेल-मार्ग होकर उत्तरकी ओर, तिएंतसीनके दक्षिणकी ओर और पीत-नदी पारकर सूचोकी ओर बढ़ने लगीं। इसके परिणाम-स्वरूप तिएंतसीन-पूको, पीपिंग-हांको-लुंगाई तथा चेकियांग-क्यांगसी रेलोंपर सैनिकों तथा युद्ध-सामग्रीको विविध युद्ध-क्षेत्रोंमें पहुँचाने तथा वहांके शरणार्थियोंको भीतरके सुरक्षित स्थानमें ले जानेका बहुत बोझ आ पड़ा। इसके अलावा इन्हें बहुत-सी सम्पत्ति और औद्योगिक-केन्द्रोंके यन्त्रादि भी भीतरी भागोंमें पहुँचाने पड़े। जब सूचोके पतनका डर था, तो पीपिंग-हांको-रेल्वेको प्रतिदिन ३० गाड़ियाँ चलानी पड़ीं। तायरच्वांगमें चीनियोंकी जो विजय हुई, उसका बहुत-कुछ श्रेय रेलों और रेल-कर्मचारियोंको है। इस कालमें (जनवरीसे जून १९३८) रेलोंने ४,३३७,७७७ आदमियों और १,१४७,९९८ टन मालको वहन किया।

तीसरा काल है काफ़ेंग खाली करनेसे लेकर शत्रु द्वारा हांकोके घेरे जाने तकका, जब कि युद्ध विशेषतः उत्तर-पश्चिममें लुंगाई-रेल्वेके पश्चिमी हिस्सेके आस-पास हो रहा था। तुंगक्वान :नदीके उत्तरी किनारेपर लगी शत्रुकी तोपें बराबर किनारेके दूसरी ओर जानेवाले रेल-मार्गपर गोले बरसा रही थीं—और शत्रु-सेनाएँ धीरे-धीरे बूचंग-हांको क्षेत्रमें बढ़ती आ रही थीं। इस क्षेत्रके युद्धकी आवश्यकताओंको पूरा करनेका भार पीपिंग-हांको रेल्वेपर पड़ा, जिसको कैंटनसे सारा माल और यात्रियोंको

लानेका काम भी करना पड़ा था। शत्रु जानता था कि केंटन और हांगकांगका माल चीनमें पहुँचनेसे उसके फौजी मुक़ाबलेको कितना बल मिलेगा, अतः उसके यानों और तोपोंने बराबर इस रेल-मार्गपर हमले किए। पर इन सबके बावजूद यह रेल-मार्ग बन्द नहीं हुआ और दुर्घटनाएँ भी नाम-मात्रको ही हुईं। इस कालमें (जुलाईसे दिसम्बर १९३८) रेलोंने २,६४७,५८३ आदमियों और ४८६,१६३ टन मालको वहन किया।

चौथा काल केंटन और हांकोपर शत्रुका अधिकार होनेसे लेकर नानकिंगके पतन तकका है, जिसमें कि युद्ध हूपेहके पश्चिम, हूणानके उत्तर, केंटनके उत्तर-पश्चिम और क्वांगसी प्रान्तके दक्षिणमें फैला। केंटन-हांको-रेल्वेके दोनों छोर शत्रुके हाथोंमें चले जानेके कारण इसका यातायात-केन्द्र पश्चिममें हेंगयांग बनाया गया। नानचंगके पतन तक मुख्य रेल-मार्गका कार्य चेकियांग-क्यांगसी रेल्वेको ही करना पड़ा। कई महीनों तक किंगहुआसे हेंगयांग तक यातायात चलता रहा। हेंगयांग-क्वीलिन-रेल्वेके पूर्ण होते ही केंटन-हांको रेल्वेका सारा सामान इस मार्गसे काममें लाया जाने लगा। इस कालमें (जनवरीसे दिसम्बर १९३९) रेलोंने २,८२३,८७२ आदमियों और ३५९,८६३ टन मालको वहन किया।

पाँचवाँ काल जनवरीसे दिसम्बर १९४० का है, जिसमें प्रत्याक्रमणों एवं सफल प्रतिरोधसे शत्रुको आगे बढ़नेसे रोक दिया गया। इस कालमें रेलोंको ज़रा साँस लेने और अपने कार्यमें आवश्यक परिवर्त्तन एवं सुधार आदि करनेका अवसर मिला। अपनी अपूर्णताओं, सामानकी कमी एवं निरन्तर शत्रु-आक्रमणोंसे पैदा हुई कठिनाइयोंका सामना रेल-विभागने अपनी तत्परता एवं कर्त्तव्य-परायणतासे ही किया। इस कालमें रेलोंको ११,२१३,२९९ आदमियों (जिनमें से २,९१५,७२५ सेना-विभागके व्यक्ति थे) तथा १,६७१,५७७ टन मालको वहन करना पड़ा।

इसके बादसे अब तक कई रेलें नई बनी हैं और कई पुरानी उखाड़ डाली गई हैं। इस दौरानमें रेलोंमें अनेक सुधार भी किए गए हैं। इस कालमें लड़ाई कई नए क्षेत्रोंमें फैली है। गत सितम्बर तक रेलोंको ९,४,९२,९६३ आदमियों तथा १,१६८,०१० टन मालको वहन करना पड़ा। इन पाँच वर्षोंमें चीनके उत्तर, दक्षिण

और समुद्र-तटीय भागोंकी रेलोंका अधिकांश भाग या तो नष्ट हो गया या शत्रुके हाथमें चला गया। पर रेल और सैनिक-विभागने बड़े धैर्य, साहस और तत्परतासे काम लिया और इस हानिकी पूर्त्ति नए रेल-मार्ग बनाकर तथा क्षत-विक्षत मार्गोंकी मरम्मत करके की।

सड़कें, पशु और मज़दूर

समस्त चीनमें सड़कें नहीं बन पाई थीं कि यह युद्ध आरम्भ हो गया। इसके बाद ज्यों-ज्यों चीनकी रेलें शत्रुके हाथोंमें पड़ती गईं, सरकार सड़कोंका महत्व एवं आवश्यकता महसूस करने लगी। इस समय उसके मुख्य स्थल-मार्गोंको हम तीन विभागोंमें बाँट सकते हैं—उत्तर-पश्चिम, मध्य और दक्षिण-पश्चिम। उत्तर-पश्चिमका मार्ग हांकोसे होणान, शेंसी और कान्सू प्रान्तोंमें होता हुआ सिंक्यांगमें जा मिलता है। दक्षिण-पश्चिमका होणानसे सेच्वान, युन्नान, बर्मा, क्वांगसी और क्वांगतुंग होता हुआ पश्चिमको जाता है। मध्यका इन दोनोंको जोड़ता हुआ सेच्वानसे शेंसी और कान्सू तक गया है। पुरानी सड़कोंकी मरम्मत और नईकी तामीर बराबर जारी है। अब तक १०,००० किलोमीटरकी सड़कें और बनी हैं।

चूँकि चीनमें न तो मोटरें आदि बनती हैं और न पेट्रोलियमके सोते ही हैं, सड़कोंके यातायातमें कमी और दिक्कतोंका होना स्वाभाविक है। इसी कमीको पूरा करनेके लिए सरकारने आदमियों और लद्दू जानवरों द्वारा कुछ मालके यातायातका निश्चय किया है। वनस्पति तेल इसी प्रकार एकत्रकर जहाँ-तहाँ पहुँचाया जाता रहा है। सेच्वानको केन्द्र बनाकर प्रायः सभी प्रान्तोंमें इस यातायातकी लाइनें बिखरी हुई हैं। इनके द्वारा २८,८०० किलोमीटरके फासलेमें २१८,८०० टन माल वहन हुआ है।

नदियों द्वारा यातायात

नदियों द्वारा यातायात सबसे सस्ता है और युद्ध-कालके उपयुक्त भी। पाँच प्रान्तोंमें होकर बहनेवाली यांगसी नदी इस दृष्टिसे विशेष महत्वपूर्ण रही है। जब रेलोंको फौजी-यातायातसे ही दम मारनेकी फ़ुर्सत नहीं मिली, तो स्टीमरों और

छोटी-छोटी नावोंने नदी-मार्गसे बहुत-सी युद्ध-सामग्री और उद्योग-धन्धोंका सामान बहन किया। नानकिंग और चुंकिंगके बीच तो यह यातायात अपनी चरम सीमापर पहुँच गया। युनाइटेड यांगसी-शिपिंग-सर्विसने यह कार्य बड़ी तत्परता एवं सफलताके साथ किया। शरणार्थियों तथा उनके सामानको पहले नदी-मार्ग द्वारा हांकोमें एकत्र किया गया और फिर क्रमः चांगशा, इचांग और चुंकिंगमें। १९३८ में इस मार्ग द्वारा १८०,००० टन माल और १५०,००० यात्री लाए-ले जाए गए।

नदियोंमें चलनेवाली सभी नावोंके लिए सरकारी नियमोंका पालन करना आवश्यक है। उनका यातायात-कार्य केवल नगरों तक ही सीमित न रहकर ग्रामों तक फैला हुआ है। छिछले पानीमें और नदीकी धाराके प्रतिकूल जाने-आनेके लिए खास तरहकी नावें बनाई गई हैं। नावोंके पीछे बाँधनेके लिए कई लकड़ीकी अर्द्धअंडाकार नौकाएँ बनाई गई हैं, जो मालसे भरी नावोंके पीछे-पीछे चली जाती हैं। कई ज़हाजरानीकी कम्पनियोंने भी सरकारके साथ पूर्ण सहयोग किया। मिंगसेंग स्टीम-शिप-कम्पनीने हांको और इचांगसे शरणार्थियोंको लानेके काममें बहुमूल्य योग दिया है। आज भी यांगसी नदीके उत्तरी भागमें उसका कार्य पूर्ववत् जारी है।

हवाई-मार्ग

जल-मार्गकी भाँति हवाई-मार्गने भी चीनके यातायातमें बहुत सहायताकी है। युद्धसे पूर्व यह मार्ग ११,५९३ किलोमीटरके फासलेमें फैला था, जिसमें चाइना नेशनल एवीएशन-कार्पोरेशन और यूरेशिया एवीएशन-कार्पोरेशनके यान माल और यात्री लाते-ले जाते थे। सितम्बर १९३९ में यूरोपीय महायुद्ध छिड़नेपर दूसरी कार्पोरेशनके जर्मन हिस्सेदार अलग हो गए और वह चीनियों तथा अमरीकनोंकी सम्पत्ति हो गई। दिसम्बर १९३९ में सिनो-सोवियत् एवीएशन कम्पनीने लांशौसे हामी होकर आल्मा-आताका २,७५० किलोमीटर लम्बा हवाई-मार्ग स्थापित किया। चीनके यातायातके अलावा चीनी यान फ्रांसीसी हिन्दी-चीनके हनोई; हांगकांग, लाशियो और रंगून (बर्मा) तथा कलकत्ता (भारत) तक जाने-आने लगे। ब्रिटिश ओवरसीज़, के० एल० एम०, पेन-अमेरिकन एयरवेज़ और सोवियत् एयरवेज़के सहयोगसे चीनके यान अन्तर्राष्ट्रीय हवाई-मार्गोंका भी उपभोग करने लगे। इन सबको भी अगर

चीनकी युद्ध-सामग्रीको उत्पादन-वृद्धिमें योग देनेवाली सच्वानकी एक बड़ी भट्ठी (ब्लास्ट-फरनेस)
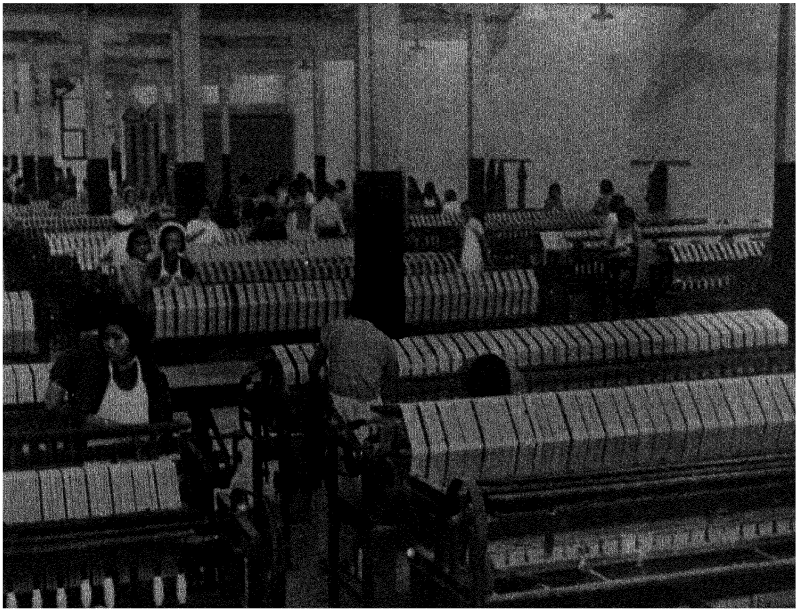
स्वतन्त्र चीनकी एक सूती कपड़ेकी एक मिल।

चीनकी महिला कत्तिनोंकी एक सहयोग-समिति ।

युद्धके शरणार्थी कम्बलोंके लिए ऊन साफ़ कर रह ह ।

गिना जा सके, तो युद्ध-कालमें चीनी हवाई-मार्गकी लम्बाईमें ५० प्रतिशतकी वृद्धि हुई है।

पर इस दिशामें चीनके हवाई-प्रयत्नोंके मार्गमें जो कठिनाइयाँ उपस्थित हुई हैं, उन्हें भी एकदम नज़र-अन्दाज़ नहीं किया जा सकता। जितने बड़े क्षेत्रमें चीनी यानोंको आना-जाना पड़ता था, उनके उपयुक्त साधन उनके पास नहीं हैं। मौसमकी प्रतिकूलताने कभी चीनी उड़ाकोंको विचलित नहीं किया। उनके खतरोंका सदा उन्होंने साहसपूर्वक सामना किया है। न मालूम कितने यान शत्रुके क्षेत्रमें मार गिराए गए और कितने क्षत-विक्षत होकर लौटे। हांको, हांगकांग और अन्य नगरोंसे प्रमुख अफ़सरों एवं प्रधान नागरिकोंको स्थानान्तरित करनेमें तो चीनी यानोंने कमाल ही कर दिखाया। युद्ध-कालके कारण अधिकांश हवाई-मार्गोंकी व्यवस्थामें घाटा ही रहा। किसी खास कालमें किसी खास कम्पनीको भले ही थोड़ा-बहुत लाभ हुआ हो, अन्यथा पेट्रोलकी मँहगी और कल-पुर्ज़ोंकी मँहगी तथा विरलताके कारण विशेषतः हानि ही हुई। फिर भी हवाई-यातायातमें वृद्धि ही हुई। १९३९ में इस मार्ग द्वारा ८९९ यात्री, ८,११९ किलोग्राम डाक और २५,९५७ किलोग्राम माल लाया-लेजाया गया। इन सभी तरहके यातायातोंमें लगभग ५० फ़ी सदी वृद्धि हुई।

डाक-विभाग

डाककी व्यवस्था युद्ध-कालीन चीनके इतिहासका दूसरा उज्ज्वल अध्याय है। युद्ध-जनित बाधाओंसे इस व्यवस्थामें किसी तरहकी शिथिलता आनेकी बजाए डाकके हरकारे अधिक उत्साह और साहसके साथ स्वतन्त्र चीनमें, युद्ध-क्षेत्रोंमें, गुरिल्ला-क्षेत्रोंमें और शत्रु द्वारा अधिकृत क्षेत्रमें डाक लेजाते-लाते रहे। जल, थल और हवाई मार्गोंसे डाकका काम न केवल सुव्यवस्थित ढंगसे चल रहा है, बल्कि उसमें आशातीत वृद्धि भी हुई है। डाकके ९ प्रधान मार्ग बराबर काम करते रहे और युद्ध-क्षेत्रके साथ ही डाकखाने भी पश्चिमकी ओर हटते गए। युद्ध-क्षेत्रसे लेकर दूसरी ओरके सीमान्त तक पोस्ट-बक्स लगे रहे। फौजी-डाक सैन्य-संचालनके साथ ही चलती रही। एक दर्जन युद्ध-क्षेत्रोंमें लड़नेवाले सैनिकोंको बराबर अपने परिवारके समाचार

मिलते रहे और परिवारवालोंको सैनिकोंका हाल-चाल। युद्धसे पहले चीनमें छोटे-बड़े कुल ७३,६९० डाकखाने थे; पर युद्धके बाद ९,८३५ पुराने डाकखाने बन्द हुए और १४,२०० नए खोले गए। युद्धसे पहले इस विभागमें २८,००८ कर्मचारी थे, जब कि अब ३९,३९९ हैं। अब इसका क्षेत्र भी ४३६,९८६ किलोमीटरसे बढ़कर ४८६,६८५ किलोमीटर हो गया है।

टेलीफोन और तार

टेलीफोन और तारकी व्यवस्था ३१ शाखाओं द्वारा चीन-सरकार ही करती है। युद्ध छिड़ जानेके बाद तार और टेलीफोनके २१ केन्द्रोंको तीन भागोंमें विभक्त किया गया और प्रत्येकका अध्यक्ष एक कमिश्नर बनाया गया, जिसे विशेषाधिकार दिए गए। इनके अधीन कई एजेंट गुरिल्ला-क्षेत्रोंमें काम करनेको नियुक्त किए गए; १९३८ में तार और टेलीफ़ोनके कुल १,१६४ दफ़्तर सार्वजनिक रूपसे काम कर रहे थे, जो कि अब १,१८६ हो गए हैं। पहले इनमें काम करनेवालोंकी संख्या १७,००० थी, जब कि अब २९,००० है। मरम्मत आदिका काम पहले २००० मिस्त्री करते थे, जब कि अब २१ तार-मरम्मत-संघ, ३ रेडियो-मरम्मत-संघ, ३१ लाइनोंकी मरम्मत करनेवाले संघ और २१ काल-विशेषमें मरम्मतका काम करनेवाले संघ हैं। इन संघोंके लोगोंने बम और गोले-गोलियोंकी बौछारोंमें भी रात-दिन एककर अपना काम बड़ी तत्परतासे किया है। युद्धके कारण तारकी ४६,००० किलोमीटर लाइनें नष्ट हुई हैं, जब कि इस विभागने ४७,६००० किलोमीटरकी नई लाइनें तैयार कर दी हैं। टेलीफोनकी २४,००० किलोमीटर लाइनें नष्ट हुई हैं, जब कि ३१,९०० किलो-मीटरकी नई लाइनें बन गई हैं। रेडियोसे समाचार भेजनेका काम प्रमुख न होकर तार व टेलीफोनका सहायक-मात्र है। इसके ११ केन्द्र और २४८ छोटे स्टेशन हैं। मित्र-राष्ट्रोंसे इन्हें पूरा-पूरा सहयोग मिलता है।

टेलीफ़ोन, तार और रेडियो-सैटोंकी हवाई-आक्रमणोंसे रक्षा करनेके लिए कई रक्षा-गृह बनाए गए हैं और आवश्यकताके लिए दूसरे यन्त्र भी तैयार रखे जाते हैं। हवाई - आक्रमणकी सूचनाएँ देश-भरमें भेजनेमें इनके द्वारा बहुमूल्य काम हुआ है।

संक्षेपमें चीनके यातायातके साधन असाधारण कठिनाइयों एवं बाधाओंका सामना करते हुए अपना काम करते रहे हैं। जो नष्ट होते गए, उनका स्थान नए साधन लेते गए। इसमें मुख्य हाथ रहा है लोगोंके अदम्य उत्साह, असाधारण साहस और अशेष अध्यवसायका, जिसके द्वारा भविष्यमें भी वे कष्टों और बाधाओंका सामना कर सकेंगे।

—फ्रांसिस के० पान

(२) खाद्य-सामग्रीकी व्यवस्था

चीनमें खाद्य-सामग्रीकी समस्या है युद्ध-रत सैनिकों और नागरिकोंकी आवश्य-कताको पूरा करनेके लिए पर्याप्त खाद्य उत्पन्न करना और यातायातके साधनों द्वारा उसका समुचित विभाजन करना। युद्धसे पहले चीन बहुत-सी खाद्य-सामग्री बाहरसे मँगाया करता था; किन्तु इधर सरकारने इस दिशामें भी स्वावलम्बी होनेके प्रयोग किए हैं और यह सिद्ध कर दिया है कि विज्ञानकी सहायतासे किस प्रकार थोड़े ही समयमें खेतीकी पैदावार बढ़ाई जा सकती है।

खेती और उत्पादन : चीनके पास भूमिकी कमी नहीं है। उसके २७ प्रान्तोंके १२,२७४, ३६२, २४० मो (१ मो= ०.१६४४ एकड़) के क्षेत्रफलमें से ५,४९४,७७० मो में चीनके १८ प्रान्त स्थित हैं और बाकी ६,७८०,१८७, ४७० मो में ९ सीमा-प्रान्त। पर उसकी खेतीका वर्गक्षेत्र नानकिंग-विश्वविद्यालयके प्रो० चि-मिंग चियाओके कथनानुसार दोनों भागोंमें १,२१३,३५०,०१५ और २९२, ४४०,७७६ मो है। इससे पाठक चीनकी बंजर भूमिका भी अनुमान कर सकते हैं। जिस भू-भागमें खेती होती है, उसमें ६८.५ प्रतिशत भागमें अनाज बोया जाता है। युद्धसे पहलेकी वार्षिक उपजका औसत इस प्रकार है :—

अनाज	कुल उपज	
धान	९३७,७०५,०१०	पिकुल
गेहूँ	५४२,०२४,२५२	,,
जौ	२००,८८५,३७७	,,

* १ पिकुल=२५ सेर

काओलियांग	२३९,२३०,५२०	पिकुल
मक्का	१८४,२१५,०८५	„
बाजरा	१९९,६९५,८७९	„
ओट	१७,९३२,०००	„
आलू	४४७,५२४,४९६	„

अनुमानित खपत : ऊपर जिन अनाजोंका उल्लेख किया गया है, मोटे तौरपर सैनिकों और नागरिकों द्वारा मुख्य खाद्य-पदार्थोंके रूपमें उन्हींका प्रयोग होता है। इसके अलावा इनमें से कुछ जानवरोंको दानेके रूपमें खिलाए जाते हैं, कुछसे शराब खींची जाती है और कुछ अगली फस्लके बीजके रूपमें रख लिए जाते हैं। उदाहरणके लिए चावलकी पैदावारका ८० प्रतिशत भाग लोगोंके खानेके, ३ प्रतिशत पशुओंके दानेके रूपमें तथा ६ प्रतिशत अन्य कामोंमें आता है और ८ प्रतिशत अगली फस्लके बीजके रूपमें सुरक्षित रख लिया जाता है। गेहूँका ७४ प्रतिशत खानेमें और ६ प्रतिशत पशुओंके दानेमें ९ प्रतिशत अन्य कामोंमें काम आता है तथा ६ प्रतिशत अगली फस्लके बीजके रूपमें रख लिया जाता है। काओलियांगका ४२ प्रतिशत खानेमें, ?३ प्रतिशत पशुओंके दानेमें तथा २७ प्रतिशत अगली फसलके बीजके रूपमें अथवा अन्य कामोंमें खर्च होता है।

समस्त देशकी अनाजकी खपतका अन्दाज़ लगानेके लिए यह ध्यान रखना आवश्यक है कि स्त्रियाँ और बच्चे पुरुषोंकी अपेक्षा कम खाते हैं। प्रो० चि-किंग चियाओके हिसाबके अनुसार चीनकी कुल ४२४,५२२,९३६ की आबादीको खानेके अनुपातसे ३२२,०३६,७८३ पुरुष-इकाइयोंके रूपमें गिना जा सकता है। एक आदमीके लिए आवश्यक ३,२९५ केलोरी गर्मी पहुँचानेके लिए जितना खाना आवश्यक है, उस हिसाबसे चीनमें पैदा होनेवाला कुल अनाज २८९,१५२,३८२ पुरुष-इकाइयोंके लिए—आबादीके ९/१० भागके लिए—ही पर्याप्त हो सकता है। अतः शेष दसवें भागको भूखों मरनेसे बचानेके लिए उसे विदेशोंसे खाद्य-पदार्थ मँगाने पड़ते रहे हैं। पर उन्हें मिला कर भी कुल अनाज ९२.५ प्रतिशत आबादीके लिए ही पर्याप्त

होता रहा है, जिसका स्पष्ट अर्थ यह है कि बहुत-से लोगोंको अपर्याप्त भोजन मिलता रहा है।

युद्धके बादसे अब तक चीनके अनेक समुद्र-तटीय स्थानोंपर शत्रुका कब्ज़ा हो जानेसे न केवल बाहरसे खाद्य-सामग्री आनेकी असुविधा और उन स्थानोंकी पैदावारकी हानि ही हुई है, बल्कि भीतरी भागोंमें शरणार्थियोंकी संख्या बढ़नेसे खाद्य-सामग्रीके विभाजनकी समस्या भी बड़ी दुरूह हो चली है। इसका सामना करनेके लिए सरकारने अनाजोंका उत्पादन बढ़ानेकी सफल चेष्टा की है। ७ जुलाई, १९३७ को हुई मार्कोपोलो-पुलकी घटनाके दो मास बाद ही सरकारने राष्ट्रीय कृषि-अनुसन्धान विभागको आदेश दिया कि वह सभी कृषि-संस्थाओंके साथ पूर्ण सहयोग करे। १९४० में जंगलात और कृषि-विभागकी नींव पड़ते ही इस कार्यके लिए एक विशेष कमीशन नियुक्त किया गया और खेतीकी पैदावार बढ़ानेके कार्यक्रमपर अमल करनेके लिए ९,५००,००० डालर मंजूर हुए। १९४२ में इस कार्यक्रमको अधिक व्यापक बनानेके लिए खर्चकी यह रक़म बढ़ाकर १४,७८४,००० डालर कर दी गई। युद्ध-कालकी कठिनाइयोंके बावजूद इस दिशामें सरकारको जो सफलता मिली है, उसीका यहाँ संक्षेपमें उल्लेख किया जायगा।

चीनके उत्तर-पश्चिमी और कुछ सीमा-प्रान्तोंको छोड़कर शेष भागमें ज़मीन इतनी उपजाऊ और आब-हवा इतनी अनुकूल है कि सालमें दो फस्लें बोई जाती हैं। गर्मीमें जहाँ दाल और मोटा अनाज बोया जाता है, सर्दीमें वहीं गेहूँ बोया जाता है। पर राष्ट्रीय कृषि-विभागकी रिपोर्टके अनुसार ऐसा गर्मीकी फस्लवाली भूमिके तीन-चौथाई भागमें ही हो सका है। १९३८ में चावलकी ६२ प्रतिशत भूमिपर ही सर्दीकी दूसरी फस्ल बोई गई। बहुत-सी बेकार ज़मीनको भी खेतीके लायक बनाया गया। अन्य भूमिका ४९ प्रतिशत भाग आबपाशी आदिकी कठिनाईके कारण सर्दीको बुआईके काममें नहीं लाया जा सका। सर्दीमें दूसरी फस्ल बोनेके कार्यक्रमसे स्वतंत्र चीनमें (सेच्वान, युन्नान, क्वीशो, हूणान, क्वांगसी, फूकीन, क्वांगतुंग, क्वांगसी, निन्सिया, सिंघाई, शेंसी, कान्सू आदि और होणान, हूपेह तथा चेकियांगके कुछ भाग) कृषिकी जो उन्नति हुई है, वह इस प्रकार है :—

अनाज	काल-क्रमसे खेतीकी ज़मीनमें उन्नति (१००० मो में)				
	१९३१-३७	१९३८	१९३९	१९४०	१९४१
गेहूँ	११०,०२३	१११,०२९	११४,७४२	११८,८७०	१२५,०६९
तिलहन	४२,४९४	४३,७४०	४६,४०१	५४,४६९	५८,४८९
जौ, मटर, ओट आदि	११७,००७	११५,३७०	११५,५३४	११५,३३०	११६,७४१
योग	२६९,५२४	२७०,१४०	२७६,६७७	२८८,६६९	२९८,२९९
१९३१-७के मुकाबलेमें					
खेतीकी ज़मीनकी वृद्धि		६१६	७,१५३	१९,१४५	२८,७७५
प्रतिशत		०.२	२.७	७.१	१०.७
पिछले सालके मुक़ाबलेमें					
खेतीकी ज़मीनकी वृद्धि		६१६	६,५३७	११,९९२	९,६३०
प्रतिशत		०.२	२.४	४.३	३.४

[राष्ट्रीय कृषि-अनुसन्धान-विभागकी रिपोर्टके आधार पर]

इस प्रकार खेतीका क्षेत्र बढ़ानेके अलावा सरकारने प्रति मो उत्पत्तिका अनुपात बढ़ानेके लिए कुछ अन्य उपाय भी किए, जिनमें से खेतीके कीटाणुओं तथा बीमारियोंका प्रतिरोध, आबपाशीके साधनोंकी उन्नति, अच्छी खादका प्रयोग आदि मुख्य हैं। १९४१ में ६,४५४,६३८ मो क्षेत्रमें खेतीकी बीमारियाँ रोकनेके लिए किए गए प्रतिरोधके फल-स्वरूप २० प्रतिशत हानि कम हुई—अर्थात् १९७२,२१२ पिकुल अनाज कीड़ों आदिसे बचाकर मनुष्योंका पेट भरनेके काममें लाया गया। हरी खाद, हड्डियोंके चूर्णकी खाद तथा खलीकी खाद आदिसे भी १,६१,०७७ पिकुल अनाज अधिक पैदा हुआ। इसी प्रकार आबपाशीके साधनोंकी उन्नति एवं सुव्यवस्थासे भी २,९८७,९७२ पिकुल अनाजकी पैदावार बढ़ी। यदि युद्ध न हो रहा होता, तो शायद इस दिशामें सरकारको और भी अधिक सफलता मिलती। किन्तु चीनकी उपजाऊ भूमि, आबहवा और क्षेत्रको देखते हुए यदि इस समस्याको वैज्ञानिक दृष्टिसे हल किया जाय, तो युद्धके बाद चीनके खाद्य-पदार्थोंमें स्वावलम्बी हो जानेकी आशा अवश्य फलवती होगी।

यहाँ हम संक्षेपमें कुछ अनाजोंकी उन्नतिके लिए किए गए प्रयत्नोंका उल्लेख करेंगे। चावलोंमें कई बेहतर क़िस्मके चावल बोए गए। इस समय वहाँ १३५ अच्छी क़िस्मोंके चावल होते हैं। किसानों द्वारा बोई जानेवाली क़िस्मोंकी अपेक्षा ये चावल प्रति मो १९६ केट्टी अधिक होते हैं। औसतन ये चावल साधारण चावलोंके मुक़ाबलेमें प्रति मो ५२ केट्टी अधिक होते हैं। १९४१में ये २,३२०,९१७ मो में बोए गए, जिनमें १,१४१,७१५ पिकुल चावल पैदा हुए। कई जगह साधारण चावलके खेतोंमें बढ़िया चावल पैदा किया गया और १० प्रान्तोंमें १,१४८,७२५ पिकुल साधारण चावल अधिक पैदा हुआ। १९४१ में ५ अन्य प्रान्तोंमें भी यह क्रम दोहराया गया, जिसके परिणाम-स्वरूप १३६,००५ पिकुल चावल अधिक पैदा हुआ। चावलके अधिकांश क्षेत्रोंमें दो तरहके बीज बोए जाते हैं—एक वे, जो जल्दी पनप जाते हैं और दूसरे वे, जो ज़रा अधिक समयमें पनपते हैं। इससे प्रति मो १५० से २०० केट्टी अधिक चावल पैदा होता है। आज-कल चीनके अधिकांश किसान यह दोहरी फ़स्ल बोते हैं, जिसके फल-स्वरूप १,३७९,२४४ पिकुल चावल अधिक पैदा होने लगा है।

गेहूँ, मटर, काओलिंग, आलू, दालें तथा मक्का आदिकी पैदावार भी इसी प्रकार बढ़ाई गई। गेहूँकी क़िस्मोंमें भी काफ़ी उन्नति की गई। युद्धसे पूर्व ५०००,००० मो भूमिमें कई अच्छे क़िस्मके गेहूँ बोए गए, जिनके फल-स्वरूप प्रति मो १०० केट्टीकी पैदावार बढ़ गई। औसतन कुल मिला कर गेहूँकी पैदावार ५० केट्टी प्रति मो बढ़ गई। इस दौरानमें गेहूँके खेतोंका खासा हिस्सा शत्रुके कब्ज़ेमें चला गया, जिसके परिणाम-स्वरूप अब ९ प्रान्तोंकी ४३१,०२७ मो अतिरिक्त भूमिमें गेहूँ बोया जाने लगा है, जिससे २२५,४१५ पिकुल पैदावार बढ़ गई है। इसके अलावा गेहूँ, मटर आदिकी दो फ़स्लें बोई जाती हैं, जिसके कारण ४२,६२०,७४५ पिकुल गेहूँ पैदा होने लगा है। आलू तथा कई मोटे अनाजोंकी खेती बंजर पड़ी भूमिमें की जाने लगी है। इस प्रकार उनकी उत्पत्ति औसतन ५०० से १००० केट्टी प्रति मो होती है। इस काममें १९४१ से १२,५३६,७९४ मो भूमि लाई जा रही है, जहाँ ये चीज़ें ४०,०९२,०२५ पिकुल पैदा होती हैं। तम्बाकू तथा

अन्य ग़ैरखाद्य पदार्थोंकी खेतीके काममें आनेवाली भूमिको भी खाद्य-पदार्थोंकी खेतीके काममें लाया जा रहा है, जिससे उनकी कुल पैदावार बहुत बढ़ गई है। आलूकी क़िस्म भी सुधारी गई है। १९४१ में १८,६४८ मो ज़मीनमें बेहतर क़िस्मके आलू बोए गए, जिसके परिणाम-स्वरूप ८३,२९८,९३७ पिकुल आलू पैदा हुए। इसी प्रकार अन्य चीजोंकी पैदावार बढ़ानेका भी सफल प्रयत्न किया गया है।

—पी० डब्लू० त्सोऊ

(३) प्रवासी चीनियोंकी सहायता

परदेशमें बैठा हुआ आदमी अक्सर घरके सुख-स्वप्नोंकी कल्पना करता है और उसके मोहसे मुक्त नहीं हो पाता। पर घर लौटना बहुधा उसके लिए दुःखद हो जाता है। दक्षिणी सागरोंके तटवर्त्ती देशोंमें जीविकाकी खोजमें जाकर बसे चीनियोंमें से १० लाखके लगभग जब जापान द्वारा दक्षिण-पश्चिमी प्रशान्त महासागरमें युद्ध छेड़े जानेके कारण स्वदेश लौटे, तो उन्हें भी कुछ ऐसा ही अनुभव हुआ। युद्धके बाद चीनके समुद्र-तटीय लोगोंके भीतरी भागोंमें पहुँचने-से शरणार्थियोंके लिए कार्य और पेट भरनेकी व्यस्था करनेका काम ही सरकारके सामने काफ़ी था; फिर भी उसने दक्षिणी सागरोंसे लौटे प्रवासी चीनियोंकी सहायताके लिए १००,०००,००० डालर मंजूर किए। इनमें से ३४,४८३,००० डालर राष्ट्रीय सहायता-कमीशन, कुओमिन्तांग प्रवासी-समिति, शिक्षा-विभाग तथा अन्य संस्थाओं द्वारा उनके वहाँसे लौटे चीनियोंके लाभार्थ खर्च भी किए जा चुके हैं।

संकटके समय दक्षिणी सागरोंके प्रवासी चीनियोंकी सहायता करना चीन-सरकारका कर्त्तव्य भी है। डा० सुनयात-सेनने इन्हें 'चीनी क्रान्तिके जन्मदाता' कहा है। चीनकी क्रान्तिको आर्थिक तथा अन्य प्रकारसे सहायता देकर इन्होंने ही सफल बनाया। चीन-जापान युद्धसे पहलेके २०-३० वर्षोंमें ये औसतन ३००,०००,००० डालर प्रतिवर्ष दान, चन्दा एवं सहायताके रूपमें चीन भेजते रहे हैं। इससे चीनके व्यापारका बक़ाया २००,०००,००० डालर पूरा करनेमें भी सरकारको बड़ी सुविधा रही है। १९३७ में जब सरकारने राष्ट्रीय सहायता बोर्ड

जारी किए, तो इन प्रवासी चीनियोंने ५००,०००,००० डालरके—जारी किए हुए बौंडोंका पाँचवां हिस्सा—बौंड खरीदे।

अब तक उनकी सहायताके लिए प्रान्तों, केन्द्रों एवं संस्थाओं द्वारा जा खर्च किया गया है, उसका विवरण इस प्रकार है :—

प्रान्त—	क्वान्तुंग	१०,०००,०००	डालर
	युन्नान	९,५००,०००	”
	फूकीन	५,१००,००७	”
	क्वांगसी	४,०००,०००	”
	क्वीशो	५००,०००	”
	चेकियांग	५०,०००	”
	हूणान	५०,०००	”
	क्यांगसी	५०,०००	”
देशी केन्द्र—	चुंकिंग	१५०,०००	”
	किन्हवा	२०,०००	”
विदेशी केन्द्र—	कलकत्ता	५००,०००	”
	लाशियो	५००,०००	”
	बटाबिया	४००,०००	”
संस्थाएँ—	शिक्षा-विभाग	२,०००,०००	”
	केन्द्रीय सेक्रेटेरिएट	१,२००,०००	”
	सूचना-विभाग	२००,०००	”
	युद्ध-कालीन जन-समिति	१००,०००	”
	विदेशी-वार्त्ता-कमीशन	५०,०००	”
	केन्द्रीय संगठन-बोर्ड	५०,०००	”
	शिक्षा-पुनर्निर्माण-समिति	५०,०००	”
	केन्द्रीय विदेशी-वार्त्ता-बोर्ड	१३,०००	”
	योग	३४,४८३,०००	डालर

दक्षिणी सागरों, हांगकांग और शंघाईके जिन प्रवासी चीनियोंको अब तक सहायता दी गई है, उनकी निश्चित संख्याका पता चलना कठिन है। जून, १९४२ तक राष्ट्रीय सहायता कमीशन द्वारा १,१९३,१७० व्यक्तियोंको सहायता दी गई है। क्वान्तुंगमें २६ अप्रैल तक ६५०,७८० ; क्वांगसीमें ५ अप्रैल तक ५३३, ५६३ ; फूकिनमें १२ अप्रैल तक २,६२६ ; क्यांगसीमें अप्रैलके अन्त तक ८०८ ; हूणानमें १० अप्रैल तक १,४७९ ; युन्नानमें २० मार्च तक ३,६२० और क्वीशोमें ३१ मार्च तक ३१२ प्रवासी चीनियोंकी सहायता की गई है।

ज्यों ही जापानने दक्षिणी सागरोंके तटवर्ती देशों एवं द्वीपोंपर धावा बोला, चीनके राष्ट्रीय सहायता कमीशनने अपने काऊलून केन्द्रको तार द्वारा सूचना दी कि वह आनेवाले तथा हांगकांग और काऊलूनके प्रवासी चीनियोंकी सहायतार्थ अपने कोषसे २४०,००० डालर निकाल ले। इसी प्रकार क्वांतुंगकी प्रान्तीय सरकारकी राजधानी शाओक्वानकी अपनी शाखाको भी कमीशनने काऊलून और हांगकांगसे आनेवाले प्रवासी चीनियोंकी सहायतार्थ क्यांगसीकी सीमाके निकट क्वांतुंगके उत्तरमें नानसियुंगमें ५०,००० डालरकी लागतसे केन्द्र खोलनेका आदेश दिया। पर इतनी रक़म अपर्याप्त थी, अतः १००,००० डालर और लगाकर शरणार्थी प्रवासी चीनियोंको काम देनेके लिए क्वांतुंगमें कारखाने खोले गए। इसके अलावा क्वांतुंगकी प्रान्तीय सरकारने भी २००,००० डालरकी रक़म मंजूर की। २१ दिसम्बर, १९४१ को चुंकिंगमें कई सरकारी विभागोंकी बैठकें हुईं और सबने मिलकर इस दिशामें शीघ्र ही कुछ करनेका निश्चय किया। दक्षिणी सागरोंके द्वीपोंमें स्थित चीनी दूतावासोंको ताकीद कर दी गई कि वे प्रवासी चीनियोंकी सहायताके लिए केन्द्र स्थापित करें। सेन दिएगो, मेदन, होनोलूलू और मनिल्लामें सर्वप्रथम ऐसे केन्द्र खुले।

इस कार्यका मुख्य केन्द्र था राष्ट्रीय सहायता कमीशन, जो शिक्षा-विभाग, विदेशी-विभाग, सेक्रेटेरिएट, केन्द्रीय कुओमिन्तांग, विदेशी-वर्त्ता-बोर्ड आदिके सहयोगसे काम करता था। इसके द्वारा १००,००० डालरकी रक़म इस कार्यके लिए खर्च की जानी मंजूर हुई। इसमें से १०,०००,००० डालर क्वांतुंग प्रान्तको

(कई किस्तोंमें) दिए गए। प्रान्तीय सरकारने शाओक्वान दफ़्तर, राष्ट्रीय सहायता-कमीशनकी शाखा तथा अन्य ऐसी ही संस्थाओं द्वारा इस कार्यका सम्पादन किया। समुद्र-तटपर पहुँनेवाले प्रवासियोंको लाने और उनकी सहायता करनेके लिए सरकारने कई कार्यकर्त्ताओंकी टुकड़ियाँ बना दीं। इनका केन्द्र शाओक्वानमें रखा गया और शाखाएँ वेईयांग, फेंगशुन, हिंगनिंग, काओयाओ, काएपिंग और मोयमिंगमें २०-२० मीलके फासलेपर ७३ सहायताकी चौकियाँ खोली गईं। १५ फरवरी, १९४२ तक कोई ५००,००० शरणार्थी मकाओ, तोइशान, वेइयेंग, पाओआन, स्वातो और क्वांगशोवान होकर क्वांतुंग पहुँचे। जापानियोंकी घोषणानुसार फरवरीके अन्त तक ५७०००० चीनी हांगकांगसे चीन आए और ३००,००० ने सरकारी सहायता-केन्द्रोंमें अपने नाम दर्ज कराए। इनमें से प्रत्येकको भोजन-छाजनके अलावा २ डालर प्रतिदिनके हिसाबसे हाथखर्च भी दिया गया। कुछको उनके गाँवोंमें भेज दिया गया और कुछको सरकारी कल-कारखानोंमें काम दिया गया। १,३९२ शरणार्थी छात्रोंको स्कूल-कालेजमें भर्त्ती किया गया और उन्हें पढ़ाईके तथा अन्य खर्चोंके लिए १०० डालर स्कूलके तथा २०० डालर कालेजके प्रत्येक छात्रके हिसाबसे एकमुश्त दिए गए। जूनके अन्त तक छात्रोंकी संख्या ७००० तक पहुँच गई, जिसके फल-स्वरूप सरकारको कई नई शिक्षण संस्थाएँ खोलनी पड़ीं।

युन्नान प्रान्तको इस कार्यके लिए ९,५००,००० डालर पाँच किस्तोंमें दिए गए। १,५०००,००० की पहली किस्त बर्माकी लड़ाई छिड़ते ही दी गई, जब कि लाशियो होकर हज़ारों चीनी बर्मासे कूमिंग पहुँचे। लाशियोसे चीनियोंके पीछे हटने और वान्तिंगपर जापानियोंका अधिकार होनेके बाद जब लड़ाई युन्नानकी सीमाके निकट आ पहुँची, तो बर्मा और दक्षिणी एशियासे कूमिंग पहुँचनेवाले चीनियोंकी संख्या लगभग १०,००० बढ़ गई। इस अवसरपर राष्ट्रीय सहायता कमीशनने २,०००,००० डालर की दूसरी किस्त युन्नान-सरकारको दी। सहायक टुकड़ियोंके सामने इन शरणार्थियोंको केवल कूमिंग ले जानेकी ही समस्या नहीं थी, बल्कि उन्हें हवाई हमलोंसे बचाना भी था। इस कार्यके लिए सरकारने १,५००,०००, डालर की तीसरी किस्त दी। इस रक़ममें से ४० बड़ी लारियाँ शरणार्थियोंको भीतर पहुँचानेके

लिए खरीदी गईं। सरकार द्वारा दी गई १,०००,००० डालरकी चौथी किस्तसे कूमिंगके पास शरणार्थियोंके लिए एक नए ढंगका गाँव बसाया गया। ३,४००,००० डालरकी पाँचवीं किस्त गत जूनमें शरणार्थियोंकी सहायताके अन्य कामोंके लिए दी गई। इसके अलावा बर्मा-युन्नान रेल्वेके डाइरेक्टर और रंगून-स्थित चीनी राजदूतको ५००,००० डालर इस कार्यके लिए दिए गए। इसी प्रकार लाशियोके राजदूतको ५००,००० और बटावियाके राजदूतको ४००,००० शरणार्थियोंको चीन पहुँचानेकी व्यवस्था करने तथा अन्य सहायता-कार्यौंके लिए दिए गए।

क्वांतुंग और युन्नानके बाद फूकिन प्रान्तने इस दिशामें विशेष कार्य किया है, क्योंकि दक्षिणसे आनेवाले अधिकांश चीनियोंके पुरखोंके घर इसी प्रान्तके चांगचो, चुआनचो तथा अन्य स्थानोंमें हैं। इसे मिले ५,१००,००० डालरमें से ५,०००,००० प्रान्तीय सहायता-केन्द्रों द्वारा खर्च किए गए और १००,००० पूतीन-स्थित प्रवासी चीनियोंके परिवार आदिकी सहायताके लिए खर्च किए गए।

क्वांगसीके सहायता-विभागको मिले ४,०००,००० डालर सांग्वू, क्वीपिंग, तेंगयुन, क्वीशीन, वातलम, हिंगयेह, लूच्वान, ल्यूशो, क्वोलिन, किंगचेंगक्यांग, सिंगसी, शेनपीन, लीपिंग, शांगकिन, लुंगस्तिन, ल्यूक्यांग तथा ल्यूचेंग आदि केन्द्रों द्वारा खर्च किए जा रहे हैं। इससे न केवल शरणार्थियोंकी भोजन-छाजनसे ही सहायता की जाती है, बल्कि उनके बच्चोंकी शिक्षा, उन्हें नौकरी दिलाने, स्वतंत्र व्यवसाय करनेके इच्छुक शरणार्थियोंके एक स्थानसे दूसरे स्थानमें ले जानेके लिए एक आवश्यक सहायता-समिति है, जिसके खर्चके लिए ५००,००० डालर मंजूर किए गए हैं।

इसी प्रकार अन्य प्रान्तोंमें भी सहायता-कार्य राष्ट्रीय सहायता-कमीशनकी शाखाएँ इस कार्यके लिए खुली सरकारी तथा ग़ैर-सारकारी संस्थाओं तथा प्रान्तीय अधिकारियोंके सहयोगसे करती हैं। क्यांगसीके लिए स्वीकृत हुई ५०,००० डालरकी रक़म शंघाईसे क्यांगसी आनेवाले शरणार्थियोंकी सहायताके लिए दक्षिण क्यांगसीके कमिश्नरको दे दी गई। शंघाईसे आए शरणार्थियोंकी सहायतार्थ किन्हवाके सहायता केन्द्रको २०,००० डालर दिए गए। यह केन्द्र २८ मई, १९४२ को

किन्हवापर जापानियोंका कब्ज़ा होनेसे कुछ देर पहले तक बराबर काम करता रहा। युन्नान तथा अन्य स्थानोंसे चुंकिंग पहुँचनेवाले शरणार्थियोंकी सहायतामें चुकिंगने भी १५०,००० डालर खर्च किए। शिक्षा-विभागने २,०००,००० की रक़म पूर्व, दक्षिण और उत्तरसे आनेवाले शरणार्थी छात्रोंकी शिक्षाके प्रबन्धमें खर्च की।

कुओमिन्तांगका केन्द्रीय दफ़्तर शरणार्थियोंके लिए १,२००,००० डालरकी लागतसे एक सराय बनवा रहा है। इसके तैयार होने तक शरणार्थी विदेशी-वार्त्ता-कमीशन द्वारा ५०,००० डालरकी लागतसे बनवाए गए अस्थायी आवासोंमें रहेंगे। शरणार्थियोंमें से जो सांस्कृतिक कार्यकर्त्ता और पत्रकार हैं, उनकी सहायताके लिए सूचना-विभागकी सांस्कृतिक समितिने २००,००० डालरकी रक़म मंजूर की है। इनके अलावा अन्य कई सभा-समितियाँ शरणार्थियोंको काम दिलाने तथा अन्य प्रकारसे सहायता पहुँचानेका काम करती हैं। ईसाई प्रचार-संस्थाओंसे भी इस कार्यमें विशेष सहायता मिली है।

गत १० मईको चुंकिंगमें दक्षिणी-सागरोंके प्रवासी चीनियोंकी एक समिति स्थापित हुई है, जो उनकी वर्त्तमान समस्याओं तथा युद्धके बादकी उनकी स्थिति निश्चित करनेके काममें संलग्न है। इसका अन्यतम ध्येय चीनियों और प्रवासियोंमें सद्भावना तथा सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करना भी है। इसके अध्यक्ष जनरलिसिमो च्यांगकाई-शेक और उपाध्यक्ष डा० एच० एच० कुंग हैं। कुओमिन्तांग तथा विविध सरकारी विभागोंके अधिकारी भी इस संस्थासे सम्बद्ध हैं।

पर चीन लौटनेवाले दाक्षणी सागरोंके इन प्रवासी चीनियोंकी संख्या वहाँके चीनियोंके अनुपातमें बहुत अधिक नहीं है। प्रशान्त महासागरके युद्धसे पहले मलायामें २,४००,००० ; डच पूर्वीद्वीप-समूहमें २,०००,००० बर्मामें ३००,००० तथा दक्षिणी सागरोंके द्वीपोंमें १०,०००,००० चीनी रहते थे। दक्षिणी एशियाके इन भागोंमें ये लोग आजसे कोई २००० वर्ष पूर्व—चिन और हन राजवंशोंके शासन-कालमें—गए थे। ५३६ वर्ष पूर्व चीनका पहला मुसलमान समुद्र-यात्री एडमिरल चेंग हो (या सान-पाओ) ६३ जहाज़ोंमें २२,२५० चीनियोंको लेकर दक्षिणी द्वीपोंकी ओर भाई-चारेकी यात्राको निकला था। इनमें से बहुत-से लोग स्थायी

रूपसे वहीं रह गए। सान-पाओ नगर, मलक्काकी सान-पाओ दीवार और जावाका समरंग शहर उसीकी स्मृतिमें बने हैं। दक्षिणी टापुओंकी कई मस्जिदें भी उसके नामपर ही बनी हैं। अभी हाल ही में बोर्नियोमें ई० पूर्व ६०० सालके चीनी सिक्के पाए हैं। फिलीपीनके लोग भोजन, रसोईघर और रसोईके बर्त्तनों तथा परिजनोंके पतों आदिके लिए जिन शब्दोंका प्रयोग करते हैं, वे चीनके फूकीन प्रान्तमें बोली जानेवाली भाषाके शब्द हैं।

दक्षिणी सागरोंके जिन स्थानोंपर जापानने आक्रमण किया है, वे यद्यपि चीनसे कहीं अधिक पाश्चात्य शक्तियोंके लिए महत्वके हैं; पर नुक़सान इससे चीनियोंको ही विशेष हुआ है। कुओमिन्तांगके विदेशी-वार्त्ता-विभागके डाइरेक्टर मि० लि० पू-शेंगके कथनानुसार अकेले मलायाके प्रवासी चीनियोंको जापानी आक्रमणके परिणाम-स्वरूप १६०,०००,००० डालरका नुक्सान हुआ है। बर्मामें बहुत-से चीनियोंको जापानके समर्थकोंने मार डाला और जापानी सैनिकोंने उनकी ज़मीन-ज़ायदाद सब छीन ली। इस लूटका कुछ भाग उन्होंने अपने लिए रख लिया और कुछ बर्माके लोगोंमें बाँट दिया। लाशियोसे प्राण लेकर भागे हुए शरणार्थी जब पाओशान पहुँचे, तो देखा कि सालवीनका पुल नष्ट हो चुका है। नदीके किनारे लाशें बिखरी थीं। शरणार्थी भी शत्रुकी आँखसे बचनेको उन्हींके साथ लेट गए। पर जब जापनी पहुँचे, तो उन्होंने प्रत्येक लाशको संगीनसे छेद डाला। इस प्रकार कई शरणार्थी अकाल मारे गए।

यद्यपि इस कार्यको सुचारु रूपसे करनेके मार्गमें सरकारके सामने आर्थिक तथा कई अन्य कठिनाइयाँ हैं, फिर भी वह अपनी शक्ति भर प्रयत्न कर ही रही है। अभी इस कार्यका आरम्भ-मात्र समझना चाहिए। शरणार्थियोंको काम देनेके लिए नए-नए कारखाने खोले गए हैं। उनके द्वारा खेती करवानेके लिए बंजर ज़मीनको उपजाऊ बनाया जा रहा है। इस प्रकार उन्हें फिर अपने पावोंपर खड़ा करनेमें कुछ समय अवश्य लगेगा।

—हाथोर्न चेंग
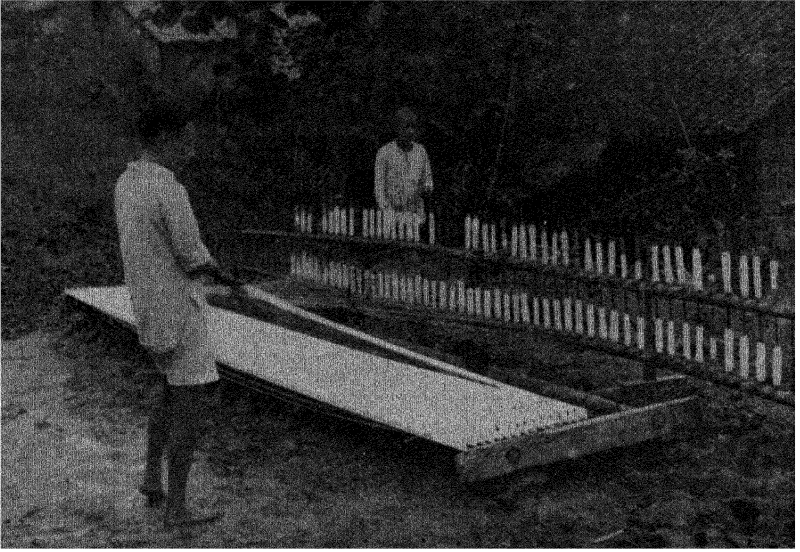
चीनकी एक सूत कातनेवाली सहयोग-समिति ।
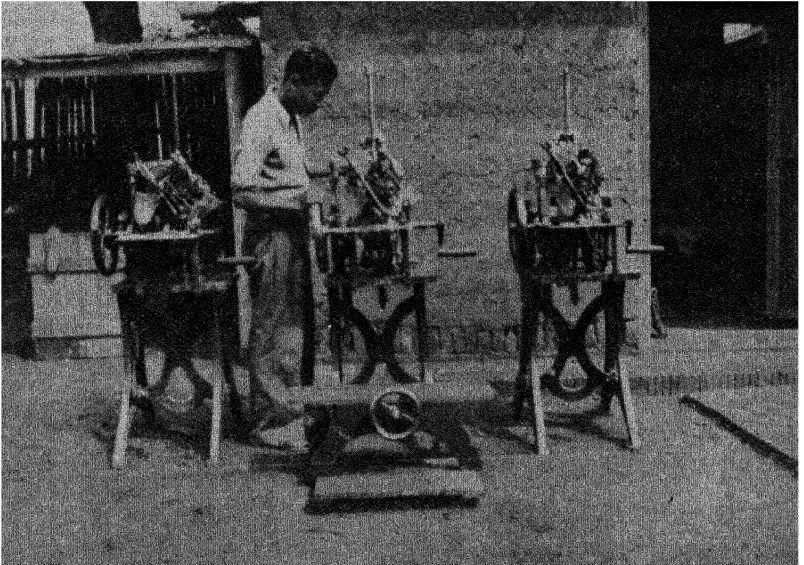
इंडस्को द्वारा निर्मित होनेवाली आधुनिक मशीनें ।

चुंकिंगपर हुए एक हवाई-हमलेके बाद यातायातकी लाइनें ठीक की जा रही हैं।
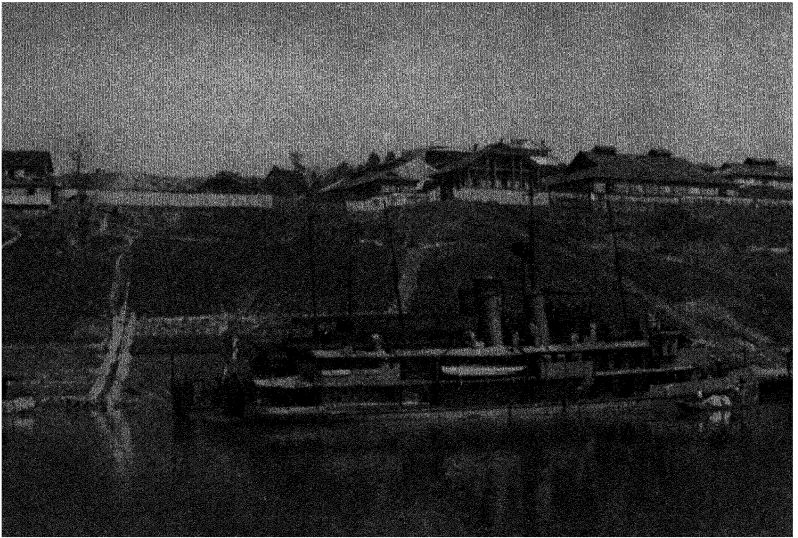
चीन-सरकारको ब्रिटेन और अमरीका द्वारा भेंट की गई 'गनबोट'। (पीछे चुंकिंगका नदी-तट दिखाई दे रहा

(४) चीनका अर्थनीतिक मोर्चा

युद्धके इन पाँच वर्षोंमें चीनकी अर्थनीतिक समस्या काफ़ी गम्भीर और जटिल हो चली है। जून १९४२ तक आम चीज़ोंका मूल्य ग्रामीण क्षेत्रोंमें दसगुना बढ़ गया और शहरोंमें इससे भी अधिक। इसके कई कारण हैं, जिनमें एक मुख्य कारण तो है माँग पूरी करने लायक चीज़ोंका न होना और अन्य कारण हैं अधिक नोटोंका चलन, सट्टा, चीज़ोंका गुप्त-रूपसे संग्रह किया जाना, यातायातकी कठिनाई, बाहरसे आनेवाली चीज़ोंका न आना और उन्हें चीनमें बनानेके लिए आवश्यक कल-पुर्ज़ोंकी कमी। चीज़ोंकी कीमतें और अधिक न बढ़ें, इसके लिए सरकार भावोंका नियन्त्रण तथा चीज़ोंकी माँग और बँटवारेकी उचित व्यवस्थाकर रही है। अब तक लोहे, इस्पात, सीमेंट, सूत, कपड़ा, तेल, पेट्रोल तथा कागज़ आदिकी माँग और बिक्रीपर सरकारने नियन्त्रण लगाया है और नमक, चीनी, तम्बाकू, शराब, चाय तथा माचिसकी बिक्रीका एकाधिकार देकर नियन्त्रण किया गया है। लोक-सेवकोंको दैनिक जीवनकी आवश्यक चीज़ें—चावल, कोयला, वनस्पति-तेल, नमक, कपड़ा आदि—कम मूल्यपर देनेका भी सरकारकी ओरसे प्रबन्ध किया गया है।

चीज़ोंके मूल्य स्थिर करनेके लिए सरकारने ४५०,०००,००० डालर मंजूर किए हैं। इस रक़मका कुछ भाग चीज़ोंको खरीदकर उन्हें व्यवस्थित रूपसे बेचनेमें लगाया गया है। इसके अलावा सरकार लगान तो अनाजके रूपमें वसूल करती ही है, साथ ही अतिरिक्त पैदावार भी किसानोंसे नक़द डालर देकर खरीद लेती है। लोगोंसे अतिरिक्त पूँजीको लोकोपयोगी कार्योंमें लगाने तथा अपने दैनिक जीवनमें मितव्ययितासे काम लेनेका अनुरोध किया जाता है।

वैसे तो चीज़ोंके मूल्यके नियन्त्रणकी ओर सरकारने जापानका आक्रमण होनेके बादसे ही ध्यान देना शुरूकर दिया ; पर फरवरी १९४१ से पहले तक संगठित एवं सुव्यवस्थित रूपसे इस दिशामें कुछ नहीं हो सका। इस समय व्यवस्था-विभागकी ओरसे एक अर्थनीतिक समिति बनाई गई। इसके कामको ११ विभागोंमें बाँटा गया—राजनीतिक मामले, खाद्य-सामग्री, अन्य चीज़ें, व्यापार-व्यवसाय, सहयोग-समितियाँ वेतन और मज़दूर, यातायात, आर्थिक खोज और जाँच-पड़ताल, निरीक्षण और फौजी मामले। देश भरमें चीज़ोंका मूल्य स्थिर करनेकी ओर समितिने विशेष ध्यान दिया है। यद्यपि मार्च १९४२ से समितिका कार्य राष्ट्रीय-संचालन-समितिने ले लिया है, तथापि कामकी पुरानी व्यवस्था ज्योंकी त्यों चल रही है। खाद्य-विभाग खाद्य-पदार्थोंकी दरोंका ; अर्थनीतिक विभाग खनिज और औद्योगिक पदार्थोंकी दरोंका ; सामाजिक विभाग मज़दूरोंके वेतन आदिका ; यातायात विभाग रेलों, नदियों तथा पशुओं द्वारा होनेवाले यातायातके किराएकी दरोंका और वैदेशिक विनिमय-कमीशनका तथा अर्थ-विभाग बाहरसे आनेवाली चीज़ोंकी दरोंका नियन्त्रण करता है।

समितिने दैनिक आवश्यकताकी चीज़ोंके उत्पादन, माँग और देनके सम्बन्धमें भली भाँति जाँचकी और अधिक मुनाफ़ा लेने तथा छुपाकर चीज़ें एकत्र करनेवालोंकी जाँच-पड़तालके लिए एक विशेष पुलिस रखी। जब भी किसी चीज़का मूल्य या उसके निर्माणकी लागत या उसे लाने-लेजानेका भाड़ा बढ़ा, समितिने सम्बन्धित सरकारी विभागका ध्यान उस ओर आकृष्ट किया और उनसे शीघ्र ही प्रतिरोध करनेका अनुरोध किया। चीनी कारखानोंको जहाँ चीज़ोंकी पैदावार बढ़ानेको प्रोत्साहित किया गया, बाहरसे बनी-बनाई चीज़ोंके आयातको भी बढ़ाया गया। रंगूनके पतनसे पूर्व युन्नान-बर्मा रेल्वे द्वारा कपड़ा, लोहे व इस्पातका सामान, दवाईयाँ, शिक्षा-सम्बन्धी चीज़ें, यन्त्र और औज़ार आदि काफ़ी मात्रामें चीन पहुँच रहे थे। बाहरसे आवश्यक माल भेजनेके लिए अर्थनीतिक विभागने कई जगह अपने प्रतिनिधि भेजे थे। सरकारी कर्मचारियोंको दैनिक जीवनकी चीज़ें समय पर, सुविधासे और उचित मूल्यपर दी जानेके लिए सहयोग-समितियाँ स्थापित की गईं।

मई १९४२ में अर्थनीतिक-विभाग द्वारा वस्तु-व्यवस्था-समितिकी स्थापना की गई, जिसने दैनिक जीवनके लिए आवश्यक चीज़ोंका अधिक कड़ाईसे नियन्त्रण करना शुरू किया। इसे मूल्य-स्थिरीकरण-कोषमें से ४५०,०००,००० डालरकी सहायता दी गई है। इसके दो मुख्य काम हैं—एक तो दैनिक आवश्यकताकी चीज़ें सुविधानुसार मुहय्या करना और दूसरा लोगोंको उन्हें नाजायज़ तौरपर छुपाकर इकट्ठा करने तथा मुनाफ़ा कमानेसे रोकना। यद्यपि इसका कार्य राष्ट्रव्यापी है, फिर भी अधिक ध्यान इस समय चुंकिंग और उसके आस-पासके क्षेत्रपर ही दिया जा रहा है—कारण, यह आजकल चीनका प्रमुख बाज़ार भी बन गया है। समिति चीज़ोंके उत्पादन, विभाजन और खपतका ब्यौरेवार हिसाब रखती है। यद्यपि नमक, चीनी, माचिस, ईंधन तथा लोहे और इस्पातकी चीज़ोंकी भाँति समितिने दैनिक आवश्यकताकी चीज़ोंपर एकाधिकार स्थापित नहीं किया है, फिर भी उसका उद्देश्य लगभग वही है। अर्थनीतिक विभागके अन्तर्गत होनेके कारण समिति कृषि-ऋण-विभाग, ईंधन-नियन्त्रण विभाग और मूल्य-स्थिरीकरण-विभाग आदिके सहयोग एवं सहायतासे काम करती है।

समितिने स्थान-स्थानपर कृषि और औद्योगिक पैदवारको एकत्र करनेके लिए 'भण्डार' खोले हैं, ताकि ज़रूरतके समय लोगोंको आवश्यकताकी चीज़ें मिलनेमें कठिनाई न हो और उत्पादकको तैयार चीज़का ग्राहक न खोजना पड़े। इसी प्रकार कपड़े और सूतकी दरका प्रभावपूर्ण ढंगसे नियन्त्रण करनेके लिए सरकारने हज़ारों डालरकी ये दोनों चीज़ें खरीद कर संग्रह की हैं। इसके लिए समितिको रुईकी पैदावार और देनको नियन्त्रित करना पड़ा है। १९४२ के आँकड़ोंके अनुसार चीनमें रुईकी पैदावार २,६००,००० पिकुल उत्तरी हूपेहके सियांगयांग-फेंचेंग क्षेत्रमें, ४००,००० पिकुल हूणानमें, ४००,००० पिकुल सेच्वान, युन्नान और क्वीशोमें तथा शेष ३००,००० पिकुल अन्य स्थानोंमें होती है। इनमें से कई प्रान्तोंमें उनकी आवश्यकतासे भी कम रुई पैदा होती है। अतः समितिने कृषि-ऋण-विभाग द्वारा यह व्यवस्था करवाई है कि जहाँ रुई अधिक होती हो, वहाँसे खरीद कर वह उन प्रान्तोंमें भेज दी जाय जहाँ वह आवश्यकतासे कम होती हो। इसी प्रकार चुंकिंग

और उसके आस-पासकी मिलोंमें तैयार होनेवाला सारा सूत भी समिति खरीद लेती है। मिलें सूत खानगी तौरपर किसीको बेच नहीं सकतीं। सरकारने इस प्रकार खरीदे जानेवाले सूतकी दरें निश्चित कर दी हैं—२० नम्बर सूतकी गाँठ (२०० सेर) का मूल्य ६,९०० डालर, १६ नंबर सूतकी गाँठका मूल्य ६,४०० डालर और १० नम्बर सूतकी गाँठका मूल्य ५,६०० डालर। फरवरी और मार्च १९४२ में समितिने सूतकी ८,८१४ गाँठें खरीदीं। इससे बने कपड़ेकी १४,००० गाँठें सरकारी कर्मचारियोंको सस्ते दामोंपर बेची गईं और शेष सेच्वानके नगरोंमें बाज़ार-दरसे कम मूल्यपर बेची गईं। सेच्वानकी सब मिलोंको समितिकी ओरसे निश्चित मात्रामें सूत दिया जाता है। पहले इनके लिए बाहरसे १२०,००० गाँठें सूत आता था। समुद्र-तटसे हटकर भीतरी भागोंमें आजानेके कारण अब इन्हें केवल ५०,००० गाँठें सूत ही चाहिए। इस समय यह प्रान्त प्रतिमास ६०,००० गाँठें सूत उत्पन्न करता है, जिसकी मात्रा भविष्यमें बढ़ाई भी जा सकती है। मूल्य-नियन्त्रणके लिए इनके आय-व्ययकी सरकार द्वारा जाँच की जाती है। ५०,००० डालरसे अधिक सरकारी कर्ज़ लेनेवाली मिलोंको उसका उपयोग भी सरकारको बतलाना पड़ता है। सरकारको यह विश्वास दिलाना आवश्यक है कि यह रक़म सट्टे आदिमें नहीं लगाई जा रही है।

अन्य चीज़ोंके मूल्य तथा माँग और देनके नियन्त्रणपर भी पूरा ध्यान दिया जा रहा है। ईंधन, वनस्पति-तेल, कागज़ तथा दैनिक आवश्यकताकी अन्य चीज़ोंकी उत्पत्ति, देन और खपतको सरकार नियमित करनेकी कोशिश कर रही है और उनके मूल्य भी वही निश्चित करती है। कोयलेकी कुछ क़िस्में सरकारने निश्चित कर दी हैं और उन्हींके अनुसार उनका मूल्य निश्चित होता है। कोयलेकी खानोंके मालिकोंको शोध, यान्त्रिक तथा आर्थिक सहायताके रूपमें अधिक कोयला निकालनेके लिए प्रोत्साहन दिया जाता है। सेच्वान और नानचंगके कोयलेवालोंको इस दिशामें सहायता दी गई है। अप्रैल १९४२ तक इस कार्यके लिए दिए गए कर्ज़ोंकी रक़म ९,७९८,४०२ डालर थी। कदाचित् इन्हींके परिणाम-स्वरूप इन दोनों प्रान्तोंमें कोयलेकी पैदावार २२,००० टनसे बढ़कर पहले ही वर्षमें २३,००० टन हो गई।

पहले यातायातकी दिक़्क़तोंके कारण यहाँका कोयला चुंकिंग और चेंगतू नहीं भेजा जा सकता था, जिससे उत्पादकोंको काफ़ी हानि होती थी। समितिने बाहर जानेकी प्रतीक्षामें पड़े कोयलेके बदलेमें उत्पादकोंको कर्ज़ दिए, ताकि उत्पादनमें कमी न हो। इस प्रकार अक्टूबर १९४१ से अप्रेल १९४२ तक चायेलिंग और निन नदियोंकी तराईके उत्पादकोंको क्रमशः ५,५६८,८४० और ३,०६९,९८३ डालर कर्ज़ दिया। चायेलिंगके उत्पादकोंने तो अप्रैलके अन्त तक अपने कर्ज़मेंसे २,८३५,२९५ डालर वापस भी लौटा दिए।

चीनके भीतरी भागोंमें जो कल-कारखाने दैनिक आवश्यकताकी चीज़ें तैयार करते हैं, उन्हें सरकारकी ओरसे आर्थिक सहायता दी जाती है और तैयार होनेपर सारा माल निश्चित दरपर सरकार खरीद भी लेती है। कपड़ा, मोमबत्तियाँ, कमीज़, तौलिए, साबुन आदि तैयार करनेवाली कम्पनियोंके साथ सरकारके इस आशयके इक़रारनामे भी हुए हैं। अन्य कम्पनियों द्वारा बेची जानेवाली चीज़ोंके मूल्य सरकारने निश्चित कर दिए हैं। छुपाकर चीज़ोंका क्रय-विक्रय करनेवालोंको कड़ी सज़ा दी जाती है। काग़ज़ और वनस्पति-तेल पैदा करनेवालोंको कर्ज़के अलावा उनका उत्पादन बढ़ानेके लिए शोध-सम्बन्धी तथा यान्त्रिक सहायता भी दी जाती है।

खाद्य-पदार्थोंके नियन्त्रणकी दिशामें सरकारने विशेष प्रकारके नोट जारी करके विशेष सफलता प्राप्त की है। ४ अगस्त, १९४१ के बने क़ानूनके अनुसार सरकार उत्पादकोंसे 'खाद्य-नोट' देकर उनकी सारी पैदावार खरीद सकती है। १९४१ में सेच्वानसे ६,०००,००० पिकुल चावल तो सरकारने करके रूपमें वसूल किया और इतना ही 'खाद्य-नोटों' द्वारा खरीद भी लिया। अतिरिक्त पैदावारके सरकार द्वारा खरीद लिए जानेके परिणाम-स्वरूप उसको नाजायज़ तौरपर छुपाकर रखने या उससे अधिक मुनाफ़ा लेनेकी सम्भावना नहीं रही। १९४२ में लगानके रूपमें और 'खाद्य-नोटों' द्वारा सरकारने जो चावल एकत्र किया, उसकी मात्रा १६,०००,००० पिकुल है। सरकार जो अनाज खरीदती है, उसका ३० प्रतिशत मूल्य उत्पादकको नक़द और शेष 'खाद्य-नोटों'के रूपमें दे दिया जाता है। यही अनुपात गेहूँके बारेमें भी रहता है।

बढ़ी हुई माँगके कारण चीज़ोंपर ज़रूरतसे ज़्यादा मुनाफ़ा लेने या उन्हें नाजायज़ ढंगसे छुपा रखनेकी संभावनाको दूर करनेके लिए सरकारने जो दूसरा प्रभावपूर्ण उपाय काममें लिया, वह है दैनिक आवश्यकताकी कुछ चीज़ोंके एकाधिकारका। पहले सरकारने जनवरी १९४२ में नमकपर अपना एकाधिकार स्थापित किया) जिससे उसके नमक-करकी आयमें १००,०००,००० डालरसे १,०००,०००,००० की वृद्धि होनेकी सम्भावना है) और बादमें चीनीपर। सेच्वान और सिकेंगमें गत वर्ष ६०,०००,००० किलोग्राम चीनी पैदा हुई थी, जिसकी कीमत ७ डालर प्रति किलोग्रामकी बाज़ार-दरसे ४२०,००० ०,००० डालर होती है। चीनीके एकाधिकारका श्रीगणेश इन्हीं प्रान्तोंसे हुआ। चूँकि ३० प्रतिशत चीनीसे गैसोलिन बनता है, जिसकी माँग बाहरसे आनेवाले पेट्रोल और गैसोलिनके बन्द हो जानेसे अब काफ़ी बढ़ रही है। अतः चीनीपर एकाधिकार स्थापित करनेमें सरकारका यह भी उद्देश्य है कि अगर ज़रूरत पड़े, तो वह घरोंमें इसकी खपत कम करके अधिक गैसोलिन तैयार करने लगे।

अप्रैल १९४२ से तम्बाकू और माचिसपर भी सरकारी एकाधिकार स्थापित हो गया है। चाय और शराबपर भी सरकारी एकाधिकार स्थापित होनेवाला है, यद्यपि अभी भी उनकी खपत और उत्पादनपर सरकारका पूरा-पूरा नियन्त्रण है। इन ६ चीज़ोंपर सरकारी एकाधिकार हो जानेसे उनके उत्पादन और खपतपर नियन्त्रण तो हो ही गया है, साथ ही इससे सरकारको प्रथम वर्षमें ही १,५३०,०००,००० डालरकी आय होनेको सम्भावना है—जो अगले वर्षोंमें शायद और भी अधिक हो। इस दिशामें सरकार कोई विशेष कठिनाई नहीं देखती। तम्बाकूके एकाधिकारके सम्बन्धमें बने नियम सिगार, पत्ते और गोल बत्तियोंके रूपमें बनाई गई तम्बाकू आदि उसकी सभी क़िस्मोंपर लागू होते हैं। सरकारके अलावा जो तम्बाकू उत्पन्न करते हैं, उनके लिए संघों या सहयोग-समितियोंके रूपमें संगठित होकर सरकारसे अपने-आपको रजिस्टर्ड कराना ज़रूरी है। सरकार इन्हें आर्थिक एवं यांत्रिक सहायता भी देती है। पर इनके लिए उत्पादनके निश्चित स्टैण्डर्डको क़ायम रखना ज़रूरी है, जिसमें शिथिलता आनेपर उत्पादनकी इजाज़त मंसूख की जा सकती है। इनको अपना सारा स्टाक अर्थ-विभाग द्वारा निश्चित थोक-दरपर सरकारके हाथों बेच देना पड़ता

है। स्थानीय सिगार और तम्बाकू-संघ सरकारकी आज्ञा लेकर अपनी चीज़ें खुदरा दरपर बेच सकते हैं।

माचिस बनानेका ठेका सरकारने शंघाईके एक बड़े व्यापारी ओ० एस० ल्यूको दे दिया है, जिसने चीनके भीतरी भागमें कई माचिसके कारखाने खोले हैं। १ मईको स्थापित हुई माचिस-एकाधिकार-कम्पनीने सेच्वान और सिकेंगमें अपने कारखाने खोल दिए हैं। शीघ्र ही यह क्वान्तुंग-क्वांगसी तथा फूकीन-चेकियांग क्षेत्रोंमें भी अपना कार्य आरम्भ करनेवाली है। इस कामके लिए आवश्यक कच्चा माल पहले बहुत-सा बाहरसे आता था; पर कम्पनीको आशा है कि इस मामलेमें भी वह शीघ्र ही स्ववलम्बी हो जायगी। कम्पनीने अपने मालकी क़िस्में और मात्रा भी निश्चित कर दी है और उन्हींके अनुसार उसकी चीज़ोंकी थोक और खुदरा दरें भी निर्धारित होती हैं। इस सम्बन्धमें बनाए गए नियमोंके अनुसार उत्पादकको २० प्रतिशत, थोक विक्रेताको ५ प्रतिशत और खुदरा विक्रेताको १२ प्रतिशत मुनाफ़ा लेनेका अधिकार है।

जिन चीज़ोंके उत्पादन, विभाजन एवं क्रय-विक्रयपर सरकारका एकाधिकार है, उन सबकी व्यवस्थाके लिए अर्थ-विभागके अधीन शीघ्र ही एक एकाधिकार-व्यवस्था-समिति स्थापित की जानेवाली है। इसका कार्य दैनिक आवश्यकताकी चीज़ोंके राष्ट्रीकरणके लिए बने नियम-क़ानूनों एवं नीतिको सुचारु रूपसे कार्यान्वित करना होगा।

—स्टानवे चेंग

५. शिक्षा और समाज

(१) युद्धमें अध्यापकों और छात्रोंका सहयोग

जापान-द्वारा चीनपर किए गए आक्रमणके प्रभावसे चीनी लोगोंके जीवनका कोई भी पहलू अछूता नहीं बच पाया है। उसकी शिक्षण-संस्थाओं, शिक्षकों तथा छात्र-छात्राओंपर भी इसका गहरा असर पड़ा है। जापानी बमों और गोलोंने उसके न मालूम कितने शिक्षा और संस्कृति-केन्द्रोंको धराशायी बना दिया। अध्यापकों एवं छात्र-छात्राओंको युद्धके कारण कैसी-कैसी मुसीबतोंका सामना करना पड़ा। अध्यापकों तथा छात्र-छात्राओंने इस युद्धमें जो सहयोग दिया है, उसको देखकर तो दंग रह जाना पड़ता है। १९३१ से ही उन्होंने जापान-विरोधी तैयारी शुरू कर दी थी। १९३७ में युद्ध छिड़ते ही उनकी बहुत बड़ी संख्या फौजमें भर्ती हो गई। शत्रुके बमों और गोलोंसे वे तनिक भी डरे नहीं और शिक्षण-संस्थाओंके साथ ही चीनके भीतरी भागमें हटते गए।

छात्रों, अध्यापकों और शिक्षण-संस्थाओंका पहला स्थान-परिवर्त्तन अगस्त-सितम्बर १९३७ में पीपिंग, तिएंतसीन और पाओतिंगसे हुआ। यहाँ कुल ८ विश्व-विद्यालय, ११ कालेज और तीन औद्योगिक शिक्षालय थे। लुकोशियाओ-काण्डके बाद तुरन्त ही जापानने इन शिक्षा और संस्कृति-केन्द्रोंपर बम और गोले बरसाने शुरू किए। पहला हमला पीपिंगपर हुआ, जहाँके १४ शिक्षालयोंमें से १० नष्ट-भ्रष्टकर दिए गए। १९१२ में अमेरिकन बाक्सर इन्डेमनिटी कोषसे स्थापित हुए

सिंगुआ-विश्वविद्यालयको जापान-विरोधी प्रचारका केन्द्र बतलाकर तहस-नहस कर दिया गया और उसके भवन जापानी सेनाका आवास, अस्पताल और अस्तबल बना लिए गए। १९०० में स्थापित चीनके साहित्यिक पुनर्जागरणके केन्द्र राष्ट्रीय पीकिंग-विश्वविद्यालय तथा नानकाई और तिएंतसीनके सरकारी-सहायता-प्राप्त निजी विश्यविद्यालयोंको भी आग, बम और गोलोंसे नष्ट कर दिया गया। तिएंतसीनका पीएंग इंजीनियारिंग कालेज और पाओतिंगके दो कालेज भी इसी कारण बन्द कर दिए गए। ये सब विश्वविद्यालय तथा इनके छात्र और अध्यापक ८०० मील चलकर चांगशा (होणान) आए। यहाँ आकर इन्होंने अपना कार्य आरम्भ किया ही था कि १० अप्रैल, १९३८ को यहाँ भी बम वर्षा होने लगी। इसपर इन्हें फिर ६००-७०० मील चलकर कूमिंग (युन्नान) पहुँचना पड़ा। यहाँ दक्षिण-पश्चिम राष्ट्रीय संयुक्त विश्वविद्यालयके रूपमें इनका कार्य आरम्भ हुआ। इसी प्रकार पीपिंग राष्ट्रीय विश्वविद्यालय ओर नार्मल-विश्वविद्यालय तथा पीयांग इंजीनियरिंग कालेज ५५० मील भीतर चलकर सियान (शेंसी) लाए गए। पर कुछ समय बाद इस पर भी जापानी बम बरसने लगे, अतः इन सबको शेंसीमें हान नदीकी तराईके हांचुंग और चेंगकू नगरोंमें स्थानान्तरित किया गया, जहाँ उत्तर-पश्चिमी राष्ट्रीय संयुक्त-विश्वविद्यालयके नामसे ये अब भी कार्य करते हैं। १००० मीलकी इस यात्रामें छात्रों, अध्यापकों और २०० छात्राओंको जो अकथनीय कष्ट सहने पड़े हैं, उनका ठीक-ठीक उल्लेख करना सम्भव नहीं।

दूसरा स्थान-परिवर्त्तन दिसम्बर १९३७ में शंघाई, सूचो, नानकिंग और हांगचोके पतनके बाद हुआ। १३ अगस्त, १९३७ को जब शंघाईपर हमला हुआ तो उसके १४ शिक्षण-प्रतिष्ठान भी शत्रुके बमों और गोलोंके शिकार बनाए गए। तुंगच्वो, फूतान, ताहसिया और क्वांगुआके चीनी विश्वविद्यालय मिट्टीमें मिला दिए गए। ईसाइयोंके शिक्षण-प्रतिष्ठान भी—शंघाई और सेन्ट जोन्स विश्वविद्यालय तथा सूचो और हांगचोके कालेज – खंडित कर दिए गए। नानकिंगके राष्ट्रीय केन्द्रीय विश्वविद्यालयको विशेष नुकसान हुआ। बम और मशीनगनोंसे हमले कर उसके भवन, माडल स्कूल, नौकरोंके घर, लड़कियोंका छात्रावास, कला-भवन, दन्त-

चिकित्सा विभाग, चिकित्सा-विभाग, कृषि-कालेज, पुस्तकालय आदि नष्ट-भ्रष्ट कर दिए गए। पर प्राणोंकी हानि विशेष नहीं हुई, कारण चांसलर लोशिया-ल्लुएनने आक्रमणकी सम्भावना की सूचना पहले ही दे दी थी, जिससे छात्र-छात्राएँ सुरक्षित स्थानमें आ गए। चुंकिंगके पास शेपिंगपामें केन्द्रीय राष्ट्रीय विश्वविद्यालय स्थापित किया गया और चिकित्सा तथा दन्त-चिकित्सा विभाग पश्चिमी चीनके संयुक्त विश्व-विद्यालयकी देख-रेखमें चेंगतूमें काम करने लगे। इस बार फिर छात्र-छात्राओं तथा अध्यापकोंने सैकड़ों मीलकी लम्बी यात्रा बिना भोजन और सवारीके ठीक प्रबन्धके की और अपना सामान भी खुद ही ढोया। बादमें गिनलिंगका महिला-कालेज, फूतान तथा क्वांगुआ कालेज और सिनानका चीलू विश्वविद्यालय भी चेंगतू आ गए और पश्चिमी चीनके विश्वविद्यायको संयुक्त विश्वविद्यालयका रूप दे दिया गया।

तीसरा स्थान-परिवर्त्तन अक्टूबर १९३८ में केंटन, वूचेंग और हांकोके पतनके बाद हुआ। वूचेंग-हांको क्षेत्रसे चीनियोंके पीछे हटते हो वूहानके राष्ट्रीय विश्व-विद्यालयपर जापानी बम बरसने लगे। अतः विश्वविद्यालयको सेच्वानकी ओमेई पहाड़ियोंके निकट किएतिंगमें स्थानान्तरित करनेका निश्चय हुआ। इसके ५०० छात्र और ४० अध्यापक बड़ी मुश्किलसे कई दिनोंकी भूख-प्यास, मार्गकी कठिनाइयों और शत्रुके हमलों—जिनसे बहुत-सा सामान नष्ट हो गया—का मुक़ाबला करते हुए किएतिंग पहुँचे और वहां किराएके मकानों एवं झोंपड़ोंमें अपना कार्य आरम्भ किया। हुआचुंग किशान कालेजको तो वूचेंगसे सबसे लम्बी यात्रा कर बर्मा-सीमान्तके क्वीलिन (क्वांगसी) नगरमें आना पड़ा और उसके पुस्तकालय-शिक्षालयको चुंकिंग आना पड़ा। कुछ समय बाद हुआचुंग कालेज स्थायी रूपसे युन्नानमें ताली-फूकेपास एक गाँवमें स्थायी रूपसे स्थापित हो गया।

१२ अक्टूबर, १९३८ को जब जापानी बियासकी खाड़ीके तटपर उतरे, सुनयात-सेन विश्वविद्यालयके १३०० छात्र और बहुतसे अध्यापक २००० मील चलकर पहले लाओतिंग और बादमें युन्नानके चेंकियांग स्थानमें पहुँचे। इसी प्रकार जब वेईशोका पतन हुआ, तो वहाँके चीनी विश्वविद्यालयको लाओतिंग ले जानेका निश्चय किया गया। मार्गमें जापानियोंने जानेवालोंका पीछा किया और पुस्तकोंके

कई बक्स तथा अन्य सामान बमों एवं मशीनगनोंसे नष्ट कर दिया। यह बादमें लाओतिंगसे लुंगशो और वहाँसे चैंककियांग (युन्नान) चला गया। रेल, मोटरों, नावों द्वारा और पैदल की गई यह यात्रा जितनी कष्टसाध्य थी, उतनी ही दिलचस्प भी थी। जंगलों और पहाड़ोंके बीच बसे इस सुन्दर नगरमें १९४० तक रहनेके बाद सुनयात-सेन विश्वविद्यालय शाओक्वानके पासके एक स्थानमें चला गया और इसके कुछ कालेज नान्हसियुंग भेज दिए गए। वूचैंगके चुंगवा कालेज, कला-विद्यालय, केन्द्रीय राजनीति विद्यालय और राष्ट्रीय फार्मेसी-स्कूल आदि चुंकिंग और नानचांगका चुंगचेंग मैडिकल स्कूल तथा पीपिंगके कला-विद्यालय कूमिंगके पास चले आए। शंघाईका तुंगशो-विश्वविद्यालय पहले ३००० मीलकी यात्राके बाद कूमिंग और फिर पश्चिमो सेच्वानमें ले जाया गया। ताहसिया-विश्वविद्यालय (शंघाई) और सियांग्या मैडिकल कालेज (येल) क्वीयांगमें रखे गए हैं। हांगकांग और लिंगनान विश्वविद्यालय कई जगह बदल चुके हैं। पीपिंगका चाओयांग कालेज चेंगतूमें और सेच्वानका राष्ट्रीय विश्वविद्यालय चैंगतूसे लगभग १०० मील दूर आर्नेई स्थानपर आ गए हैं। हांगचोके पतनके बाद राष्ट्रीय चेकियांग-विश्वविद्यालय पहले चियेन्तेह, फिर ताईहो और बादमें यिशान लाया गया।

ओबरलिन-विद्यालयका स्थान-परिर्त्तन तो खासी दिलचस्प घटना है। अमरीकाके ओबरलिन-कालेजसे शिक्षा प्राप्त कर लौटनेके बाद चीनके अर्थ-मन्त्री डा० एच० एच० कुंगने १९०७ में इसे विदेशियोंकी आर्थिक सहायतासे स्थापित किया था। इसका शिक्षा-क्रम कुछ इस ढंगसे निश्चित किया गया था कि यह अमरीकाके ओबर-लिन कालेजके लिए छात्र तैयार करता था। जब नवम्बर १९३७ में ताईकूपर जापानियोंका अधिकार हो गया, तो इस विद्यालयको दक्षिण शांसीके युनचेंग स्थानमें ले जाया गया। जापानी बम-वर्षकोंने छात्रों और अध्यापकोंपर बम गिराए, जिनसे धन और जनकी काफ़ी क्षति हुई। युनचेंगमें अभी वह दो महीने ही रह पाया था कि उसे फिर दक्षिणकी ओर हटना पड़ा। यहाँसे पैदल यात्रा करते हुए उसके छात्र और अध्यापक सियान, मियेनसी आदिमें १॥-२ मास बिताकर चैंगतूके पास एक गाँवमें पहुँचे, जहाँ नए सिरेसे विद्यालयका काम शुरू हुआ।

पर चीनी विश्वविद्यालयों और शिक्षण-केन्द्रोंके इस स्थान-परिवर्त्तनके बावजूद लाखों छात्रों और भावी छात्रोंपर इस परिवर्त्तका भला-बुरा असर पड़ा ही है। कुछ छात्र अपने निश्चित पाठ्यक्रमको निश्चित समयमें पूरा न करनेके कारण पिछड़ गए। कुछने सेना, नौसेना और हवाई-सेनामें भर्त्ती होकर आगेकी पढ़ाईका ध्यान ही छोड़ दिया। अकेले पीपिंगमें युद्ध छिड़नेके बाद एक-तिहाई छात्र और अध्यापक इसीलिए रह गए। जो छात्र अपने विद्यालयों या विश्वविद्यालयोंके साथ स्थानान्तरित होते गए, उनमें से अनेक अपनी शारीरिक तथा आर्थिक अवस्थाके कारण बीचहीमें छूट गए। कुछ छात्रों और अध्यापकोंने अध्ययन-अध्यापन छोड़कर गुरिल्ला-युद्धके संगठन-संचालन, प्रकाशन और प्रोपेगेंडा, सैनिक-सेवा और राजनीतिक कार्योंको अपना लिया। बहुत-सी छात्राओंने पढ़ाई छोड़कर सैनिकोंके लिए कपड़े सीने, खाने-पीनेकी चीज़ें तैयार करने तथा घायलोंकी मरहम-पट्टी करनेका काम अपने ज़िम्मे लिया। मैडिकल-कालेजोंके अध्यापकों एवं छात्र-छात्राओंने घायलोंकी सेवा-श्रूषाके लिए टुकड़ियाँ बनाकर काम करना शुरू किया। कैंटनके ३२० छात्र-छात्राओं द्वारा संगठित टुकड़ीने तो चुचुंगके समीप पीछे हटनेवाली चीनी टुकड़ियोंको बड़ी-बड़ी तोपें पीछे हटानेमें सक्रिय सहायता भी दी, जिसमें जापानी बम-बर्षाके कारण बहुतोंके प्राण गए और बहुत-से घायल हुए।

१९३७ में क्वांगसीमें जो छात्र-सेना संगठित हुई, उसमें कुल ३७०० छात्र थे; जिनमें से ३०० छात्राएँ थीं। पर इनकी पोशाक और कार्यमें कोई भेद नहीं किया जाता। पिंगयांगसे जब चीनी सेनाएँ पीछे हटीं, तो छात्राओंकी टुकड़ियोंने नानिंगके आसपासके लोगोंको जाकर शान्तिपूर्वक स्थानान्तरित होनेके लिए व्यवस्थित किया। यही नहीं, शत्रुकी प्रगति रोकनेके लिए उन्होंने खुरपी और अन्य औज़ारोंसे सड़कें खोदनेका भी काम किया है। यह सब काम करते समय वे जो युद्ध और राष्ट्र-गीत गाती थीं, उनकी संगीत-लहरी न जाने कितने थके, डरे, निराश और उदास लोगोंके चेहरोंको खिला देती थी। कई बार तो लोग अपना काम छोड़-छोड़कर इस संगीतका आनन्द लेते देखे गए हैं, जिसपर उन्हें यह चेतावनी दी गई कि वे संगीत भी सुनते रहें और साथ-साथ काम भी करते रहें।

पर जो छात्र-छात्राएँ और अध्यापक अब भी अध्ययन-अध्यापनके कार्यमें लगे हैं, उनका जीवन भी विशेष सुखी नहीं है। बेंचों और मेज़-कुर्सियोंकी जगह आज उन्हें ज़मीनपर चटाई बिछाकर या पेड़ोंकी छायाके नीचे बैठकर पढ़ना-पढ़ाना होता है। भोजन, पुस्तकें, स्टेशनरी, कपड़े और आश्रय-स्थल भी उन्हें आसानीसे प्राप्त नहीं होते। छोटे-छोटे कमरोंमें जहाज़ोंकी तरह एकके ऊपर एक बाँधे गए बिस्तोंपर कई लोगोंको सोना पड़ता है। बिजलीकी सुविधा सब जगह नहीं है और राष्ट्रीय तेल-बचत-समितिके आदेशानुसार रातको ८ बजे सब दिए, कुप्पियाँ और लालटैनें भी बुझा देनी पड़ती हैं। अतः उन्हें पढ़नेके लिए सूर्य और चाँदकी रोशनीसे ही काम लेना पड़ता है। यद्यपि सरकार तथा मिश्नरियोंकी ओरसे ग़रीब और परिवारसे बिछुड़े छात्रोंकी आर्थिक सहायता करनेकी भी व्यवस्था की गई है; पर अधिकांश छात्रोंको प्रायः आधे पेट भूखा ही रहना पड़ता है। सरकारकी ओरसे अप्रैल १९४२ तक छात्रोंको मासिक कर्ज़ोंके रूपमें १२,०००,००० डालर की सहायता दी गई है। अन्तर्राष्ट्रीय छात्र-संघकी ओरसे भी इस दिशामें स्तुत्य प्रयत्न हुआ है। १ जून, १९४० तक चीनी छात्रोंको बाहरसे २७४, ५४५.९० डालरकी सहायता प्राप्त हुई।

चीनी शिक्षा-केन्द्रोंके उत्तर और पूर्वसे दक्षिण-पश्चिममें हटानेका एक उद्देश्य यह था कि वे न केवल युद्ध-क्षेत्रसे ही दूर रहें, बल्कि कालके पंजेकी तरह बराबर आगे बढ़ते जानेवाले जापानके 'हवाई-हाथ' से भी दूर रहें। पर ज्यों-ज्यों वे दक्षिण-पश्चिमकी ओर बढ़ते गए जापानी यान भी उनका पीछा करते गए और जहाँ वे गए, वहीं उनपर बम बरसाए। जून १९३९ में चेंगतू-स्थित पश्चिमी संयुक्त-विश्व-विद्यालयको और पश्चिमी सेच्वानमें आए वूहानके राष्ट्रीय विश्वविद्यालयको बमोंका शिकार होना पड़ा। शेपियांगकाकामें आए हुए राष्ट्रीय केन्द्रीय विश्वविद्यालयपर ४,२७ और २९ जुलाई १९४० को बम बरसाए गए। १४ अगस्त, १९४१ को कूमिंग-स्थित राष्ट्रीय दक्षिण-पश्चिमी संयुक्त-विश्वविद्यालयपर भी बम गिराए गए, जिसके परिणाम-स्वरूप प्रयोगशाला, पुस्तकालय और कई क्लासोंके कमरे नष्ट हो गए। इसका नार्मल-कालेज, छात्राओंका आवास, अध्यापकोंके घर और दफ़्तर आदिकी

इमारतें तो बिल्कुल ही तहस-नहस हो गईं। पर छात्र और अध्यापक दोनों ही बमोंसे इतने अभ्यस्त हो गए हैं कि अब वे इनसे डरते नहीं, बल्कि शान्तिसे चुपचाप रक्षागृहोंमें चले जाते हैं।

जहाँ यह सब नुक़सान हुआ है, वहाँ इन सबसे लाभ भी हुआ है। शिक्षा-केन्द्रोंके स्थानान्तरित होनेसे विविध प्रान्तोंके छात्र-छात्राओं और अध्यापकोंमें स्नेह-सम्पर्क बढ़ा है और प्रान्तीयता, धर्म, जाति और अमीर-ग़रीबकी संकीर्ण भावनाएँ स्वतः नष्ट हो गई हैं। प्रत्येक शिक्षा-केन्द्रमें आज सभी प्रान्तोंके, सभी जातियोंके और सभी धर्मों एवं स्थितियोंके छात्र हैं। लड़के-लड़कियोंके पारस्परिक सम्बन्ध भी पुरानी रूढ़ियों और बन्धनोंको छिन्न-भिन्न कर नए दृष्टिकोणके परिचायक हो गए हैं। इससे उनमें अन्तर्प्रान्तीय और अन्तर्जातीय विवाह भी बहुतायतसे होने लगे हैं। शिक्षाधिकारियोंने इसीलिए उनके पाठ्यक्रममें 'विवाह' विषयको भी स्थान दिया है। चेंगतूके संयुक्त-विश्वविद्यालय इस दिशामें अग्रणी हैं। क्वीयांगके मेडिकल स्कूलमें तो 'लड़के-लड़कियोंके सम्बन्ध'को इतना महत्त्व दिया गया है कि ऐसे सम्बन्धोंके इच्छुक लड़के-लड़कियोंको अपने नाम रजिस्टर करवाने पड़ते हैं। वहाँ सह-शिक्षा प्राप्त करनेवाले लड़के-लड़कियोंमें तो यह मज़ाक चल पड़ा है कि 'क्या तुमने अपना नाम रजिस्टर करवा लिया?'

अब ज़रा छात्रोंके मुँहसे सुनिये कि वे अपनी कठिनाइयोंके बारेमें क्या कहते हैं? यहाँ हम अन्तर्राष्ट्रीय छात्र-सहायक-संघकी निबन्ध-प्रतियोगितामें पुरस्कृत तीन ऐसे निबन्धोंमें से कुछ उदाहरण संक्षेपमें देते हैं :—

पश्चिमी चीनके संयुक्त-विश्वविद्यालय, चेंगतूकी छात्रा कुमारी नैन्सी एच० चांग अपने शंघाईसे चेंगतू आनेके अनुभवोंका ज़िक्र करते हुए कहती है—"शंघाईसे यहाँ आए मुझे तीन वर्ष होते हैं, जिनमें मैंने बहुत-कुछ देखा और सीखा है। चेंगतूकी रूप-रेखा धीरे-धीरे बदलती जा रही है और प्रायः सभी प्रान्तोंके नर-नारी विश्राम तथा सुरक्षाके लिए यहाँ एकत्र हो रहे हैं। हमारे विश्वविद्यालयके छात्रावासमें प्रायः प्रत्येक प्रान्तके छात्र हैं। बमोंके हमलोंसे लोगोंमें अब कोई विशेष बेचैनी नहीं है, बल्कि जापानी जितना अधिक नुकसान करते हैं, उन लोगोंका मुक़ाबला करनेकी

हमारी भावना उतनी ही अधिक सुदृढ़ होती जाती है। छुट्टियोंमें हम सब घरों, बस्तियों, गाँवों और गलियोंमें घूम-घूमकर लोगोंको देशकी स्थिति समझाते और उनका सहयोग-सहायता प्राप्त करते हैं। ऐसा करनेके बाद हम अपने आपको अपने देशवासियोंके अधिक निकट पाते हैं। इस प्रकार देशकी कुछ सेवा करके हमारा हृदय आनन्दातिरेकसे भर जाता है। दिन-पर-दिन बीतते चले जाते हैं और हम अपने कामों और समस्याओंमें ही मशगूल रहते हैं। हम लोग आर्थिक और शिक्षा-सम्बन्धी कठिनाईयोंसे लड़ रहे हैं, किसान अनाज-सम्बन्धी कठिनाईसे, ग़रीब जीविकाकी कठिनाईसे ; पर हममें से कोई भी निराश और निरुत्साह नहीं है। जिन आशाओं और विश्वासोंके साथ हमने यह युद्ध आरम्भ किया था, वे आज भी हमारे साथ हैं और उन्हींके सहारे हम अन्त तक लड़ते रहेंगे।"

दक्षिण-पश्चिमी राष्ट्रीय संयुक्त-विश्वविद्यालय, कूमिंगके छात्र मि० कुओसिन चांगने लिखा है—"कूमिंगकी ध्वंसावशेष पुरानी दीवार और कूमिंगको सुन्दर झीलको घेरे हुए पर्वतमालाके बीचमें झोंपड़ों और टिनोंसे छाए मिट्टीके चौकोर घरोंकी कतारें सैनिकोंकी बारकों-सी मालूम देती हैं। झोंपड़ोंका यह समूह ही आज स्वतन्त्र चीनका प्रधान शिक्षा-केन्द्र है—दक्षिण-पश्चिमी राष्ट्रीय संयुक्त विश्वविद्यालय। लड़कियोंके सोनेके कमरोंको छोड़कर सब कमरे घास-फूससे छाए हुए हैं, जो समुद्र-तटीय प्रदेशोंकी-सी आँधी आनेपर निःशेष हो जा सकते हैं। हम सैनिकोंकी तरह रहते हैं और हमारे बिस्तरे समुद्र-यात्रियोंकी तरह एकके ऊपर एक टँगे हुए हैं। फर्शमें पत्थर या तख्ते आदि कुछ नहीं जड़े हैं, सिर्फ़ कच्ची ज़मीन है। एक कमरेमें ४०-४० छात्र रहते हैं, मानो किसी डिब्बेमें मछलियाँ पैक की गई हों। भोजन भी हमें बहुत साधारण मिलता है। चूँकि मांस बहुत मँहगा है, अधिकांशतः हमें शाकाहार ही करना पड़ता है। किन्तु शाक बहुत कम मिलता है और उसका मूल्य भी अधिक है। इस विश्वविद्यालयके छात्र इतने ग़रीब हैं कि अधिक खर्च करना उनके लिए सम्भव नहीं। जो सम्पन्न घरानोंके हैं, उन्हें अवश्य ही इस सम्बन्धमें विशेष कठिनाई नहीं होती। पर इन सब कठिनाइयोंके बावजूद विश्वविद्यालयका काम बड़े सुचारु रूपसे चल रहा है और हमें उसके छात्र होनेका गर्व है। हमारा उद्देश्य

ज्ञानार्जन करना है, अतः ऊपरी सुख-सुविधाओंकी विशेष चिन्ता हमें नहीं है। हर स्थितिमें हमें ज्ञानार्जनकी जिज्ञासाको जीवित रखना है। भले ही जापानी बमोंसे हमारा सर्वस्व नष्ट हो जाय, पर हम अपने पथसे रत्ती-भर भी विचलित नहीं होंगे।"

चैंगतूके उत्तर-पश्चिमी राष्ट्रीय विश्वविद्यालयके छात्र मि० चोपिनसियाने लिखा है—"चैंगतू बाहरी दुनियासे एकदम बिल्कुल अलग है। यातायातकी कमीके कारण इसकी कठिनाइयाँ और भी बढ़ गई हैं। इसीलिए हमारे विश्वविद्यालयका साज-सामान बहुत नगण्य है और पुस्तकालय तो और भी गया-गुज़रा है। कालेजके विज्ञानके छात्रोंके प्रयोगात्मक कार्यके लिए कोई प्रयोगशाला नहीं है—वे सिर्फ़ अपनी पाठ्य-पुस्तकें भर पढ़ सकते हैं। अनिवार्य यन्त्रादि भी यहाँ मुश्किलसे ही मिल पाते हैं। कई आवश्यक पाठ्य-पुस्तकें भी प्राप्य नहीं हैं, उनका काम लेक्चररोंके नोटों या टाइप किए हुए पाठ्यांशोंसे ही चलाया जाता है। छात्रोंमें विदेशी पोशाक और बूट अब देखने तकको नहीं मिलते। अधिकांश छात्र पेबन्द लगे हुए लम्बे गाउन और पाँवोंमें चप्पलें पहनते हैं। मोज़े तो सर्दियोंमें भी नसीब नहीं होते। पर मातृभूमिके लिए यह सब सहनेमें किसीको कोई गिला नहीं। इन कठिनाइयोंके बावजूद कोई निराश या निरुत्साह नहीं है और प्रत्येक पूर्ण विजयकी आशा और विश्वासके साथ जो बन पड़ता है, देशकी सेवा करता है।"

चीनी छात्रों और अध्यापकोंकी कष्ट-कथाका यह अध्याय अभी पूर्ण भी नहीं हो पाया था कि आततायी जापानने प्रशान्त-महासागरके द्वीपों और देशोंपर भी धावा बोल दिया, जिसके फल-स्वरूप प्रवासी चीनी छात्र और अध्यापक भी कहीं अधिक मुसीबतें और जोखिम उठाकर स्वदेश लौट रहे हैं। पीकिंग यूनियन मेडिकल कालेज, पीपिंगका येनचिंग-विश्वविद्यालय, सूचो-विश्वविद्यालय, शंघाई विश्वविद्यालय और हांगचो क्रिश्चियन कालेज तथा हांगकांगके लिंगान तथा अन्य विश्वविद्यालयोंने जापानियोंकी प्रगतिके कारण अपना काम बन्द कर दिया है और उनके छात्र तथा अध्यापक स्वतन्त्र चीनमें अपने लिए स्थान खोजने चल पड़े हैं। निश्चय ही चीनके इतिहासका यह समय चीनके छात्रों और शिक्षण-शास्त्रियोंके लिए अग्नि-परीक्षाका समय है।

—हाथार्न चैंग
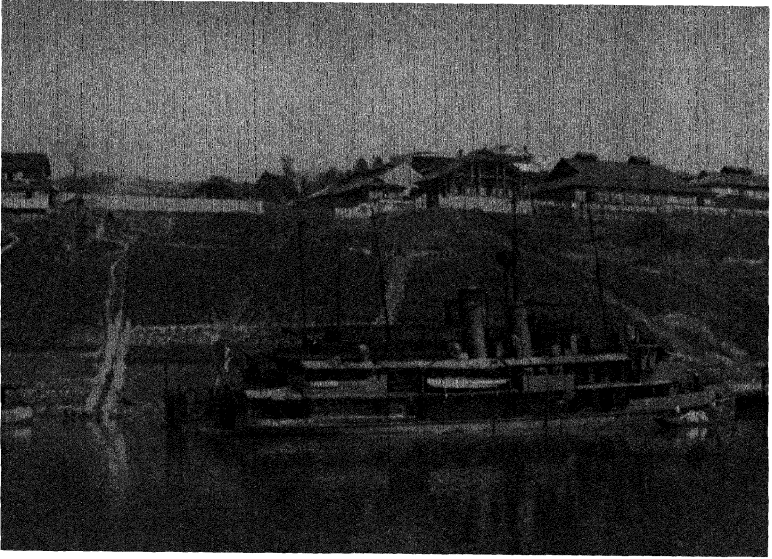
जनरल हो यिन-चिंग चीनी बालचरोंका निरीक्षण कर रहे हैं।
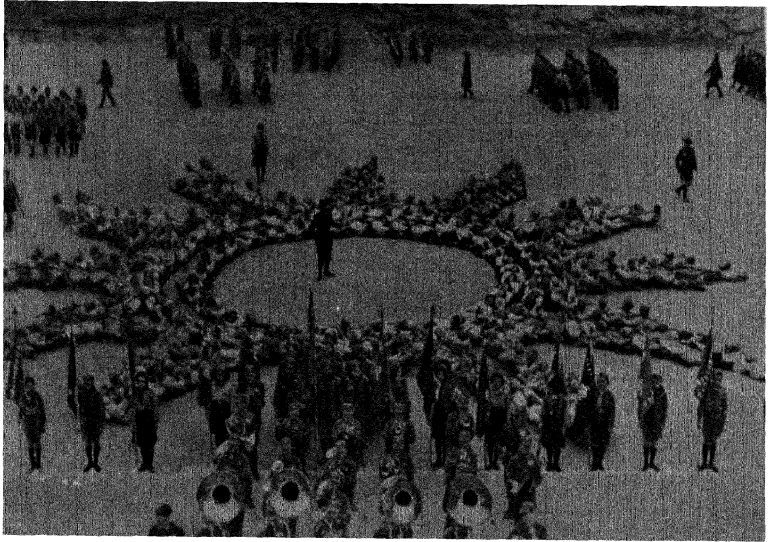
चुंकिंगमें हुई एक फ़ौजी परेडके बाद चीनी बालचर और गर्ल-गाइड्स द्वारा-निर्मित चीनी सितारा।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला-दिवसमें एकत्र हुईं चीनी महिलाएँ मादाम चांगकाई-शेकका भाषण सुन रही हैं।

चीनी गर्ल-गाइड्स अमरीकन गर्ल-गाइड्स द्वारा प्राप्त चावल बाँट रही हैं।

(२) चीनमें औद्योगिक शिक्षा

युद्धका निर्णय जितना मोर्चोंपर होता है, उतना ही कल-कारखानोंमें भी होता है। युद्ध-क्षेत्रमें जितनी आवश्यक अच्छी सेना है, उतने ही आवश्यक उसके पीछे औद्योगिक कार्यकर्त्ता भी हैं। इनकी संख्या और शिक्षाकी उन्नतिके लिए चीन सतत प्रयत्नशील है, ताकि उसके सुयोग्य एवं वीर सैनिकोंके पास बराबर हथियार और युद्ध-सामग्री पहुँचती रहे। इस सैनिक आवश्यकताके ही कारण आज वहाँ औद्योगिक शिक्षापर विशेष ज़ोर दिया जाता है।

चीनके छात्रोंने इस दिशामें विशेष उत्साह और सहयोग-भावनाका परिचय दिया है। उनका नारा है—'हर स्कूलको कारख़ाना और हर छात्रको कारीगर बनादो !' शिक्षा-विभाग द्वारा एकत्र किए हुए आँकड़ोंसे पता चलता है कि १९४१ में ११,२२६ छात्रोंने इंजीनियरीकी शिक्षा पाई, जब कि १९३७ में केवल ५,७६८ ने ही यह शिक्षा पाई थी। कृषि और जंगलातकी शिक्षा १९४१ में ३,६७५ छात्रोंने पाई, जब कि १९३७ में केवल १,८०२ ने ही पाई थी। इन दोनों शिक्षाओंकी सनद हासिल करनेवालोंकी संख्या १९४१ में क्रमशः १८०१ और ६०४ थी, जब कि १९३७ में ९६९ और २८२ ही थी। सनद हासिल करनेपर इन्हें सरकारी और ग़ैर-सरकारी स्थानोंमें काम मिल जाता है।

दस्तकारी और उद्योगके लिए चीन प्राचीनकालसे ही बहुत प्रसिद्ध रहा है। उसकी कई पुरानी दस्तकारियों एवं उद्योगोंको तो आज भी विज्ञान छू तक नहीं पाया है। मि० यूजेन ओ'नीलने अपने ग्रंथ "मार्कोज़ मिलियन्स" में चीनियों द्वारा तैयार किए गए बारूद, कागज़, छपाई और दिशा जाननेके यन्त्र आदिके आविष्कारका जो उल्लेख

किया है, उसके अलावा गृह-निर्माण और इंजीनियरोंके भी बहुतसे कमाल चीनियोंको हासिल थे। चीनकी महाप्राचीर, विशाल नहर और चेंगतूके निकट क्वान्सीनमें की गई सिंचाईकी व्यवस्थाको देखकर आज भी संसारके इंजीनियर दंग रह जाते हैं। कहते हैं कि ईसासे २,००० वर्ष पूर्व राज करनेवाला चीनी सम्राट यू जल-शक्तिका बड़ा पटु इंजीनियर था। अपनी इंजीनियरीके कौशलसे ही उसने एक भीषण बाढ़को रोककर सम्राटका सिंहासन प्राप्त किया था। तब दस्तकारी और उद्योगोंकी शिक्षा स्कूल-कालेजोंमें नहीं दी जाती थी, बल्कि शिक्षार्थी किसी कारीगरके पास या उसकी दुकानमें रहकर काम सीखते थे और 'गुरु-दक्षिणा'के रूपमें गुरुकी सेवा-सुश्रूषा करते थे। पिता अपने पुत्रोंको खेतीका, लकड़ीका तथा अन्य छोटे-मोटे काम सिखाता था और माता अपनी पुत्रियोंको सीना-पिरोना, लिपाई-पुताई आदि। चीनके असंख्य घरेलू उद्योग-धन्धे ऐसी ही शिक्षाके परिणाम हैं। चीनी मिट्टीके बर्त्तन, सूत और रेशम बुनना-कातना, बाँसका सामान, टिन और पीतलके नक्काशीके बर्त्तन, चाँदीके गहने आदिका काम चीनके औद्योगिक जीवनका एक महत्वपूर्ण अंग हैं।

मंचू सम्राट तुंगचीहके राज्य-कालमें १८६७ में फूचोमें औद्योगिक शिक्षाका पहला विद्यालय स्थापित किया गया। इसमें फूचो नौका-संघकी ओरसे नाविक शिक्षा दी जाती थी। १८७९ में तिएंतसीनमें और १८८२ में शंघाईमें तार-यातायातकी शिक्षाके विद्यालय खुले। इसी समय पीकिंगके पीयांग सैनिक-विद्यालय और शंघाईके कियांगनान सैनिक-विद्यालयने रेल्वे-इंजीनियरीके विशेष पाठ्यक्रम रखे। १८६६ में काओआन (क्यांगसी) में रेशम बनाना सिखानेका पहला विद्यालय खुला। दूसरे वर्ष ऐसा ही एक विद्यालय हांगचोमें भी खुला। १९०२ में शांसीमें कृषि और जंगलातकी शिक्षा देनेके लिए एक विद्यालय खुला। मंचू-साम्राज्यके अन्तिम कालमें जो शिक्षा-सम्बन्धी सुधार हुए, उनके अनुसार औद्योगिक शिक्षाको भी शिक्षाका एक अंग बना दिया गया और कृषि, रेशम बनाने, पशु-पालन, उद्योग, व्यापार-व्यवसाय तथा नाविक शिक्षा आदिके लिए पृथक विद्यालय स्थापित किए गए। १९०५ में—मंचू सम्राट क्वांग-सूके राज्य-कालमें—१३७ औद्योगिक विद्यालय थे, जिनमें १,९१० छात्र शिक्षा पाते थे। दूसरे वर्ष यह संख्या क्रमशः १८९ और २,९०५ हो गई।

१९०८ में—सम्राट सुआंग तुंगके समयमें—इन विद्यालयोंकी संख्या ५८,८९६ और इनमें शिक्षा पानेवाले छात्रोंकी संख्या १,६२६,७२० हो गई।

१९१२ में जब चीनी प्रजातन्त्रकी स्थापना हुई, तो इस कार्यको और भी आगे बढ़ाया गया। किसानों, मज़दूरों और व्यापारियोंके लिए पहले ही वर्ष ४२५ नए विद्यालय खोले गए, जिनमें शिक्षा पानेवालोंकी संख्या ३१,७२६ थी। १९१६ में विद्यालयोंकी संख्या ५२५ और छात्रोंकी २०,०९९ हो गई। १९२२ में ऐसे विद्यालयोंकी संख्या ८४२ हो गई। इनमें से ८८ प्रतिशत पुरुषों तथा १२ प्रतिशत लड़कियोंके लिए थे। इन्हें प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च तीन श्रेणियोंमें बाँटा गया था और प्रत्येकका पाठ्यक्रम ६-६ वर्षका होता था। इनके अलावा ४,००० विद्यालय किसानों, १९३ मज़दूरों और १५१ व्यापारियोंके लिए थे, जहाँ थोड़े समयमें साधारण शिक्षा दी जाती थी। महिलाओंके लिए २९९ विद्यालय अलग थे। ७१८ विद्यालय ऐसे भी थे, जो फुटकल औद्योगिक शिक्षाकी व्यवस्था करते थे। चीन-जापान-युद्ध छिड़नेसे पूर्व औद्योगिक विद्यालयोंकी संख्या ४९४ थी और उनमें ५६,८२२ छात्र शिक्षा पाते थे। इनका विभाजन इस प्रकार था—क्यांगसू में २०, अन्हवेईमें २८, क्यांगसीमें १८, हूपेहमें २४, हूणानमें ४२, सेच्वानमें ४०, होपेईमें १७, शान्तुङ्गमें ९, शांसीमें ११, होणानमें २८, शेंसीमें ८, कान्सूमें ४, चिंगाईमें २, फूकीनमें २५, क्वांगतुङ्गमे ३२, क्वांगसीमें ५, युन्नानमें १२, क्वीशोमें ६, चाहारमें २, सुइयुवानमें ४, निंगसियामें २, नानकिंगमें ५, शंघाईमें २१, पीपिंगमें १३, तिएंतसीनमें ६, सिंगताओमें १ और वेहेवीमें १। इनके अलावा मुकेडन पर हुए आक्रमणसे पूर्व (१८ सितम्बर, १९३१) ल्याओनिंगमें ३५, किरीनमें ३, ही-लुङ्गक्यांगमें २, जेहोलमें १ तथा क्वांतुंगकी मौरूसी भूमिमें १ विद्यालय था।

१९३७ में हुए जापानके आक्रमणका असर औद्योगिक शिक्षालयोंपर भी काफ़ी पड़ा है। उनमें से बहुत-से बमों एवं गोलोंसे नष्ट हो गए और बहुत-से भीतरी भागोंमें स्थानान्तरित हुए। १९१६ में शंघाईमें मि० हुआंग येन-पेई द्वारा स्थापित उद्योग-विद्यालयकी जब १९४२ में २५वीं वर्षगाँठ मनाई गई, तो पता चला कि इसके कुल २३,००० सदस्य हैं, जिनमें से ४,००० ने कालेजोंसे तथा १०,००० ने

स्कूलोंसे सनदें प्राप्त की हैं। अब यह चुंकिंगके निकट पाइसा नामके एक गांवमें स्थित है और इसकी ७ शाखाएँ सेच्वान प्रान्तमें जहाँ-तहाँ बिखरी हुई हैं। नष्ट हुए विद्यालयोंकी क्षतिपूर्त्ति करनेकी ओर सरकारने विशेष रूपसे ध्यान दिया है। १९४०-४१ तक २८७ नए विद्यालय बने हैं, जिनमें ३८,९७७ छात्र शिक्षा पा रहे हैं। इनमें से ८ केन्द्रीय और २७९ प्रान्तीय हैं। इनका विभाजन इस प्रकार है—हूणानमें ४४, सेच्वानमें ३८, होणानमें २८, क्यांगसीमें १७, युन्नान, फूकीन और क्वांगतुंगमें से प्रत्येकमें १५, चेक्यांगमें १३, शेंसीमें १२ और चुंकिंगमें ६। औद्योगिक शिक्षाके हिसाबसे चीनको तीन भागोंमें विभाजित किया गया है—सेच्वान-सिकँग, उत्तर-पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम। इनमें से प्रत्येकके काम सिखानेके कारखाने, खेत, व्यापारिक तथा बैंकिंगके प्रतिष्ठान और शिक्षालय पृथक हैं।

आजकल प्राथमिक औद्योगिक शिक्षापर विशेष ज़ोर दिया जा रहा है। क्वीशो, क्वांगसी, कान्सू, चिंगाई और निंगसियाने इसीके लिए कई विद्यालय खोले हैं, जो बादमें शिक्षा-विभागके सुपुर्द कर दिए गए। इनके छात्रोंको सरकारकी ओरसे छात्रवृत्ति दी जाती है। अभी तक इसके मुख्य अंग हैं—मिट्टीके बर्त्तन बनाना, शराब खींचना, चमड़ेकी धुलाई-रँगाई, रेशम, चीनी, चाय, कागज़ आदि बनाना, कातना-बुनना और साधारण खेती-बारी। आवश्यकताके लिए कुछ उद्योगोंकी थोड़े समयकी शिक्षाका भी प्रबन्ध किया गया है। ऐसी शिक्षा पाए हुए १५० तार-टेलीफ़ोन और मोटरके मिस्त्रियों और १३०० सर्वे, इंजीनियरी, रँगाई, बुनाई, चमड़ेकी धुलाई-रंगाई, छपाई और कृषिकी शिक्षा पाए हुओंको सरकारने फौरन काम दे दिया। १९४०-४१ में ८०० छात्रोंको मिट्टीके बर्त्तन बनाने तथा औद्योगिक और व्यापारिक शिक्षा दी गई है। कारखानों और खानोंमें काम करनेवालोंकी शिक्षाका भी विशेष प्रबन्ध है।

ऊपर जिन विद्यालयोंका ज़िक्र किया गया है, वे केवल प्राथमिक या माध्यमिक औद्योगिक शिक्षा ही देते हैं, उच्च औद्योगिक और यान्त्रिक शिक्षाके लिए कालेज और विश्वविद्यालय हैं। इन्हींमें चीनके प्रथम श्रेणीके इंजीनियर, गृह-निर्माता और अन्य यन्त्र-विशेषज्ञ तैयार होते हैं। नानकिंगमें राष्ट्रीय-सरकारकी स्थापना (१९२८)

होते ही पीपिंग, नाककिंग, सूचो, हांगचो, चांगशा और चेंगतूमें इंजीनियरीके कालेज खोले गए। नानकिंग और सूचोके यान्त्रिक शिक्षाके कालेज नदी और बन्दरगाह इंजीनियरी-संघमें मिला दिए गए। शेपिंगपामें राष्ट्रीय केन्द्रीय विश्वविद्यालयके अधीन एक बड़ा कालेज खोला गया। इसके ७ विभाग थे—सिविल इंजीनियरी, यान्त्रिक, बिजली-सम्बन्धी, रासायनिक, गृह-निर्माण-सम्बन्धी, पानी एकत्र और साफ़ करना तथा हवाई-यन्त्रों-सम्बन्धी शिक्षा। इस समय चीनमें २५ इंजीनियरीके कालेज हैं, जिनमें २२ गृह-निर्माणके, ११ यान्त्रिक इंजीनीयरीके, १० रासायनिक इंजीनियरीके ३ तामीरातके, इन दिनोंका पानी जमा करनेकी शिक्षाके, ३ हवाई-शिक्षाके ७ खानोंकी खुदाईके, १ सर्वेका, २ कपड़ा बुनाईके, १ यन्त्रों और बिजलीका तथा खेतीकी सिंचाईका विभाग हैं। पीपिंगके सिंगुआ-विश्वविद्यालयका इंजीनियरिंग कालेज अपनी जल-शक्ति और गरमी पैदा करनेकी प्रयोगशालाओंके कारण विशेष सम्पन्न समझा जाता है। इसमें जिन विषयोंकी शिक्षा दी जाती है, उनकी शोधका भी विशेष प्रबन्ध है।

युद्धके बाद यान्त्रिक शिक्षाके जिन कालेजोंकी स्थापना हुई है, उनमें सेच्वान और सिचेंग (सिकेंग) के कालेज तथा चुंकिंगका नाविक कालेज विशेष उल्लेखनीय हैं। सिचेंगके कालेजने चीनके सीमा-प्रदेशोंकी उन्नतिके लिए बहुत-कुछ किया है। इसमें कृषि, जंगलात, पशु-पालन, सिविल और यान्त्रिक इंजीनियरी, खान-खुदाई तथा रासायनिक इंजीनियरी आदिकी शिक्षा दी जाती है। इनके साथ ही कताई-बुनाई, चमड़ेकी धुलाई-रँगाई, कागज़ तथा मिट्टीके बर्तन बनाना और शराब खींचना भी सिखाया जाता है। यान्त्रिक और वैज्ञानिक शिक्षाके प्रबन्धके लिए सरकार शिक्षण-संस्थाओंको आर्थिक सहायता भी देती है। चेकियांगके यिंग-शीह विश्वविद्यालय तथा क्वेबिनके राष्ट्रीय क्वांगसी विश्वविद्यालयने इसी कारण केवल विज्ञान, इंजीनियरी और खेती-बारीकी शिक्षा तक ही अपना पाठ्यक्रम सीमित रखा है। इंजीनियरीकी शिक्षा पानेवाले छात्रोंको छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं। बहुतसे योग्य छात्रोंको उच्च शिक्षा दिलानेके लिए सरकारने अपने खर्चेपर विदेश भेजा है। इंजीनियरी कालेजसे सनद प्राप्त करनेके बाद ४ साल काम करके अनुभव प्राप्त करने अथवा २ वर्ष तक शोध-

कार्य कर चुकनेवालोंको इस वर्ष भी उच्च शिक्षाके लिए विदेश भेजनेकी सरकार तैयारी कर रही है। इनका चुनाव प्रतियोगिता-परीक्षा द्वारा होगा।

चीनके पुनर्निर्माण और युद्धमें उसके इंजीनियरोंने जो काम किया है, उसका महत्व कम नहीं है। आनन-फ़ाननमें नई सड़कें और इमारतें बनाना, बनी हुई इमारतों और सड़कोंको शत्रुके हाथोंमें पड़नेसे पहले ही नष्ट करना, बड़े-बड़े कार-खानोंको स्थानान्तरित करवाना, जहाज़ों एवं जहाज़रानीकी उन्नति, राष्ट्रीय सम्पत्तिके अपव्ययको रोकना तथा उसका अधिकाधिक श्रेष्ठ उपयोग करना, पेट्रोल तथा गेसोलिनसे चलनेवाली मोटरोंको कोयले तथा वनस्पति-तेलसे चलाना, नए-नए तरीक़ोंसे वनस्पति-तेल निकालना, खनिज तेल. कोयले और प्राकृत गैसका सदुपयोग करना आदि चीनी इंजीनियरोंके ही सतत परिश्रमका परिणाम है। नागरिकों एवं सैनिकोंके उपयोगके लिए उन्होंने अत्यल्प समयमें ६०० किलोमीटर रेल-पथ तथा ११,००० किलोमीटर सड़कें तैयार की हैं और कितनी ही अब भी तैयार हो रही हैं। रेल-पथ और सड़कोंकी मरम्मतमें भी उन्होंने कम दक्षता नहीं दिखलाई है। जल-शक्ति और रासायनिक ढंगसे बिजली पैदा करके उन्होंने उत्तर-पश्चिम और दक्षिण-पश्चिममें दिन-रात युद्ध-सामग्री तैयार करनेवाले कारखानोंको चालू रखा है। छोटे-मोटे कारखाने स्टीमसे भी चलते हैं। सेच्वान, कान्सू, युन्नान, क्वांगसी और क्वीशोके सूती तथा ऊनी कपड़े तैयार करनेवाले कारखानोंकी सुदक्षता उन्हींके परिश्रमका परिणाम है। सूअरके बालोंकी सफ़ाई, रेशमकी बुनाई, तुंग-तेलका उत्पादन, चाय तैयार करने, खाद्य-सामग्रीकी हिफ़ाज़त आदिमें रासायनिक इंजीनियरोंने स्पृहणीय कार्य किया है।

बहुतसे चीनी इंजीनियरोंने कई आविष्कार और सुधार भी किए हैं। १९३२ से ३७ तक सरकारने केवल १२३ आविष्कारोंके एकाधिकार दिए थे, जब कि १९३८ से ४१ तक १३५ दिए गए। इससे प्रभावित होकर सरकारने १९४१ में २००,००० डोलरकी रक़म केवल इसलिए अलग रखी कि इससे नए सुधार एवं आविष्कार करने-वालोंको पुरस्कार दिए जायँ। प्रकृत विज्ञान, व्यावहारिक विज्ञान और औद्योगिक निर्माण-सम्बन्धी आविष्कारोंके लिए १,००० से २,००० तक के पुरस्कार देनेके लिए एक जाँच-समिति नियुक्त की गई है।

इस प्रकार चीन औद्योगिक शिक्षा-द्वारा न केवल राष्ट्रीय-सम्पत्तिका उपयोग कर वर्त्तमानको ही सुगम बना रहा है, बल्कि भविष्यका निर्माण भी कर रहा है। शत्रुका मुक़ाबला करनेकी तैयारीमें वह प्राकृतिक अवरोधोंपर भी विजय प्राप्त करता जा रहा है। इस सत्प्रयासमें उसके दो सुदक्ष इंजीनियरोंका मुख्य हाथ है। एक हैं शिक्षा-मन्त्री मि० चेन लि-फू, जिन्होंने पिट्सबर्ग-विश्वविद्यालयसे इंजीनियरीका एम० ए० पास किया है, और दूसरे अर्थनीतिक-विभागके मन्त्री डा० वोंगवेन, जो लूबेन (बेल्जियम) के भूगर्भ-विद्या और खनिज-विज्ञानके विशेषज्ञ हैं। पहलेकी अध्यक्षतामें चीनके हज़ारों युवक इंजीनियरीकी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और दूसरेकी अध्यक्षतामें १०,००० चीनी इंजीनियर चीनके पुनर्निर्माण और युद्ध-कार्यमें बहुमूल्य सहायता पहुँचा रहे हैं।

—हाथार्न चेंग

(३) युवकोंकी शिक्षा और संगठन

आज चीनका प्रत्येक युवक मन और शरीरसे जो इतना सबल-सुदृढ़ है, उसका कारण जापानका आक्रमण ही है। जिस दिन जापानने चीनपर हमला किया, उसी दिनसे चीनी युवकोंने एक स्वरसे शत्रुसे मुक़ाबला करने और उसे चीनकी सीमासे बाहर निकालनेका निश्चय किया है। इन पाँच वर्षोंमें फौजी और राजनीतिक शिक्षा पाए हुए युवकोंने चीनके पुनर्निर्माण और शत्रुसे लोहा लेनेमें जिस दृढ़ता, साहस और वीरताका परिचय दिया है, उससे चीनकी शत्रुसे मुक़ाबला करनेकी शक्तिका सहज ही अनुमान किया जा सकता है।

चीनपर हमला होते ही पहला काम शिक्षा-विभागने यह किया कि अपने देशकी शिक्षा-प्रणालीका मौलिक सुधार किया और युवकोंका दृष्टिकोण बदलनेका प्रयत्न किया। उनकी शिक्षाके चार प्रधान आधार हैं—राष्ट्रके लिए क़ुरबानी करनेकी भावना; सृजनात्मक भावना; सबसे ऊपर राष्ट्र है, अतः उसके हित-साधनकी चेष्टा करना; और चीनके स्वाधीनता-संग्रामका चरम लक्ष्य है अन्तर्राष्ट्रीय समता और शान्ति। डा० सुनयात-सेनके तीन गण-सिद्धान्तोंमें विश्वास करना महान् व्यक्तियोंकी तरह काम और आचरण करना, चरित्र शुद्ध और पवित्र रखना तथा देश प्रेम, राष्ट्रके प्रति वफ़ादारी और वीरताका सबक़ प्रत्येक चीनी युवकको सिखाया जाता है। इसके साथ ही शारीरिक शिक्षा—व्यायाम, स्वास्थ्य-रक्षा और सफ़ाईके नियमोंका पालन, फौजी शिक्षा, अनुशासनपूर्वक और उद्योगी जीवन बिताने आदि—पर भी पूरा-पूरा ध्यान दिया जाता है।

प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाके विद्यालयोंमें दी जानेवाली युद्धकालीन शिक्षामें भी कई सुधार किए गए हैं। युद्धकी आवश्यकताओंपर विशेष ध्यान दिया जाता है। औद्योगिक और बिजली, रसायन, डाक्टरी, इंजीनियरी, मोटर, यन्त्र, नर्सिंग आदिकी शिक्षापर अधिक ज़ोर दिया जाता है। शत्रुके आनेसे पूर्व और आनेके बाद जनताका क्या कर्त्तव्य है, इसकी राजनीतिक शिक्षा भी उसे दी जाती है। क्यांगसू, अन्हवेई, शेंसी और शान्तुंगके राजनीतिक विद्यालयोंसे निकले स्नातक जनताको इस दृष्टिसे तैयार करते हैं। जुलाई १९३८ में संगठित कुओमिन्तांग युवक-संघने राष्ट्रीय पुनर्निर्माण, चीनी क्रान्तिको आगे बढ़ाने, शत्रुका मुक़ाबला करने तथा डा० सुनयात-सेनके तीन गण-सिद्धान्तोंको प्रभावपूर्ण बनानेमें बहुत उपयोगी कार्य किया है।

१६ से २५ सालकी उम्रका कोई भी युवक या युवती इन संघोंके सदस्य हो सकते हैं। प्रत्येक प्रार्थीको डा० सुनयात-सेनके तीनों गण-सिद्धान्तोंमें असंदिग्ध विश्वास और उनपर अमल करने, नेताकी आज्ञा तथा संघके नियम मानने, नवजीवन-आन्दोलनके अनुसार जीवन बिताने, कष्टोंसे न डरने, राष्ट्रके लिए सब-कुछ क़ुरबान करने तथा अनुशासन भंग करनेपर जो भी सज़ा दी जाय, सहर्ष स्वीकार करने की प्रतिज्ञा करनी पड़ती है। इसके नेता जनरलिसिमो च्यांगकाई शेक हैं, जो एक परामर्शदातृ-समितिकी सहायतासे इसका काम करते हैं। इसका प्रधान कार्यालय चुकिंगमें है, जिसके अधीन प्रान्तीय, ज़िला, शाखा और उपशाखा-दफ़्तर हैं। इसके अध्यक्ष संघके नेता द्वारा अधिकृत प्रदेशों और विदेशोंमें प्रवासी चीनियों द्वारा भी इसके शाखा-संघोंकी व्यवस्था की गई है। प्रत्येक स्कूल और कालेजमें इसकी शाखा है। ६०,००० केन्द्रीय कार्यकर्त्ता देशके विविध भागोंमें इसके कार्यका संचालन करते हैं। शत्रु-आगमनसे पूर्व सड़कों, कारखानों, रेल-तार-टेलीफ़ोन आदि नष्ट करनेमें संघकी टुकड़ियोंने जो सफलता प्राप्त की है, वही शत्रु-अधिकृत प्रदेशोंमें उसे तरह-तरहकी हानि पहुँचा कर तथा गुरिल्ला-युद्धका संचालन करके प्राप्तकी है। एड-मिरल चान चाकके आदेशानुसार हांगकांग और चांगशाकी लड़ाइयोंमें युवक-संघोंने आशातीत योग दिया है और चुंकिंगसे नानकिंग, शंघाई तथा पीपिंग-जैसे शत्रु-

अधिकृत नगरोंसे उन्हींके कारण सम्पर्क क़ायम है उच्च और माध्यमिक शिक्षा-लयोंके छात्रोंको विशेष राजनीतिक, यान्त्रिक, कताई-बुनाई, रसायन, खानोंकी खुदाई, पशु-पालन, इंजीनियरी, कृषि, सहयोग-समितियाँ, हिसाब-किताब, आँकड़े, घरेलू अर्थनीति और नर्सिंग-सम्बन्धी शिक्षा देनेके लिए 'ग्रीष्म-केम्पों' का भी आयोजन किया जाता है।

युवक-संघोंके बाद सामाजिक, राजनीतिक और युद्धके क्षेत्रोंमें स्काउटों और गर्ल-गाइडोंने विशेष कार्य किया है। इनकी संख्या इस समय १०,००० है, जिसमें से ५००,००० प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलके छात्र-छात्राएँ हैं। प्रत्येक स्कूलके छात्रको अनिवार्य रूपसे इसकी शिक्षा लेनी पड़ती है। इस आन्दोलनका आरम्भ १९११ में मंचू-साम्राज्यके पतनके बादसे ही हुआ। १९२६ में सरकारने कैंटनमें एक स्काउट-कमीशन स्थापित किया, जिसकी योजना एवं शिक्षा-विभागके सहयोगसे इसका देशव्यापी प्रचार एवं संगठन हुआ। इस समय २७ प्रान्तों एवं म्युनिस्पलिटियोंमें इस आन्दोलनके ५१९,२०२ सदस्य हैं। इनमें से ५१५,१२५ तो ५,०३१ स्कूलोंके छात्र हैं और ४,०७७ विशेष रूपसे संगठित ३९ संघोंके सदस्य हैं। सबसे अधिक संख्या सेच्वानकी है, जहाँ ८९,३२६ स्काउट और गर्ल-गाइड्स ५९४ संघोंमें काम करते हैं। चेक्यांगमें ६५,७५१ स्काउट ६६६ संघोंमें तथा हूणानमें ५५,७४६ स्काउट १८६ संघोंमें काम करते हैं। ५१५,१२५ स्काउटोंमें से ३९०,६३७ युवक, १०४,२६६ युवतियाँ तथा २०,२२२ बच्चे हैं। इन सबकी शिक्षा तथा कार्य-संचालनके लिए १५,००० स्काउट-मास्टर हैं।

चीनी स्काउटोंकी शिक्षाका मूल मन्त्र है—'चीह, जेन, युंग' अर्थात् बुद्धि, सद्-भावना और साहस। इनके साथ ही चीन जीवनके परम्परागत ८ सिद्धान्तों—वफ़ादारी, वात्सल्य, उदारता, प्रेम, ईमानदारी, सदिच्छा, शान्ति और सौहार्द—का चीनी युवकोंके जीवन-निर्माणमें काफ़ी हाथ रहा है। प्रत्येक स्काउटको ये बातें भली प्रकार समझाई जाती हैं तथा उसे जो शिक्षा दी जाती है उसमें शारीरिक, मानसिक और चारित्रिक विकासपर समानरूपसे ज़ोर दिया जाता है। युद्ध छिड़ते ही उन्होंने काम करनेके लिए टुकड़ियाँ संगठित कीं। शंघाईमें इन टुकड़ियोंने सेना और जनताको काफ़ी

सहायता पहुँचाई। इस समय १५,००० स्काउट और गर्ल-गाइडें १२७ ऐसी टुकड़ियोंमें काम कर रहे हैं। क्यांगसूमें २३, क्यांगसीमें १७ क्वांगतुंगमें १६, हूणानमें १५, सेच्वानमें १२ फूकीन, अन्हवेई, शेंसी और शांसीमें से प्रत्येकमें ६, चेक्यांगमें ५, कान्सूमें ४, युन्नानमें ३, होणान, क्वीशो, शंघाई, नानकिंग, कैंटन, हांको और मनिलामें एक-एक टुकड़ी काम करती है। इन टुकड़ियोंका काम यातायात करना ; डाक, तार और शरणार्थियोंकी मदद करना ; घायलोंकी प्राथमिक चिकित्सा तथा सेनाको डाक्टरी सहायता पहुँचाना एवं अन्य सुविधाएँ करना तथा आग आदि बुझाना है। बम-वर्षाके समय काम करनेवाली टुकड़ियाँ भी हैं। शंघाईमें काम करनेवाली ऐसी ही एक टुकड़ीके १३ स्काउट और गर्ल-गाइडें मारे गए तथा ३२ घायल हुए। शंघाईकी इन टुककड़ियोंके ३००० युवक-युवतियाँ सदस्य हैं, जिनमें ३,००० अभी भी सेनाओंके पीछे काम कर रही हैं। चुंकिंगपर हुई बम-वर्षाके दौरानमें पिछले ३ वर्षोंमें इन्होंने हताहतोंकी बहुत सहायता की है।

युवक-युवतियोंकी युद्ध-कालीन शिक्षामें जिस एक और संस्थाने विशेष काम किया है, वह है राष्ट्रीय ग्लाइडिंग (हवामें तैरना) संघ। इसके अध्यक्ष जनरल-लिसिमो चांगकाई-शेक और उपाध्यक्ष उपसेनापति जनरल पाई-चुंग-शी, शिक्षा-मन्त्री चेन लि-फू, राजनीतिक शिक्षा-विभागके प्रधान जनरल चांग चीह्-चुंग, कुओमिन्तांग युवक-संघके प्रधान-मन्त्री तथा राष्ट्रीय उड़ाका-समितिके अध्यक्ष जनरल चोउ चीह्-जू हैं। इस संघकी स्थापनाको अभी एक ही वर्ष हुआ है, पर इसकी सदस्य-संख्या ५०,००० हो गई है। इस संघने देश भरमें ग्लाइडिंगके केन्द्र, स्कूल और कालेज खोले हैं, जिनमें युवक और युवतियाँ उड़नेकी शिक्षा पा रहे हैं। शिक्षा पानेके बाद यही प्रान्तीय और ज़िलेके केन्द्रोंमें जाकर शिक्षकका काम करते हैं। इस वर्षके अन्तमें ग्लाइडिंगका एक केन्द्रीय विद्यालय खोला जानेवाला है। चुंकिंगमें एक ११५ फीट ऊँची मीनार है, जिसपर से युवक-युवती छतरियों (पैराशूट) द्वारा कूदनेका अभ्यास करते हैं। ऐसी अन्य कई मीनारें भी बनाई जानेवाली हैं। संघके मुख्य उद्देश्य हैं—युवक-युवतियोंमें उड़नेकी भावना पैदा करना, उड़ाकोंको प्राथमिक शिक्षा देना हवाई-जहाज़ोंके निर्माणको प्रोत्साहन देना और उड़नेके

रूपमें एक नए व्यायामके प्रति युवक-युवतियोंमें एक नए व्यायामका शौक पैदा करना।

पर चीनी युवक-युवतियों की शिक्षामें सरकारका एक ही ध्येय है और वह है वर्त्तमान युद्धमें विजय लाभ करना तथा उसके बाद तहस-नहस हुए देशका पुनर्निर्माण करना। युद्धका वातावरण युवकोंके दृष्टिकोणको बदलने और उन्हें नई परिस्थितिके अनुकूल बनाने तथा राष्ट्रके युद्ध-प्रयत्नमें अधिकाधिक संगठित रूपसे योग देनेकी स्वतः प्रेरणा देता है। युवक-युवतियोंकी नई शिक्षा और व्यवस्थाके फल-स्वरूप ही चीन आज असाधारण सामाजिक उन्नति करनेमें सफल हुआ है। चीनकी यह नई पीढ़ी आज भयंकरसे भयंकर कष्ट और असुविधा सहने तथा बड़ीसे बड़ी क़ुरबानी करनेसे भी डरती या झिझकती नहीं है। युद्धसे पूर्व उन्हें जो सुख-सुविधाएँ थीं, आज वे उन सबसे वंचित हो गए हैं। पीपिंग और शंघाईके समुद्र-तटीय नगरोंके सुविधापूर्ण आवास अब उन्हें उपलब्ध नहीं हैं। उनके भोजन और कपड़े भी अब अत्यन्त साधारण और अपर्याप्त हो गए हैं। रहनेके घर भी कच्चे और जब-तब नष्ट हो जानेवाले हैं। पर इस सबकी उन्हें कोई शिकायत नहीं है। वे भावी सुख, स्वतन्त्रता और शान्तिकी आशासे ही असाधारण कष्टों और असुविधाओंके मुक़ाबलेमें भी सतत परिश्रम कर रहे हैं।

५ वर्षोंके युद्ध-कालकी शिक्षाने शरीर, विचारों और कार्योंसे चीनी युवकोंको अधिक सबल, समर्थ और दृढ़निश्चयी बना दिया है। वे अपने-आपको आसानीसे क्षण-प्रति-क्षण बदलनेवाले वातावरणके अनुकूल बना लेते हैं। अपने विचारों और कार्योंसे वे स्पष्टतया अपने नेताके सिद्धान्तोंका व्यवहारिक बोध प्रकट करते हैं। वे सही मानीमें आज 'चीनके क्रान्तिकारी युवक' हैं, जैसा कि जनरलिसिमो च्यांगकाई-शेक उन्हें कहते हैं।

—चू फू-सुंग

(४) एक नया राष्ट्र और नया समाज

कोई भी राष्ट्र या समाज एक ही स्थानपर खड़ा नहीं रह सकता—खासकर युद्ध-कालमें। चीनमें बड़ी-बड़ी लड़ाइयों और बहुत बड़ी संख्यामें लोगोंके एक स्थानसे दूसरे स्थानपर जानेसे परिवर्त्तनकी जिन शक्तियोंका विकास हुआ वे पिछले पाँच वर्षोंसे बराबर काम कर रही हैं। इनके परिणामों और प्रतिक्रियाओंका सविस्तर वर्णन यद्यपि आज युद्धके अँधेरेमें छुपा हुआ है, पर जब-तब उसकी जो झाँकी मिल जाती है, उससे तय है कि चीनमें एक नए राष्ट्र, नए समाज, नई भावना और जीवनके एक नए दृष्टिकोणका जन्म एवं विकास हो रहा है।

युद्धका सबसे पहला सुफल यह हुआ है कि चीन आपसी झगड़ों और भेदभावोंको भुलाकर आज एक नवीन संगठित राष्ट्र बन गया है, जैसा कि वह पहले कभी नहीं था। जापानके आक्रमणसे पूर्व चीनकी सीमापर जो अर्द्ध-स्वतन्त्र राज्य थे, वे अब इतिहासकी कथा बन चुके हैं। आज समूचे चीनमें एक राष्ट्रीय केन्द्रीय सरकारकी सत्ता क़ायम है। पिछले ५ वर्षोंमें सरकारको शत्रुका मुक़ाबला करने और साथ ही साथ राष्ट्रके पुनर्निर्माणकी नींव डालनेमें असंख्य कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा है। जापानी प्रचारकोंने चीनके आन्तरिक झगड़ों एवं मतभेदोंकी झूठी अफ़वाहें फैलाकर पाश्चात्य देशोंमें उसके बारेमें बहुत भ्रम फैलाया, पर अन्तमें वे सब बेकार साबित हुई। आज समूचा चीन एक नेता जनरलिसिमो चांगकाई-शेक तथा डा० सुनयात-सेनके वैधानिक एवं क्रान्तिकारी राष्ट्र-निर्माता गण-सिद्धान्तों, जनताकी सर्वोच्च सत्ता और अर्थनीतिक स्वावलम्बी राष्ट्रमें स्वतन्त्र जीविकोपार्जनके सिद्धान्तमें विश्वास

करते हैं। यह विश्वास करना असंगत न होगा कि चीनका यह युद्ध-कालीन संगठन युद्धके बाद होनेवाले उसके राष्ट्रीय पुनर्निर्माणकी भी सुदृढ़ भीत्तिका काम देगा।

आज समूचे चीनमें एक ही क़ानून-क़ायदे चलते हैं, एक ही केन्द्रीय शासन-व्यवस्था है, एक ही मुद्रा है, एक ही पद्धतिके स्कूल-कालेज और उनके पाठ्यक्रम हैं। युद्धके बाद बनाई गई सड़कों और रेलोंने भी राष्ट्रको एक सूत्रमें पिरोनेमें बहुत योग दिया है। पहले क्वांगतुंग, सेच्वान अथवा युन्नानकी सेनाएँ—उन्ही प्रान्तोंके रँगरूटोंकी—पृथक-पृथक थीं। आज समूचे चीनमें केवल एक चीनी सेना है। युद्धके बादसे समूचे देशमें की गई अनिवार्य सैनिक-सेवामें प्रान्तीयताकी संकीर्णताको और भी खत्मकर दिया है। यद्यपि आज चीनमें कई युद्ध-क्षेत्र हैं, पर सब मोर्चोंकी युद्ध-नीतिका निर्णय चुंकिगके प्रधान केन्द्रसे ही होता है। आज जो असंख्य चीनी शत्रुका मुक़ाबला कर रहे हैं, उनमें सभी प्रान्तोंके लोग हैं और उन सबका एक ही ध्येय है—अपने राष्ट्की आज़ादीकी रक्षा करना।

प्रान्तोंका भौगोलिक पार्थक्य चीनके एक राष्ट्रके रूपमें संगठित होनेके मार्गमें बहुत बाधक हो रहा था। लोगोंको देशाटनका कोई खास शौक नहीं था। चूँकि वहाँके ८० प्रतिशत लोग कृषि-जीवी हैं, अतः उनमें एक तरहसे अपने घर और खेतसे बँधे रहनेका दक़ियानूसीपन आ गया था। यातायातके साधनोंका अभाव एवं मँहगाई भी लोगोंके सम्पर्क-संसर्गके मार्गमें एक बहुत बड़ी बाधा थी। बहुत कम चीनी ऐसे थे, जो जीवन भरमें अपनी पैतृक भूमिसे ५० किलोमीटर भी दूर गए हों। पर जापानियोंके आक्रमण, लूट, बस्तियोंमें आग लगादेने आदिके फल-स्वरूप बहुत बड़ी संख्यामें चीनी लोग उत्तर और पूर्वसे दक्षिण-पश्चिमकी ओर हटे। इस स्थान-परिवर्त्तनने भी उनके धर्म, समाज, जाति और प्रान्त-सम्बन्धी संकुचित दृष्टिकोणमें काफ़ी सुधार किया। आज चुंकिंग, चेंगतू, कूमिंग, क्वीलिन, सियान और चीनके अन्य भीतरी भागोंमें बसे नगरोंमें सभी प्रान्तोंकी बोलियाँ सुनाई पड़ती हैं। आज सभी प्रान्तोंके लोग साथ-साथ शत्रुसे लड़ते, रहते और खाते-पीते हैं। आज उनमें पारस्परिक सहिष्णुता और समझ पैदा हो गई है।

समुद्र-तटीय प्रदेशों तथा यांग्सी और पर्ल नदियोंकी तराईके जो लाखों निवासी उत्तर-पश्चिमं और दक्षिण-पश्चिममें चले आए हैं, उसका चीनके भावी सांस्कृतिक एवं सामाजिक विकासपर बहुत गहरा असर पड़ेगा। ईसाकी ग्यारहवीं शताब्दीमें चीनकी समृद्धि और संस्कृतिका मुख्य क्षेत्र उत्तर-पश्चिममें, विशेषकर पीतनदीकी तराईमें, रहा है। उसी शताब्दीमें जब यांग्सीकी तराईमें दक्षिणमें स्थित सुंग-राजवंशका खात्मा हुआ, तो यह क्षेत्र दक्षिण-पूर्वमें हो गया। केवल कुछ राजवंशोंके समय यह उत्तरमें रहा। चीनी प्रजातन्त्रकी राजधानीके नानकिंगसे चुंकिंग चले आनेके बाद यह क्षेत्र परिवर्त्तन-चक्रके अनुसार अब दक्षिण-पश्चिममें हट आया है। उत्तरमें आततायियोंका दबाव बढ़नेके कारण सिन सम्राटने ३१७ ई० में वर्त्तमान नानकिंगको अपनी राजधानी बनाया। इसके साथ ही यांग्सीकी तराईमें समृद्धि और संस्कृतिका प्रसार हुआ। ११ वीं शताब्दीमें जब सुंग राजवंशने अपनी राजधानी पीत नदीके दक्षिणी तटके समीप स्थापित की—जहाँ अब हांगचो बसा है—तो उन्होंने क्यांगसू-चेक्यांगको अपना कार्य-क्षेत्र बनाया। १३ वीं शताब्दीमें मंगोलोंके आगमनके साथ ही बहुत बड़ी संख्यामें चीनी दक्षिणकी ओर आ गए, जहाँ इस समय क्वांगतुंग और फूकीन नगर स्थित हैं। चार शताब्दियों बाद जब १६४४ में महा-प्राचीरको लाँघकर मंचू लोग आए, तो मिंग-राजवंशके खैरख्वाह चीनी बहुत बड़ी संख्यामें क्वांगसी, क्वीशो और युन्नानमें आ गए। केवल दो उदाहरण ऐसे हैं, जिनसे चीनियोंको बिना बाहरी दबावके भी स्थानान्तरित होना पड़ा है। पहला तो १३६८-१६४४ में अधिक आबादी होनेके कारण फूकीन और क्वांगतुंग ज़िलोंसे उनका दक्षिण-सागरोंके द्वीपोंमें जाना और दूसरा भयङ्कर अकालके कारण १९३१-३२ में शान्तुंग, होणान, होपेई आदिसे मंचूरिया जाना। जापानी आक्रमणोंसे पहले तक यह जाना जारी रहा। इस युद्धमें तो कोई ५०,०००,००० लोगोंको स्थानान्तरित होना पड़ा है। सम्भव है युद्धके बाद इनमें से बहुतसे अपने पैतृक स्थानों—समुद्र-तटीय प्रदेशों—में लौट जायँ; पर अधिकांश तो अपने नए बसाए हुए घरोंमें ही रह जायँगे।

लोगोंके इस स्थान-परिवर्त्तनका एक परिणाम यह हुआ है कि उसकी संस्कृतिका

क्षेत्र भी समुद्र-तटीय प्रदेशोंसे हटकर नदियोंकी तराइयोंमें आ गया है। युद्धसे पूर्व चीनके जो १०८ प्रमुख विश्वविद्यालय और कालेज पीपिंग-तिएंतसीन, शंघाई-नानकिंग हांगचो तथा कैंटन-हांको क्षेत्रोंमें ही केन्द्रित थे, वे अब दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिममें फैल गए हैं। पीपिंगको कैंटनसे मिलानेवाली रेखाके पश्चिममें पहले उच्च शिक्षाके केन्द्र नामको भी नहीं थे, किन्तु अब पश्चिममें ऐसे केन्द्रोंका जाल-सा बिछ गया है। इससे लोगोंकी सांस्कृतिक सतहके ऊपर उठनेमें बहुत सहायता मिली है। पहले चीनके समुद्र-तटीय प्रदेशों और यांग्सीकी तराईके लोग ही पाश्चात्य विज्ञान या मशीन-युगके सम्पर्कमें आए थे। किन्तु इन पाँच वर्षोंमें चीनके भीतरी भागोंमें न केवल यहाँसे स्थानान्तरित हुए कल-कारखाने ही पहुँचे हैं, बल्कि दर्जनों नए भी खुल गए हैं। आज कुशल कारीगर उत्तर-पश्चिम और दक्षिण-पश्चिमके मध्य-युगीन किसानोंको नए-नए उद्योग-धन्धोंकी शिक्षा दे रहे हैं। पहले जो लोग चीनियोंकी व्यवस्था और संगठन-शक्तिमें सन्देह करते थे, वे ही आज इन परिवर्त्तनोंको देखकर दाँतों तले अँगुली दबाते हैं। यद्यपि अभी भी चीनको अपनी युद्ध-कालीन अर्थ-नीतिको व्यवस्थित करने और चीज़ोंके बढ़ते हुए मूल्योंके नियन्त्रण आदिके बारेमें बहुत-कुछ करना है, पर सतत प्रयासके कारण इस दिशामें उसने आशातीत सफलता प्राप्त की है। आवश्यक चीज़ोंके नियन्त्रणके सम्बन्धमें भी उसने काफ़ी सफलता प्राप्त की है।

इस युद्धकी सबसे उल्लेखनीय प्रतिक्रिया है चीनियोंके वैयक्तिक और सामाजिक दृष्टिकोणमें परिवर्त्तन। पिछले ५ वर्षोंकी लड़ाईके अनुभवने उन्हें कष्टों, असुविधाओं और कमियोंको सहर्ष एवं धैर्यपूर्वक सहना तथा सारी यातनाओंको हँसकर झेलना सिखा दिया है। आज मुसीबतके समय वे अपने-आपपर या एक-दूसरेपर निर्भर करते हैं। अन्य राष्ट्रोंके साथ टूटे हुए सहयोग-सम्बन्धकी पुनःस्थापनाने उनमें एक नया उत्साह और अभिमान फूँक दिया है। अब वे भावी मुसीबतोंको बड़े साहस, धैर्य और विश्वासपूर्वक सह सकते हैं। सरकार और जनता आज एक-दूसरेके अधिक निकट हैं। पहले सरकार केवल जनतासे कर एवं लगान वसूल करने भरके लिए कुछ लोगोंकी एजेन्सी समझी जाती थी, जब कि आज जनताका न केवल सरकारमें पूर्ण
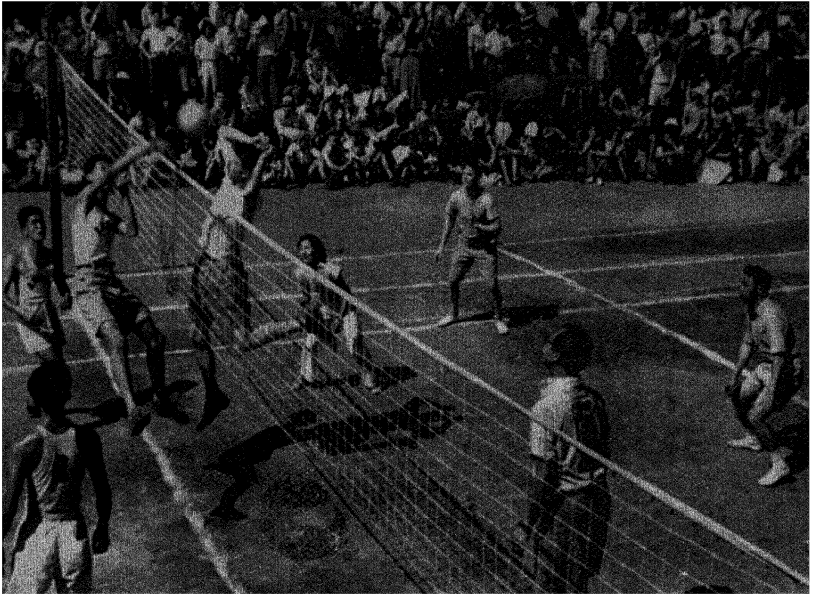
हवाई-हमले हों या न हों, चीनी और उनके विदेशी मित्र वालीबाल अवश्य खेलते हैं।
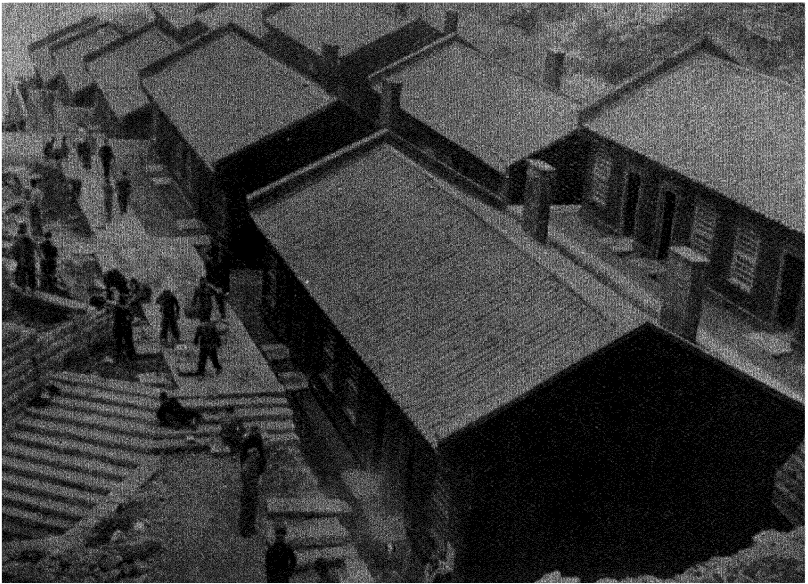
अमरीकन रेड-क्रास-सोसाइटी द्वारा प्राप्त चन्देसे युद्धके शरणार्थियोंके लिए घर बनाए जा रहे हैं।
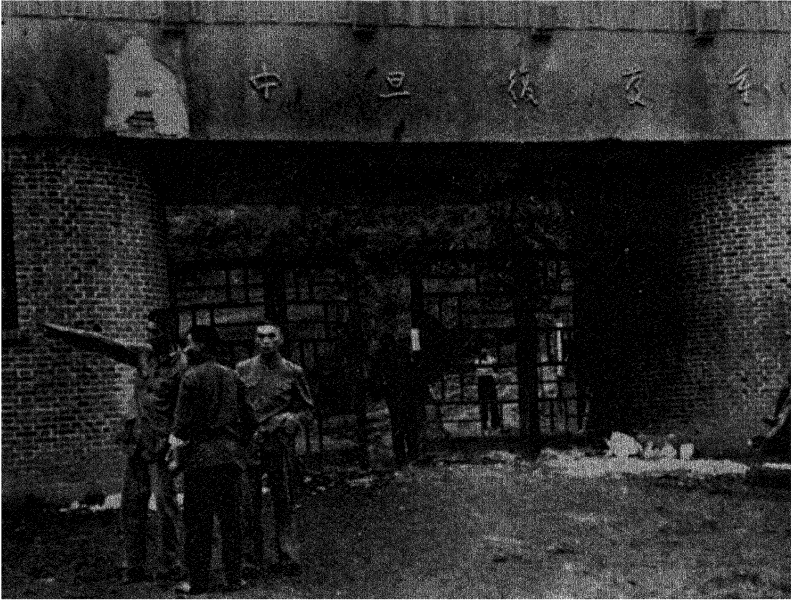
जापानी बमोंसे क्षत-विक्षत फू-तान मिडिल स्कूल ।

चीनी छात्र जापानियों द्वारा किए गए हवाई-हमलेके बाद बची हुई चीज़ें संग्रह कर रहे हैं ।

विश्वास ही है, बल्कि वह उसकी सारी आज्ञाओंको मानती और उसके लिए प्राण तक न्योछावर करनेको तैयार है। सरकारने भी जनताकी सुख-सुविधाके लिए सड़कें, नहरें, स्कूल-कालेज, अस्पताल आदि खोले हैं, शरणार्थियोंकी भलीभाँति सहायता की है, बे-घर हुओंको आश्रय तथा बेकारोंको काम दिया है। जनता आज सरकारको सिर्फ़ कर और लगान ही नहीं देती, बल्कि युद्ध-संचालनके लिए सब-कुछ सौंप दे रही है और नागरिक सैनिकोंके साथ पूरा-पूरा सहयोग और उनकी पर्याप्त सहायता कर रहे हैं।

चीनका सामाजिक जीवन भी बड़ा व्यापक और व्यावहारिक हो गया है। ऊँच-नीच, छोटे-बड़े, ग़रीब-अमीर आदिका भेदभाव अब बहुत-कुछ मिट गया है। चीज़ोंका मूल्य बढ़ जानेसे यद्यपि बुद्धि-जीवियों, सरकारी कर्मचारियों, अध्यापकों आदिको सरकार द्वारा मँहगाईका भत्ता दिए जानेके बावजूद बड़ी असुविधा हो रही है, पर देशके इस संकट-कालमें सब अपना कर्त्तव्य भलीभाँति समझते हैं। दक्षिण-पश्चिममें उद्योगीकरणका प्रसार होनेसे वहाँ मज़दूरोंकी श्रेणी विशेष महत्त्वपूर्ण एवं जनताके आदरका पात्र हो गई है। मुनाफ़ाखोर व्यापारियोंके प्रति जनतामें उपेक्षाका भाव पैदा हो गया है। लोग दुकानदार या व्यापारी होना सामाजिक और नैतिक पतनका सूचक समझते हैं। पहले सैनिक होना बहुत ही हीन कार्य समझा जाता था, पर आज सैनिकोंकी चीनमें सबसे ज़्यादा इज्ज़त है। हताहत सैनिकोंके परिवारोंकी देख-रेखकी ज़िम्मेदारी सरकारपर है।

अन्य देशोंकी भाँति युद्धका चीनकी आबादीपर कोई विशेष प्रतिकूल असर नहीं पड़ा है। चीनी समाज-शास्त्रियोंका कथन है कि युद्धसे पूर्व चीनमें प्रतिवर्ष १२,०००,००० व्यक्ति मरते थे। युद्धके कारण यह संख्या एकदम दुगुनी तो नहीं हो गई, पर शायद कुछ बढ़ी हो। अतः युद्धके बाद चीनको स्त्रियोंकी अपेक्षा पुरुषोंके कम बच रहनेकी आशंका विशेष नहीं है। इस समय प्रति १०० स्त्रियोंके अनुपातमें चीनमें ११९ पुरुष हैं। इस समय चीनकी आबादी लगभग ४५०,०००,००० कूती गई है। भारत और मिस्रको छोड़कर इसकी जन्म-संख्या संसारमें सबसे अधिक (प्रति सहस्र ३७·०७) है। इसकी मृत्यु-संख्या प्रति सहस्र

२९.७ है। अतएव यदि सरकारको आबादी बढ़ानी है, तो उसे मृत्यु-संख्या घटानेकी बजाय विज्ञान, चिकित्सा-शास्त्र एवं स्वास्थ्य-सुधार द्वारा जन्म-संख्या बढ़ानेकी ओर ध्यान देना चाहिए। हाँ, विवाहोंकी संख्या ज़रूर घटी है। चीज़ोंका मूल्य बढ़नेसे साधारण मध्यवित्तके लोग इसी कारण विवाह स्थगित कर रहे हैं और जिनके विवाह हो चुके हैं, वे अधिक सन्तति न हो, यही चेष्टा करते हैं। इससे कमसे कम बुद्धिजीवी-वर्गमें तो जन्म-संख्या अवश्य ही घटेगी। पर कम पढ़े-लिखे और निम्न श्रेणीके लोगोंमें इसका विशेष ह्रास नहीं हुआ है। कारण, जैसे चीज़ोंका मूल्य बढ़ा है, वैसे ही उद्योगीकरणके कारण उनकी मज़दूरी और खेतीकी पैदावारकी आय भी बढ़ी है। इसलिए किसानों और मजदूरोंमें अपेक्षाकृत जन्म-संख्या कुछ बढ़ी ही हो, घटी नहीं है।

कुछ लोगोंको यह भी आशंका है कि युद्धके लम्बे होनेपर चीनके पारिवारिक जीवनपर विशेष अच्छा असर नहीं पड़ेगा। चीनके समाजका मुख्य आधार परिवार ही रहा है। युद्धके कारण परिवारके सदस्योंके इधर-उधर बिखरजाने, बहुविवाह अथवा तलाक आदिका कोई विशेष प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा है। हाँ, नई परिस्थितियोंके कारण बड़े संयुक्त परिवारका स्थान अब छोटे और इकहरे परिवार ले रहे हैं, जिन्हें 'बेसिक फैमिली' कहा जाता है। इस परिवारमें पति, पत्नी और उनके बच्चे होते हैं। पर राष्ट्रीय केन्द्रीय विश्वविद्यालयके समाज-शास्त्रके एक अध्यापकका कहना है कि युद्धसे पहले भी चीनके जो परिवार एक ही घरमें रहते थे, वे अपना भोजन अलग बनाते थे और अपने आय-व्ययका हिसाब भी अलग ही रखते थे। इस प्रकार बड़े और संयुक्त कहलानेवाले परिवारोंमें भी ७८ प्रतिशत 'इकहरे परिवार' ही होते थे। उसी अध्यापकका कहना है कि प्राचीन कालमें भी बड़े और संयुक्त परिवारोंकी बजाए चीनमें छोटे परिवार ही अधिक थे। ई० पूर्व ११२२ में, जब कि चीनमें सामन्त-युग था, ज़मींदारोंमें अवश्य बड़े संयुक्त परिवार होते थे, पर सर्वसाधारणमें छोटे परिवार ही होते थे। मेन्सियसने अपने ग्रन्थोंमें कई जगह 'पाँच या आठ मुखोंके परिवारों' का ज़िक्र किया है। इसका तात्पर्य पति, पत्नी और तीन या ६ बच्चे हो सकता है। परिवारका चलन चो-राज्यकालमें (११२२ ई० पूर्व)

हुआ। चिन-राज्यकाल (२४९ से २०६ ई०पू०) में छोटे परिवारोंका ही प्राधान्य रहा। ऐसे परिवारोंको प्रोत्साहन देनेके लिए प्रधान-मन्त्री शांगयांगने यह नियम बना दिया था कि जिस परिवारमें दो या इससे अधिक लड़के हों, वे अपनी ज़मीन बाँटकर रहें, नहीं तो उनसे दुगुना लगान लिया जायगा। हण-राज्यकाल (२०६ ई०पू० से २२१ ई०) में भी छोटे परिवारोंका बहुत चलन था। तांग-सम्राटों (६१८-९०७ ई०) ने अवश्य संयुक्त परिवारोंको प्रोत्साहन देनेके लिए यह नियम बना दिया कि जो वयस्क लड़के अपने माता-पिताके साथ नहीं रहेंगे, उन्हें जुर्माना देना पड़ेगा। एक तांग-सम्राट चांगकुंग-यीके घर गए, जिसके परिवारमें ९ पीढ़ियोंके लोग एक ही घरमें और अविभाजित सम्पत्तिके साथ रहते थे। जब सम्राटने उससे पूछा कि वह ऐसा किस प्रकार कर सका, तो वृद्ध और बहरा होनेके कारण उसने लिखकर उत्तर देनेकी आज्ञा चाही। आज्ञा मिल जानेपर उसने एक कागज़पर चीनी भाषाका शब्द 'जेन' (जिसका अर्थ है सहिष्णुता) १०० बार लिखा। सुंग-राज्यकाल (९६०-११७९ ई०) में भी सन्तति-प्रेम एवं वात्सल्यके परिणाम-स्वरूप संयुक्त परिवारकी प्रणालीको विशेष प्रश्रय मिला। चीनके इतिहासमें सबसे बड़ा परिवार क्यांगसीके चेनफेंगका था, जिसमें १९ पीढ़ियोंके ७०० सदस्य विद्यमान थे। इसकी दरिद्रतासे द्रवित होकर सुंग-सम्राटने इसे २००० पिकुल चावल वार्षिक देनेकी व्यवस्था करवा दी। पर इस कालमें भी अधिकांश परिवार छोटे ही थे। १३ वीं शताब्दीमें मंगोलों और १७ वीं में मंचुओंके आगमनसे चीनकी परिवारिक प्रणालीपर कोई असर नहीं पड़ा।

अन्तमें यह कहना आवश्यक है कि युद्धके परिणाम-स्वरूप चीनी स्त्रियाँ न केवल कार्य-क्षेत्रमें ही आई हैं, बल्कि युद्धमें, समाजमें और राष्ट्रके पुनर्निर्माणमें पुरुषोंके समान ही योग दे रही हैं। सारे खतरों, कष्टों एवं असुविधाओंका धैर्य तथा साहसपूर्वक मुक़ाबला करके वे सेनामें, अस्पतालोंमें, कारखानोंमें, दफ़्तरोंमें, स्कूल-कालेजोंमें तथा अखबारके दफ़्तरोंमें पूरी ज़िम्मेदारी और दिलचस्पीके साथ अपना कर्त्तव्य पालन कर रही हैं। आज वे जीवनके प्रत्येक क्षेत्रमें पुरुषोंके साथ कन्धेसे कन्धा मिलाकर काम कर रही है। युद्धके बाद वे अधिक शिक्षा प्राप्त कर अर्थनीतिक

स्वतन्त्रता प्राप्त करेंगी, ऐसी आशा है। जन-राजनीतिक-समितिमें १५ महिला-सदस्योंने जो कार्य किया है, उसे देखते हुए उनका राजनीतिक भविष्य भी बहुत उज्ज्वल दिखाई पड़ता है। भावी चीनके निर्माणमें निश्चय ही इनकी आवाज़ सुनी जायगी।

—जेम्स शेन

U. S. S. R.
HEILUNGKIANG
Tsitsihar
Urga
MONGOLIA
U. S. R. R.
KIRIN
Kirin
Vladivostok
Tihwa
CHAHAR
JEHOL
LIAONING
Mukden
Chengteh
SUIYUAN
Wanchuan
SINKIANG
NINGSIA
Kweishui
Peiping
KOREA
KANSU
Paoting
HOPEI
Ningsia
Taiyuan
SHANSI
Tsinan
SHANTUNG
Sining
Lanchow
CHINGHAI
Kaifeng
KIANGSU
JAPAN
Sian
HONAN
SHENSI
Chengkiang
Nanking
Shanghai
TIBET
ANHWEI
HUPEH
SZECHWAN
Hankow
Anking
Hangchow
Chengtu
Wuchang
Lhasa
SIKANG
Kangting
CHEKIANG
NEPAL
Chungking
Nanchang
Changsha
HUNAN
BHUTAN
Sadiya
KIANGSI
Foochow
KWEICHOW
FUKIEN
Kweiyang
Myitkyina
Kweilin
FORMOSA
Kunming
INDIA
YUNNAN
KWANGSI
KWANGTUNG
Canton
Calcutta
Lashio
Hongkong
Mandalay
BURMA
Kwangchowwan
INDO-CHINA
HAINAN
CHINA
Rangoon
THAILAND
Philippines